वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

मई 2018



अंदर पढ़े...

- लगातर बढ़ती मजदूरों की समस्या
- स्टीफन हॉकिंग की दुनिया
- भारत रत्न सत्यजीत राय
- चिकित्सा विज्ञान को चुनौती
- एवं अन्य स्थाई सतम्भ

20/-

तुम सभी फूलों को काट सकते हो, परन्तु बहार आने से नहीं रोक सकते ...पाब्लो नेरूदा

मनुष्य के बारे में

डा रणजीत

जंगल का कानून है, लट्ठ भैंस का न्याय
अब भी कितना पाशविक, यह मानव–समुदाय।

एक तिहाई लोक को, नहीं पेट भर अन्न
व्यर्थ गर्व करता मनुज, मैं विवेक सम्पन्न।

कहने को संस्कृत हुई, मानव की सन्तान
वही दमन, शोषण मगर, कहां बनी इन्सान?

जोर जुल्म, छीना–झपट, हत्या हाहाकार
दानवीय कितना अरे, यह मानव संसार।

आधी जनसंख्या अभी, भूखी दलित, गुलाम
धिक् मानव की प्रगति है,
धिक् इसका विज्ञान।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता एस.एम.एस या WhatsApp करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802
गुरमीत अम्बाला - 94160-36203
अनुपम राजपुरा - 94683-89373
बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028
हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला
Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

संकेतिका

विशेष लेख : **पृष्ठ संख्या**

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक, दिनांक **15–07–2018**, दिन रविवार को जाट धर्मशाला, कुरुक्षेत्र में प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

बलवंत सिंह – 94163–24802
बलजीत भारती – *82950 51400*
अश्वनी धुराला – *95412 22422*

–नोट–

किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

चीत्कार

देश में बढ़ती बलात्कार की घटनाओं से हर संवेदनशील व्यक्ति का चिंतित होना स्वाभाविक है। अबोध बच्चियों के बलात्कार से जहां सामाजिक आक्रोश उत्पन्न होता है, वहीं राजनैतिक रोटियां सेंकने वाले इस प्रकार के अपराधों पर सामाजिक ताने-बाने को कलंकित करते हैं। क्या बलात्कार से पीड़ित के जाति, धर्म, क्षेत्र आदि को आधार बना कर हल्ला करना न्यायसंगत है?

देश में निर्भया कांड के बाद भी राजनीति मिश्रित सामाजिक आंदलनों की सक्रियता दिखाई दी थी। कठुआ कांड के बाद इस बात को लेकर दबाव बढ़ा कि बलात्कारियों को फांसी दी जाए। परिणामस्वरूप सरकार अध्यादेश तक ले आई परन्तु इन सभी पहलुओं पर विचार नहीं किया गया कि क्या बलात्कार केवल कानूनी समस्या है? क्या सख्त कानून बन जाने मात्र से घिनौनी हरकतें मिट जायेंगी? इस संबंध में दिल्ली हाई कोर्ट की टिप्पणी उल्लेखनीय है कि क्या पॉक्सो (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल आफेंस) में संशोधन करते हुए 12 वर्ष से कम उम्र की बालिकाओं से बलात्कार करने वालों को फांसी देने के प्रावधान से पूर्व कोई शोध या वैज्ञानिक मूल्यांकन किया गया है? कार्यवाहक मुख्य न्यायधीश गीता मित्तल व न्यायमूर्ति सी.हरिशंकर की पीठ ने कहा कि सरकार ने यह फैसला केवल इस प्रकार की घटनाओं को सामने आने के बाद जनमानस के रोष को देख कर लिया गया है। हाई कोर्ट ने प्रश्न किया कि अगर हत्या और दुष्कर्म मामले में एक ही सजा होगी तो अपराधी सबूत मिटाने के लिए पीड़ित को जिंदा ही नहीं छोड़ेगा। इस बात की तरफ भी इंगित किया गया कि मूल समस्या व लोगों को शिक्षित करने की तरफ ध्यान नही दिया जा रहा है।

निश्चय ही 'बलात्कार' एक गंभीर और दुःख पहुंचाने वाला विषय है परंतु कानूनी प्रावधान करने से पूर्व देश में व्यापक रूप से विमर्श किए जाने की आवश्यकता है। विदेशों में मुख्यतः यूरोपीय मुल्कों में किसी भी कानून को बनाने से पूर्व जन-विमर्श होता है और व्यापकता में देखते हुए जन हितैषी कानून बनाए जाते हैं। हमारे देश में इस प्रकार के विमर्श का अभाव खटकता है और 'अध्यादेश' जैसे संवैधानिक प्रावधानों व जनाक्रोश को शांत करने के लिए अगंभीर तरीके से इस्तेमाल भी होता है।

यह विचारणीय पहलू है कि मृत्यु दण्ड से दरिंदे को तो खत्म किया जा सकता है लेकिन उससे सामाजिक परिवेश को नहीं बदला जा सकता जिसमें ऐसे अपराधिक तत्वों का जन्म होता हैं। कड़े कानून वाले देशों में मुख्यतः अरब में भी ऐसी घटनाएं घटती हैं। ऐसी आशंकाएं भी निर्मूल नहीं हैं कि कड़े कानूनों का दुरुपयोग अपने राजनैतिक विरोधियों को सबक सिखाने में इस्तेमाल हो। निर्दोष लोगों को भी सजाएं भुगतने की आशंका है।

जरूरत है कि सामाजिक परिवेश में जागरुकता फैलाई जाए और उन सभी तथ्यों का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाए जिसमें बलात्कारी प्रवृत्ति पैदा होती है।

मई दिवस पर विशेष

लगातार बढ़ती मजूदरों की असुरक्षा

–आनन्द सिंह

भारत जैसे देश में जहाँ 90 प्रतिशत से ज्यादा मजदूर अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने को मजबूर हैं, मजूदरों का जीवन तमाम तरह की असुरक्षाओं से घिरा रहता है। वैकल्पिक रोजगार की अनुपलब्धता, वेतन की कमी व अनियमितता, छँटनी का खतरा, कार्यस्थल पर सुरक्षा उपकरणों की कमी, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, आवास की तंगी और सामाजिक असुरक्षा उनके जीवन के जोखिम को लगातार बढ़ाती रहती हैं। कार्यस्थल पर बदसलूकी, भेदभाव और महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटनाएँ लगातार बढ़ती रही हैं। भारत जैसे तीसरी दुनिया के देश में मजदूरों की मुश्किल जिन्दगी से वाकिफ कोई भी व्यक्ति जानता है कि मजदूरों की बहुतायत निहायत ही असुरक्षित और यन्त्रणादायी परिस्थितियों में काम करने और रहने को मजबूर है।' आये दिन मजदूरों की सुरक्षा सम्बन्धी इन्तजाम न होने की वजह से देश के विभिन्न क्षेत्रों में कारखानों में भीषण दुर्घटनाएँ घटती रहती हैं। हाल ही में दो संस्थाओं की रिपोर्टे आयी हैं जो मजदूरों की असुरक्षा और कार्यस्थल पर उनके साथ होने वाले अमानवीय बर्ताव की सच्चाई को आँकड़ों सहित पुष्ट करती हैं।

पहली रिपोर्ट अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) द्वारा निकाली गयी है। वर्ल्ड इम्पलायमेण्ट एण्ड सोशल आउटलुक' नामक इस रिपोर्ट में बताया गया है कि '2019 तक भारत में कुल कार्यबल के 77 प्रतिशत के रोजगार की स्थिति असुरक्षित रहेगी। रिपोर्ट के मुताबिक भारत के कुल 53.5 करोड़ श्रमिक कार्यबल में से 39.8 करोड़ लोगों के पास घटिया गुणवत्ता वाले काम रहेंगे। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारत में बेरोजगारी की हालत बद से बदतर होने वाली है।' खासकर 15–24 वर्ष की आयु में बेरोजगारी की दर में ज्यादा वृद्धि की सम्भावना है। समूचे एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में पैदा होने वाली नौकरियों की गुणवत्ता का जिक्र करते हुए रिपोर्ट बताती है कि "क्षेत्र में पैदा होने वाली नौकरियों का बड़ा हिस्सा खराब गुणवत्ता वाला है। एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में कुल मजदूरों के लगभग आधे असुरिक्षत रोजगार में लगे हैं, ऐसे पुरुष और स्त्री मजदूरों की कुल संख्या 90 करोड़ पार कर गयी है। 2019 तक के प्रक्षेपण इंगित करते हैं कि दक्षिण एशिया में 72 फीसदी, दक्षिण–पूर्व एशिया और प्रशान्त में 46 फीसदी, पूर्वी एशिया में 31 फीसदी लोगों के पास असुरक्षित रोजगार रहेगा।'' भारत में असुरक्षित रोजगार का स्तर पूरी दुनिया के स्तर और दक्षिण एशिया के स्तर से भी कहीं ज्यादा है। ये है उभरते हुए भारत की कड़वी सच्चाई!

आईएलओ की रिपोर्ट में भारत सहित एशिया के समूचे क्षेत्र में (पूर्वी एशिया को छोड़कर) रोजगार की बढ़ती असुरक्षा के कारणों का जिक्र करते हुए बताया गया है कि इस क्षेत्र में पूँजी और श्रमिकों का निम्न मूल्य संवर्धन वाले सेक्टरों से अधिक मूल्य संवर्धन वाले सेक्टरों की ओर गमन बहुत धीमी गति से हो रहा है। भारत की बात करें तो ये इस देश के विकृत किस्म के पूँजीवादी विकास की ही तार्किक परिणति है। इस विकास का नतीजा यह हो रहा है कि मुट्ठी भर धनपशुओं के पास अकूत सम्पत्ति का अम्बार खड़ा होता जा रहा है जबकि देश की अधिकांश आबादी नरक जैसे हालात में जीने को मजबूर है। इस गम्भीर परिस्थिति के बावजूद इस देश के हुक्मरान 'मेक इन इण्डिया', 'स्किल इण्डिया' आदि जुमले उछालते रहते हैं जिनको सुनकर अब उबकाई आने लगी है।

दूसरी रिपोर्ट 'इण्डिया रिस्पांसबल बिजनेस

इण्डेक्सि' (आईआरबीआई) की है जो यह दर्शाती है कि कर्मचारियों के कल्याण, सुरक्षा और अधिकारों को सुनिश्चित करने के तमाम दावों के बावजूद वास्तव में अधिकांश कम्पनियों द्वारा मजदूरों के साथ बर्ताव में कोई उल्लेखनीय बदलाव नहीं आया है। आईआरबीआई बीएसई में सूचीबद्ध शीर्ष 100 कम्पनियों को सबको साथ में लेकर चलने वाले सप्लाई चेन, समुदाय की साझेदारी, सामुदायिक विकास, कर्मचारियों की गरिमा और मानवाधिकार एवं कार्यस्थल पर भेदभाव न करने के आधार पर रैंकिंग देता है। रिपोर्ट के अनुसार शीर्ष की 100 में से केवल 14 कम्पनियों ने न्यूनतम मजदूरी देने की अपनी प्रतिबद्धता को पूरा किया है जबकि ठेके पर काम करने वाले मजदूरों को पीएफ और मेडिकल बीमा जैसी सुविधाएँ प्रदान करने के वायदे को सिर्फ 6 कम्पनियाँ पूरा कर रही हैं। अधिकांश कम्पनियों ने तो मजदूर अधिकारों और श्रम सम्बन्धी मामलों की स्थिति से सम्बन्धित तथ्य सार्वजनिक करने से इन्कार कर दिया। इसी तरह रिपोर्ट में यह इंगित किया गया है कि अधिकांश कम्पनियों में महिलाओं की सुरक्षा और उनके साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के पुख्ता इन्तजाम ही नहीं है। विकलांग लोगों की जिन्दगी आसान करने लिए भी अधिकांश कम्पनियों ने कोई ठोस कदम नहीं उठाये हैं। इसी तरह अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के लिए भी अधिकांश कम्पनियों ने ठोस कध्दम नहीं उठाये हैं।

जैसा कि उपरोक्त दो रिपोर्टों से स्पष्ट है, 'भारत के मजदूर वर्ग के जीवन व कार्य की परिस्थितियाँ इतनी सड़ान्ध भरी हो चुकी हैं कि उनकी बदबू को तमाम बुर्जुआ थिंकटैंक भी अपनी लेखनी के इत्र से दूर नहीं कर पा रहे हैं। ये बात दीगर है कि ये थिंकटैंक इन परिस्थितियों के लिए मुनाफे पर टिकी पूँजीवादी व्यवस्था को ज़िम्मेदार ठहराने की बजाय महज कुछ कम्पनियों को ज़िम्मेदार ठहराते हैं और व्यवस्था की आयु लम्बी करने के लिए कम्पनियों से गुहार लगाते हैं कि अपने लूटतन्त्र में थोड़ी मानवीयता दिखाओ' अन्यथा मजदूर इन अमानवीय हालात के खिलाफ बगावत का बिगुल फूँक देंगे। लेकिन भीषण संकट से गुजर रही पूँजीवादी व्यवस्था में कम्पनियाँ अपने मुनाफे की गिरती दर को रोकने के लिए मजदूरों पर होने वाले खर्च में लगातार कटौती किये जा रही हैं। मजदूरों की हालत पर घड़ियाली आँसू बहाने वाले बुर्जुआ थिंकटैंक हमें यह नहीं बताते कि इस अँधेरगर्दी भरी व्यवस्था में मुनाफे ही हवस मजदूरों का खून पीकर ही शान्त होती है। इस नंगी सच्चाई से मजदूर वर्ग जितनी जल्दी अवगत हो जाये, उसके भविष्य के लिए उतना ही अच्छा है। मजदूरों के कार्यस्थल और जीवन के हालात तो पूँजीवादी व्यवस्था को ध्वस्त करके एक समाजवादी व्यवस्था में ही मानवीय हो सकते हैं, लेकिन पूँजीवादी व्यवस्था के भीतर भी मजदूरों को अपने काम की परिस्थितियों और जीवन के हालात में सुधार से जुड़ी ठोस माँगों के लिए तत्कालिक संघर्ष भी समय की माँग है। (मजदूर बिगुल से साभार)

लघुकथा

आजादी

–खलील जिब्रान

वह मुझसे बोले–'किसी गुलाम को सोते देखो तो जगाओ मत। हो सकता कि वह आजादी का सपना देख रहा हो।'

'अगर किसी गुलाम को सोते देखो तो उसे जगाओ और आजादी के बारे में बताओ' –मैंने कहा।

कमी मजदूर को आराम तक करने नहीं देती
मेरी मेहनत ही चर्बी पेट की बढ़ने नहीं देती।
तुम्हारी ही तरह थकना मुझे भी आ गया होता।
मगर मजबूरियां घर की मुझे थकने नहीं देतीं।

——मेहरू शर्मा प्यासा

स्टीफन हाकिंग की दुनिया

-डॉ. प्रदीप

बचपन में हमने अपनी नानी और दादी से चांद तारों की, परियों की कहानियां सुनी थीं और उन कहानियों को सुनने के बाद हम ख्वाब देखते थे कि काश हम भी दूर किसी आकाश गंगा की सैर कर आयें और किन्ही परियों से हमारी मुलाकात हो जाए। परियां तो खैर किस्से कहानियों की बातें हैं लेकिन हमारी आकाश गंगा, चांद और तारे तो वास्तव में मौजूद हैं और मानव सभ्यता के इतिहास के आरंभ से ही उत्सुकतता का विषय रहे हैं। कॉपरनिक्स और न्यूटन के समय से लेकर आज तक खगोल विज्ञान ने जबर्दस्त खोजें की हैं और ब्रह्माण्ड के जन्म और विकास को लेकर अनेक रहस्यों का पर्दापफाश किया है।

स्टीफन हाकिंग वैज्ञानिकों के बीच आइंस्टीन के बाद सर्वाधिक ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हैं जिन्होंने खगोल शास्त्र के बारे में हमें नई जानकारियां उपलब्ध् ा करवाई। और पिछली सदी के इस महान वैज्ञानिक की 14 मार्च 2018 को मृत्यु ने एक ऐसा रिक्त स्थान पैदा कर दिया है जिसकी भरपाई होने में लंबा समय लगेगा।

स्टीफन हाकिंग को दुनिया पहिया कुर्सी पर बैठे गर्दन को एक ओर झुकाए, अजीब सी आवाज के साथ बोलते हुए वैज्ञानिक के रूप में जानती है। असल में उन्हें मांसपेशियों की एक खतरनाक बीमारी थी। और डाक्टरों ने उनकी उम्र 20 साल बताई थी कि इससे ज्यादा स्टीफन हाकिंग जिंदा नहीं रह पाएंगे। लेकिन उन्होंने अपनी बीमारी पर जीत हासिल करते हुए न केवल लंबी उम्र पाई बल्कि वह सब भी कर दिखाया जो दुनिया में बहुत कम लोग कर पाए हैं। उनका पूरा शरीर बेजार था। उसमें हिलने डुलने की क्षमता नहीं थी। वे अपनी गर्दन को भी सीधा नहीं रख पाते थे। उनके एक हाथ की उंगलियों में बस थोड़ी सी हरकत होती थी जिससे वे अपने कम्प्यूटर पर हाथ चला पाते थे। गले के एक आप्रेशन के बाद उनकी आवाज भी जाती रही और बोलने के लिए वे कृत्रिम मशीन का सहारा लेते थे। जिसकी वजह से उनकी आवाज रोबोटिक थी। कोई भी साधरण इंसान इन सब प्रतिकूलताओं के चलते स्वयं को पूरी तरह से असहाय महसूस करेगा और जीने की इच्छा खो देगा लेकिन स्टीफन हाकिंग ने किसी भी रूकावट को अपनी कमजोरी बनने नहीं दिया। और न केवल अपनी बीमारी पर जीत हासिल की बल्कि भौतिक विज्ञान और गणित की जटिलताओं को भी अपनी बीमारी की ही तरह विजित कर लिया।

स्टीफन हाकिंग में एक और खास बात थी। भौतिक विज्ञान और गणित की जटिलताओं को समझना एक बात होती है और इसे आम इंसान की भाषा में प्रस्तुत करना उससे भी मुश्किल काम होता है। लेकिन स्टीफन हाकिंग इस काम में माहिर थे। और यह बात उनके द्वारा लिखी अनेक पुस्तकों से प्रमाणित होती है जिसमें सबसे प्रसिद्ध पुस्तक 'समय का संक्षिप्त इतिहास' से है। इस पुस्तक को पढ़ने के दौरान ऐसा महसूस होता है मानो हम ब्रह्माण्ड में किसी एक स्थान पर कुर्सी पर बैठे हों और 10 अरब सालों का ब्रह्माण्ड का विकास ठीक हमारी आंखों के सामने हो रहा हो। एक चलचित्र जैसे हर चीज को हम अपनी आंखों के सामने घटित होते देखते हैं। मानों हम नानी और दादी की कहानियों कि तिलिस्मी ब्रह्माण्ड की सैर पर असल में निकल गए हों। इस पुस्तक की कई करोड़ प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं और दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है। इसी विषय पर उनकी अन्य पुस्तकें 'द ग्रांड डिज़ाइन और थ्यूरी ऑपफ एवरीथिंग' भी हैं। जिसमें उन्होंने अत्यन्त रोचकता के साथ आम इंसान को समझ में आने वाली भाषा में इस अति जटिल विषय को प्रस्तुत किया है।

स्टीफन हाकिंग का मुख्य काम ब्लैक होल्स

पर रहा है। और ब्लैक होल्स की कई अवधरणाओं को विकसित करने में और पुरानी अवधारणाओं को बदलने में उनकी भूमिका रही है। ब्लैक होल यानि पदार्थ की वे अवस्था जिसमें इतनी ज्यादा गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है कि वे हर चीज को अपने में समाहित करते चले जाते हैं। यहां तक की प्रकाश भी उसमें जाने के बाद लौटता नहीं है। इसकी तुलना किसी नदी में एक विशाल भंवर से कर सकते हैं जो अपने प्रभाव में आने वाले विशालकाय जहाजों को भी समेट सकती है। ब्लैक होल्स का अध्ययन करते हुए स्टीफन हाकिंग ने ब्रह्माण्ड के जन्म का रहस्योद्घाटन किया। और किसी पारलौकिक शक्ति के अस्तित्व को नकार दिया। जब वे 2001 में भारत आए थे तो उनसे भगवान के अस्तित्व पर एक सवाल किया गया था जिसके उत्तर में उन्होंने कहा था कि मैं भगवान को प्रकृति के नियमों का एक रूपक मानता हूं।

वर्तमान में मौजूद ब्रह्माण्ड का जन्म कैसे हुआ, कैसे यह अपने जन्म से लेकर अब तक के 10 अरब साल के दौरान लगातार फैलता रहा है और अभी भी फैल रहा है। इसका भविष्य क्या होने वाला है। क्या मौजूदा ब्रह्माण्ड से पहले भी कुछ था? ये कुछ ऐसे रोचक सवाल हैं जिनका उत्तर स्टीफन हाकिंग ने दिया है। और इसके निष्कर्ष के रूप में कहा कि क्या सचमुच ब्रह्माण्ड के निर्माण के लिए किसी भगवान की जरूरत है?

स्टीफन हाकिंग का जीवन हमें एक बात बहुत शिद्दत से समझाता है कि सीमा किसी चीज की नहीं होती न ही इंसान की इच्छा शक्ति, हौसले और जज़्बे की, न ज्ञान हासिल करने की और न ही ब्रह्माण्ड की। इंसान अपनी इच्छा शक्ति, जज़्बे और हौसले से न केवल अपनी शारीरिक अक्षमताओं पर विजय हासिल कर सकता है बल्कि ज्ञान के अथाह सागर में डुबकियां लगाते हुए अज्ञानता, अंधविश्वास, कूप मंडूकता से पार भी पा सकता है। स्वयं स्टीफन हाकिंग के शब्दों में, संभवतः न तो कोई स्वर्ग है और न ही मृत्यु के पश्चात् कोई जीवन। इस ब्रह्माण्ड के विशालकाय डिजाइन को समझने के लिए हमारे पास केवल एक जीवन है और इसके लिए मैं कृतज्ञ हूं।

लड़की प्रेम और कम्प्यूटर

–प्रदीप मिश्र

कम्प्यूटर के स्क्रीन पर उदास बैठी
उस लड़की के बदसूरत चेहरे को
माऊस और कीबोर्ड ने
सुन्दर और मासूम बना दिया
लड़की पूरे आत्मविश्वास से उठी
और
माडल की तरह कैटवाक करती हुई
वास्तविक दुनिया में चली गयी

जहाँ प्रेम की नदी उफन रही थी
उसने नहीं सीखे थे तैरने के दाँव-पेंच
नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली

नदी की सतह पर एक चिट्ठी तैर
रही थी
जिसपर लिखा था
नींद खुलते ही
सपने मर जाते हैं
सपनों में रची गयी दुनिया
सिर्फ कम्प्यूटर के स्क्रीन पर दिखाई
देती है

अनमोल वचन

'दुनिया में जब कोई भी गुलाम न रह जायेगा, कोई भी गरीब न रह जायेगा, तो इन्सान आदर्श रूप से अच्छा बन जायेगा। पर यदि हम चाहते हैं कि दुनिया में कोई भी गरीब और कोई भी गुलाम न रह तो हमें उन लोगों के खिलाफ निर्दयता से लड़ना पड़ेगा जो गुलामों के श्रम पर मौज उड़ाने के आदी हैं।'

–मेक्सिम गोर्की

साम्प्रदायिकता और संस्कृति

-प्रेमचन्द

साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है। उसे अपने असली रूप में निकलने में शायद लज्जा आती है,' इसलिए वह उस गधे की भाँति जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल में जानवरों पर रोब जमाता फिरता था, संस्कृति का खोल ओढ़कर आती है। हिन्दू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहता है, मुसलमान अपनी संस्कृति को। दोनों ही अभी तक अपनी-अपनी संस्कृति को अछूती समझ रहे हैं, यह भूल गये हैं कि अब न कहीं हिन्दू संस्कृति है, न मुस्लिम संस्कृति और न कोई अन्य संस्कृति। अब संसार में केवल एक संस्कृति है, और वह है आर्थिक संस्कृति मगर आज भी हिन्दू और मुस्लिम संस्ेकृति का रोना रोये चले जाते हैं। हालाँकि संस्कृति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं।' आर्य संस्कृति है, ईरानी संस्कृति है, अरब संस्कृति है। हिन्दू मूर्तिपूजक हैं, तो क्या मुसलमान कब्रपूजक और स्थान पूजक नहीं है। ताजिये को शर्बत और शीरीनी कौन चढ़ाता है, मस्जिद को खुदा का घर कौन समझता है। अगर मुसलमानों में एक सम्प्रदाय ऐसा है, जो बड़े से बड़े पैगम्बरों के सामने सिर झुकाना भी कुफ्र समझता है, तो हिन्दुओं में भी एक ऐसा है जो देवताओं को पत्थर के टुकड़े और नदियों को पानी की धारा और धर्मग्रन्थों को गपोड़े समझता है। यहाँ तो हमें दोनों संस्कृतियों में कोई अन्तर नहीं दिखता।' तो क्या भाषा का अन्तर है? बिल्कुल नहीं।' मुसलमान उर्दू को अपनी मिल्ली भाषा कह लें, मगर मद्रासी मुसलमान के लिए उर्दू वैसी ही अपरिचित वस्तु है जैसे मद्रासी हिन्दू के लिए संस्कृत। हिन्दू या मुसलमान जिस प्रान्त में रहते हैं सर्वसाधारण की भाषा बोलते हैं चाहे वह उर्दू हो या हिन्दी, बंग्ला हो या मराठी। बंगाली मुसलमान उसी तरह उर्दू नहीं बोल सकता और न समझ सकता है, जिस तरह बंगाली हिन्दू। दोनों एक ही भाषा बोलते हैं। सीमाप्रान्त का हिन्दू उसी तरह पश्तो बोलता है, जैसे वहाँ का मुसलमान।' फिर क्या पहनावे में अन्तर है?' सीमाप्रान्त के हिन्दू और मुसलमान स्त्रियों की तरह कुरता और ओढ़नी पहनते-ओढ़ते हैं। हिन्दू पुरुष भी मुसलमानों की तरह कुलाह और पगड़ी बाँधता है। अक्सर दोनों ही दाढ़ी भी रखते हैं। बंगाल में जाइये, वहाँ हिन्दू और मुसलमान स्त्रियाँ दोनों ही साड़ी पहनती हैं, हिन्दू और मुसलमान पुरुष दोनों कुरता और धोती पहनते है तहमद की प्रथा बहुत हाल में चली है, जब से साम्प्रदायिकता ने जोर पकड़ा है।

खान-पान को लीजिए। अगर मुसलमान मांस खाते हैं तो हिन्दू भी अस्सी फीसदी मांस खाते हैं। ऊँचे दर्जे के हिन्दू भी शराब पीते हैं, ऊँचे दर्जे के मुसलमान भी।' नीचे दर्जे के हिन्दू भी शराब पीते है नीचे दर्जे के मुसलमान भी। मध्यवर्ग के हिन्दू या तो बहुत कम शराब पीते हैं, या भंग के गोले चढ़ाते हैं जिसका नेता हमारा पण्डा-पुजारी क्लास है। मध्यवर्ग के मुसलमान भी बहुत कम शराब पीते है, हाँ कुछ लोग अफीम की पीनक अवश्य लेते हैं, मगर इस पीनकबाजी में हिन्दू भाई मुसलमानों से पीछे नहीं है। हाँ, मुसलमान गाय की कुर्बानी करते हैं**। और उनका मांस खाते हैं लेकिन हिन्दुओं में भी ऐसी जातियाँ मौजूद हैं, जो गाय का मांस खाती हैं यहाँ तक कि मृतक मांस भी नहीं छोड़तीं, हालांकि बधिक और मृतक मांस में विशेष अन्तर नहीं है। संसार में हिन्दू ही एक जाति है, जो गो-मांस को अखाद्य या अपवित्र समझती है। तो क्या इसलिए हिन्दुओं को समस्त विश्व सेधर्म-संग्राम छेड़** देना चाहिए?'

संगीत और चित्रकला भी संस्कृति का एक अंग है, लेकिन यहाँ भी हम कोई सांस्कृतिक भेद नहीं पाते।' वही राग-रागनियाँ दोनों गाते हैं और मुगलकाल की चित्रकला से भी हम परिचित हैं। नाट्य कला पहले मुसलमानों में न रही हो, लेकिन आज इस सींगे में भी हम मुसलमान को उसी तरह पाते हैं जैसे हिन्दुओं को। फिर हमारी समझ में नहीं आता

कि 'वह कौन सी संस्कृति है, जिसकी रक्षा के लिए साम्प्रदायिकता इतना जोर बाँध रही है।' वास्तव में संस्कृति की पुकार केवल ढोंग है, निरा पाखण्ड। शीतल छाया में बैठे विहार करते हैं। यह सीधे-सादे आदमियों को साम्प्रदायिकता की ओर घसीट लाने का केवल एक मन्त्र है और कुछ नहीं। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति के रक्षक वही महानुभाव और वही समुदाय हैं, जिनको अपने ऊपर, अपने देशवासियों के ऊपर और सत्य के ऊपर कोई भरोसा नहीं, इसलिए अनन्त तक एक ऐसी शक्ति की जरूरत समझते हैं जो उनके झगड़ों में सरपंच का काम करती रहे। इन संस्थाओं को जनता को सुख-दुख से कोई मतलब नहीं, उनके पास ऐसा कोई सामाजिक या राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है जिसे राष्ट्र के सामने रख सकें। उनका काम केवल एक-दूसरे का विरोध करके सरकार के सामने फरियाद करना है।' वे ओहदों और रियायतों के लिए एक-दूसरे से चढ़ा-ऊपरी करके जनता पर शासन करने में शासक के सहायक बनने के सिवा और कुछ नहीं करते। मुसलमान अगर शासकों का दामन पकड़कर कुछ रियायतें पा गया है तो हिन्दू क्यों न सरकार का दामन पकड़ें और क्यों न मुसलमानों की भाँति सुर्खरू बन जायें। यही उनकी मनोवृत्ति है। कोई ऐसा काम सोच निकालना जिससे हिन्दू और मुसलमान दोनों एक राष्ट्र का उद्धार कर सकें, उनकी विचार शक्ति से बाहर है। दोनों ही साम्प्रदायिक संस्थाएँ मध्यवर्ग के धनिकों, जमींदारों, ओहदेदारों और पदलोलुपों की हैं। उनका कार्यक्षेत्र अपने समुदाय के लिए ऐसे अवसर प्राप्त करना है, जिससे वह जनता पर शासन कर सकें, जनता पर आर्थिक और व्यावसायिक प्रभुत्व जमा सकें। साधारण जनता के सुख-दुख से उन्हें कोई प्रयोजन नहीं। अगर सरकार की किसी नीति से जनता को कुछ लाभ होने की आशा है और इन समुदायों को कुछ क्षति पहुँचने का भय है, तो वे तुरन्त उसका विरोध करने को तैयार हो जायेंगे। अगर और ज्यादा गहराई तक जायें तो हमें इन संस्थाओं में अधिकांश ऐसे सज्जन मिलेंगे जिनका कोई न कोई निजी हित लगा हुआ है। और कुछ न सही तो हुक्काम के बंगलों पर उनकी रसोई ही सरल हो जाती है। एक विचित्र बात है कि इन सज्जनों की अफसरों की निगाह में बड़ी इज्जत है, इनकी वे बड़ी खातिर करते हैं। इसका कारण इसके सिवा और क्या है कि वे समझते हैं, ऐसों पर ही उनका प्रभुत्व टिका हुआ है। आपस में खूब लड़े जाओ, खूब एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाये जाओ। उनके पास फरियाद लिये जाओ, फिर उन्हें किसका नाम है, वे अमर हैं। मजा यह है कि बाजों ने यह पाखण्ड फैलाना भी शुरू कर दिया है कि हिन्दू अपने बूते पर स्वराज प्राप्त कर सकते है। इतिहास से उसके उदाहरण भी दिये जाते हैं। इस तरह की गलतहमियाँ फैला कर इसके सिवा कि मुसलमानों में और ज्यादा बदगुमानी फैले और कोई नतीजा नहीं निकल सकता। अगर कोई जमाना था, तो कोई ऐसा काल भी था, जब हिन्दुओं के जमाने में मुसलमानों ने अपना साम्राज्य स्थापित किया था, उन जमानों को भूल जाइये। वह मुबारक दिन होगा, जब हमारे शालाओं में इतिहास उठा दिया जायेगा। यह जमाना साम्प्रदायिक अभ्युदय का नहीं है। यह आर्थिक युग है और आज वही नीति सफल होगी जिससे जनता अपनी आर्थिक समस्याओं को हल कर सके जिससे यह अन्धविश्वास, यह धर्म के नाम पर किया गया पाखण्ड, यह नीति के नाम पर गरीबों को दुहने की पा मिटाई जा सके।' जनता को आज संस्कृतियों की रक्षा करने का न अवकाश है न जरूरत। 'संस्कृति' अमीरों, पेटभरों का बेफिक्रों का व्यसन है। दरिद्रों के लिए प्राणरक्षा ही सबसे बड़ी समस्या है।'उस संस्कृति में था ही क्या, जिसकी वे रक्षा करें। जब जनता मूर्छित थी तब उस पर धर्म और संस्कृति का मोह छाया हुआ था। ज्यों-ज्यों उसकी चेतना जागृत होती जाती है वह देखने लगी है कि यह संस्कृति केवल लुटेरों की संस्कृति थी जो, राजा बनकर, विद्वान बनकर, जो जगत सेठ बनकर जनता को लूटती थी। उसे आज अपने जीवन की रक्षा की ज्यादा चिंता है, जो संस्कृति की रक्षा से कहीं आवश्यक है। उस पुरानी संस्कृति में उसके लिए मोह का कोई कारण नहीं है। और साम्प्रदायिकता उसकी आर्थिक समस्याओं की तरफ से आंखें बंद किए हुए ऐसे कार्यक्रम पर चल रही है, जिससे उसकी पराधीनता चिरस्थायी बनी रहेगी। (*15 जनवरी 1934 'विनय प्रसंग' में संकलित)* ०००

नास्तिकता धर्म का विकल्प तो बनेगी...

दुनिया नियत से चलती है इसका नियंता कोई नहीं है।जिस प्रकार भगतसिंह ने ''मैं नास्तिक क्यों हूँ''के माध्यम से स्पष्ट किया है कि धर्म एक शोषण का तरीका है उसी प्रकार पैटर्न रसेल ने एक किताब 'Why am I not christian ?' के माध्यम से सैंकड़ों तर्क ईसाई धर्म के ऊपर किये लेकिन किसी भी तर्क का कोई काट पेश नहीं कर पाया।

दुनियाँ का सबसे पहला पूंजीवादी संगठन धर्म रहा है। धर्म एक ऐसी व्यवस्था है जो लोगों से सिर्फ लेती ही लेती है। धर्म ने दुनियाँ को क्या दिया इसका एक भी सबूत प्रमाण आज तक कोई पेश नहीं कर पाया है!

पिछले दिनों स्टीफन है हॉकिंग का देहांत हुआ तो दुनियाँ में फिर से एक बहस नास्तिकता पर छिड़ी है। हिन्दू धर्म के धर्मगुरुओं के बयान मैंने सुने है। कह रहे है कि ईसाई धर्म आम लोगों के सवालों के संतोषजनक जवाब नहीं दे पाता इसलिए पश्चिम के लोग नास्तिकता की तरफ ज्यादा जा रहे है।

स्टीफन हॉकिंग की पत्नी ईसाई धर्म की कट्टर समर्थक थी और वो घर मे हमेशा परम पिता परमेश्वर की ऐसी बचकानी बातें करती थी कि स्टीफन हॉकिंग हँसकर टाल देता था। हॉकिंग ने स्पष्ट कह दिया कि मैं नास्तिक हूँ। मैं ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानता। एक अंधभक्त आस्तिक व एक नास्तिक के बीच के इसी द्वंद्व भरे द्वेष ने उनका तलाक करवा दिया।

हा, इतना तो मैं भी मानता हूं कि पश्चिम के लोगों के पास धर्म के विकल्प कम है। कुल मिलाकर इसाई व इस्लाम के अलावा विकल्प नहीं है। भारत मे विकल्पों की कोई कमी नहीं है। गांव के किसी खेत के देवता से लेकर अति प्राचीन 33 करोड़ देवता बैठे है! दिल्ली के लुटियन जॉन से लेकर झारखंड की सुदूर पहाड़ियां तक गिरिजाघर बने हुए है। कश्मीर की वादियों से लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की दहलीज तक मस्जिदें बनी हुई है।

रोज एक नया बाबा, मौलवी, पादरी नया प्रकट हो जाता है। विकल्प ही विकल्प हैं और एक दूसरे के बीच सत्य की खोज के लिए घूमते-घूमते ही जिंदगी गुजर जाएगी। हर धर्म गुरु यही कहता है सर्वशक्तिमान को खोजने में जीवन खपाना पड़ता है। कोई तर्क कर लेता है तो अंत मे धौंस दिखाई जाती है कि आस्था पर सवाल खड़े नहीं किये जाते! ये विकल्प नहीं लूट व शोषण की ऐसी दुकाने हैं कि अगर एक से बच गए तो दूसरी फंसा लेगी।

मैंने पुष्कर से लेकर हरिद्वार के घाटों तक देखा है कि पश्चिम के लोग बाबा बने घूम रहे है। यूरोप से वो विकल्प की तलाश में निकले थे और यहां आकर फंस लिए! भांग घोलकर पी रहे हैं और झूम रहे है।

भारत मे तर्क करने लायक जनता जागरूक होगी तभी तो नास्तिकता गति पकड़ेगी! गरीब, अनपढ़, लाचार लोगों का जमावड़ा विज्ञान को समझने लायक होगा तभी तो अज्ञानता रूपी खड़े किए ईश्वर व उसके नाम पर धर्म का धंधा कर रहे लोगों के विरुद्ध बगावत होगी!

आजादी के बाद से इस देश मे उधारी से विज्ञान आई व लोगों के जीवन मे बदलाव आने लगे तो इन कट्टर धर्मावलंबियों की दुकानें कमजोर होने लगी। ऐसे माहौल में राजनेताओं ने धर्मगुरुओं के साथ मिलकर दुबारा जनता को धर्म के भ्रम में धकेलने का काम शुरू किया।

फायदा दोनों को होना था। राजनेताओं को सत्ता प्राप्त करनी थी व धर्मगुरुओं को अपनी दुकानें चमकानी थी। आज आप देखोगे तो दुनियाँ भर में धर्म को सत्ता से अलग कर दिया गया है। ईसायत को वेटिकन में बैठा दिया गया लेकिन भारत जैसे देश मे गली-गली में दुकाने लगा दी गई। वर्तमान सत्ता का हाल तो यह हो गया है कि समझ मे ही नहीं आ

रहा है कि धर्मगुरु सरकार चला रहे है या राजनेता? धार्मिक दुकानें राजनेता चला रहे है या धर्मगुरु?

अब आजादी के प्रतीक लाल किले में हवन किया जाएगा जिसका नाम रखा गया है ''राष्ट्र रक्षा यज्ञ''। अजीब हालात बना दिया गए है! हमे बढ़ना तो अज्ञानता को दूर करते हुए विज्ञान की तरफ लेकिन सत्ता धर्मगुरुओं के साथ मिलकर पूरे देश को बेवकूफ बनाकर धर्म के जंजाल में धकेलने का कुत्सित प्रयास कर रही है!

कुछ दिनों पहले एक संगठन का प्रमुख कह रहा था कि हमारे स्वयंसेवक 3 दिन में प्रशिक्षित होकर सीमा पर लड़ने जा सकते है! सिर्फ कहने से काम नहीं चलता है। हम तो चाहते है कि यह प्रैक्टिकल हो जाये ताकि सत्य का परीक्षण हो जाये!

सोमनाथ के मंदिर पर गज़नवी की मार पड़ी थी तब भी हवन ही हो रहा था। हमे तो सच्चाई पता है कि कोई भगवान वगैरह नहीं होता है और कर्मकांडों के माध्यम से एक कर्महीन प्रजाति मुफ्त में गरीबों की मेहनत की कमाई खा रही है! कुछ लोग कहते है कि पढ़े लिखे भी बहुत ज्यादा धार्मिक क्यों हो रहे है! अरे भाई जब धर्म का व्यापार होगा व उनके नाम से दुकाने चलेगी तो व्यापार पढ़े-लिखे लोग ही तो करेंगे!

केदारनाथ त्रासदी में ज्यादातर पढ़े लिखे लोग ही मरे थे! उनका धर्म मे कोई विश्वास नहीं था और गर्मियों की छुट्टियों में हिमालय की वादियों में घूमने गए थे! अगर हकीकत में वो धार्मिक होते और उनका भगवान होता तो जब वो मर रहे थे तब भगवान कहाँ था? धर्मस्थलों पर भगदड़ मचती है और हर साल हजारों लोग मरते है तो उनका भगवान क्या कर रहा होता है!

जिस प्रकार आज पूंजीवाद विकृत रूप में कमजोरों को निगल रहा है उसी प्रकार धर्म नाम की यह पूंजीवादी लूट सदियों से चली आ रही है लेकिन अब अज्ञानता का यह दौर ज्यादा चलेगा नहीं! आज लोग धर्म व भगवान पर इसलिए सवाल करने से नहीं बच रहे है कि उनकी इसमें गहरी आस्था है बल्कि इसलिए बच रहे कि कहीं कट्टरपंथी लोग जीवन जीना दूभर न कर दें! गौरी लंकेश, कुलबर्गी जैसे लोगों की हत्याओं के द्वारा खौफ फैलाया जा रहा है कि अगर सत्य की बात की तो यह अंजाम भी हो सकता है! धार्मिक दुकाने चलाने वाले लोग असंवेदनशील, निर्दयी प्रवृति के होते है।

धर्म झूठे षड्यंत्र व क्रूरता के बल पर चलता है। यह अज्ञानता का उपयोग करने के लिए तरह-तरह के षड्यंत्र, श्लोक, हदीस, पैरा आदि रचकर आम लोगों को डराता है! भय पैदा करके जो दिमाग मे भ्रम पैदा किया जाता है उसी का नाम धर्म है! जो नहीं मानेगा, इनकी सत्ता को चुनौती देगा, इनके खिलाफ बगावत करेगा उसपर क्रूरतापूर्ण कब्जा किया जाएगा!

हर धर्म ग्रंथ में प्रेम व हिंसा की बातें आपको साथ मिलेगी। बाकी कहीं भी जहां प्रेम होता है वहां हिंसा नहीं होती। जहां हिंसा होती है वहां प्रेम नहीं मिलेगा।जो प्रेमपूर्ण धर्म के षड्यंत्र में फंस जाए वो ठीक नहीं तो हिंसा वाला अध्याय काम मे लेने लग जाते है।यही कारण है कि हर धर्म की उत्पत्ति में हिंसा को माकूल जगह दी गई है व इन धार्मिक ग्रंथों में भी लिखा गया है।

मानवता नियत से चलती है, मानवता इच्छाओं, सपनों, अरमानों से चलती है। मानवता कठिनता से सरलता की तरफ गमन करना चाहती है। धर्म का धंधा एक सीमा तक तो चल जाता है लेकिन जब कर्मकांडों के माध्यम से जकड़न बढ़ती है और मानव जीवन घुटन महसूस करता है तो वहे बगावत करने की सोचता है। अंदर ही अंदर भारतीय जनमानस घुट रहा है लेकिन बगावत करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। उम्मीद करता हूँ कि आने वाले दिनों में सैंकड़ों-हजारों भगतसिंह खुलकर सामने आएंगे और मानवता को सरल जीवन की तरफ लेकर जाएंगे।

पीढियां खप गई जंगल-पहाड़ काटकर खेत बनाने में!
ठगों को दो पल लगे अपनी-अपनी दुकान सजाने में!!

-**पृथ्वी....**

(फेसबुक से साभार)

स्वतंत्र चिंतन

मिथ्या-विश्वास

कर्नल इंगरसोल

7

जो प्रकृति से परे की किसी शक्ति में विश्वास करते हैं, किसी परमात्मा में विश्वास करते हैं, उनके पास ईश्वरीय ग्रंथ रहते हैं। इन पुस्तकों को परम सत्य मात्र माना जाता हे। इन पर विश्वास करना ही चाहिए। जो इन पर विश्वास नहीं करता, उसे अनंत-वेदना का दंड भुगतना पड़ेगा। ये पुस्तकें मानवी-तर्क को अपील नहीं करती। ये मानवी-तर्क से परे हैं। आदमी जिन्हें वास्तविक घटनाएं कहते हैं, उनकी इन्हें कोई परवाह नहीं। जिन बातों का इन पुस्तकों से मेल नहीं बैठता, वे सब गलत हैं। ये पुस्तकें मानवी अनुभव से परे हैं, मानवी-तर्क से स्वतंत्र हैं।

हमारी इलहामी किताब बाइबल कहलाती है। जो आदमी इस पुस्तक में परस्पर-विरोध, गलतियां और प्रक्षिप्त अंश खोजने की दृष्टि से इसे पढ़ता है, वह अपनी मुक्ति को खतरे में डालता है। जब वह पढ़ता है, उस समय न उसे सोचने का अधिकार है, न तर्क करने का। उसका एकमात्र कर्तव्य है विश्वास करना।

लाखों-करोड़ों आदमियों ने इस पुस्तक के अध‍ययन में, इसके विरोधों का मेल बैठाने के प्रयत्न में, उसकी अस्पष्ट तथा बेहूदा बातों को सार्थक सिद्ध करने के प्रयत्न में अपना जीवन नष्ट कर दिया। ऐसा करते हुए उन्होंने प्रायः हर अपराध और हर क्रूर कर्म को उचित सिद्ध किया है। इसकी मूर्खताओं में उन्हें सूक्षम तक बुद्धि के दर्शन हुए हैं। इन इलहामी-ग्रंथों को ही आधार मानकर सैंकड़ों मत-मतांतर बन गए हैं। शायद ही किन्हीं दो पाठकों में अर्थो के विषय में मतैक्य हो। हजारों लोगों ने बाइबल को मूल भाष में पढ़ने के लिए हिब्रू और ग्रीक का अध‍ययन किया है। जितना ही उन्होंने अध्ययन किया, उतना ही आपस में मतभेद बढ़ा। एक ही पुस्तक में डनहोंने एक ओर सिद्ध किया कि सभी मनुष्य नरकगामी होंगे, दूसरी ओर यह सिद्ध किया कि सभी को स्वर्गगामी होना हैं एक ओर यह सिद्ध किया कि गुलामी की प्रथा ईश्वरीय संस्था है, दूसरी ओर यह सिद्ध किया कि सभी मनुष्यों को स्वतंत्र होना है। एक ओर यह सिद्ध किया कि बहु-पत्नी-विवाह ठीक है, दूसरी ओर यह सिद्ध किया कि किसी भी आदमी की एक से अधिक पत्नी नहीं होनी चाहिए। एक ओर यह कि ईसा ने संप्रदाय स्थापित किया, दूसरी ओर यह कि उसने कोई संप्रदाय स्थापित नहीं किया। एक ओर यह कि मरे हुए फिर जी उठेंगे, दूसरी ओर अब मृतों का पुनर्जीवन न होगा। एक ओर ईसा फिर आएगा, दूसरी ओर ईसा अब दुबारा नहीं आएगा। एक ओर यह कि बाइबलमें जितने करिश्मों का उल्लेख है, वे सब वास्तव में थे, दूसरी ओर उनमें से कुछ नहीं हुए हैं, क्योंकि वे अत्यंत मूर्खतापूर्ण और बेहूदा हैं। एक ओर तमाम बाइबल इलहामी है, दूसरी ओर यह कि उसका कुछ हिस्सा इलहामी नहीं है। एक ओर यह कि नास्तिकों को मार डालना चाहिए, दूसरी ओर यह कि विरोधियों का विरोध नहीं करना चाहिए। एक ओर यह कि ईमान न लाने वालों की हत्या करनी चाहिए, दूसरी ओर यह कि अपने शत्रुओं से प्रेम करना चाहिए, दूसरी ओर यह कि जो घर-गृहस्थी की चिंता नहीं करता, वह एक नास्तिक से भी निष्कृष्टतर है।

इन सब मतों के समर्थन मे, इन सब विरोधी बातों के समर्थन में, हजारों ग्रंथ लिखे गए, लाखों

प्रवचन दिए गए, असंख्य तलवारें रक्त से लाल हो गई और जलती चिताओं की आग से हजारों रातें प्रकाशित हो उठीं।

हजारों भाष्यकारों ने सामान्य वाक्यों के अर्थों को अस्पष्ट और गुह्य बन दिया। तिथियों, नामों, संख्याओं और वंशावलियों तक के आध्यात्मिक अर्थ करने के प्रयत्न किए। उन्होंने कविता की टांग घसीटी, कथाओं को 'इतिहास' बना डाला और काल्पनिक बातों को बेहूदा तथा असंभव घटनाओं का रूप दे दिया। लाखों पुरोहितों और उपदेशकों ने इलहामी पुस्तक को अपनी व्याख्याओं से और भी अधिक रहस्यपूर्ण बना दिया-मूर्खता की बुद्धिमता और बुद्धिमता की मूर्खता दिखाकर, निर्दयता को दयालुता और असंभव को संभव सिद्ध करके।

बाइबल के भाष्यकार ने बाइबल को मालिक और जनता को उसका गुलाम बना दिया। इस पुस्तक के द्वारा उन्होंने दिमागी सच्चाई की हत्या कर दी, आदमी के स्वाभाविक मनुष्यत्व को मार डाला। इस पुस्तक के द्वारा उन्होंने दया को हृदय से निकाल बाहर किया, न्याय तथा औचित्य की तमाम धारणाओं को उलट-पलट दिया, आत्मा को भय के कारागाह में कैद कर डाला और ईमानदारी से मन में पैदा होने वाले संदेह को अपराध ठहरा दिया।

जरा सोचो, संसार ने भय के कारण कितना कष्ट उठाया। उन लाखों-करोड़ों आदमियों की बात सोचो जो भय के कारण पागल हो गए।

जरा सोचो, मृत्यु के भय की बात, अनन्त क्रोध की बात, अनंत-काल तक प्यास से मरने की बात, असीम पश्चाताप, रोना-धोना और सिसकियां भरने की बात, अनंत पीड़ा के मारे चिल्लाने और कराहने की बात।

जरा इन हृदयों की बात सोचो, जो पत्थर बन गए, जो टुकड़े-टुकड़े हो गए, उन अत्याचारों की, उन पीड़ाओं की जो सहन करनी पड़ीं, उन प्राणों की जिनमें अंधकार छा गया।

इलहामी बाइबल ईसाइयत का सबसे बड़ा अभिशाप सिद्ध हुआ है और जब तक उसे इलहामी माना जाता रहेगा, तब तक यह वैसी ही बनी रहेगी।

8

आदमियों ने हमारे परमात्मा को बनाया और असभ्य आदमियों ने उसे यथासामर्थ्य अच्छे से अच्छा मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया। उन्होंने हमारे परमात्मा को कुछ-कुछ अपने ही जैसा बनाया और उसे अपने राग द्वेष तथा अपनी उचित-अनुचित की धारणाओं से लाद दिया।

जैसे-जैसे आदमी ने प्रगति की वैसे-वैसे उसने अपने परमात्मा में परिवर्तन किया। उसने उसके हृदय में से थोड़ी-सी निर्दयता निकाल ली और उनकी आंखों में थोड़ा-करूणा का प्रकाश भर दिया। जैसे-जैसे आदमी ने उन्नति की उसका दृष्टिकोण और व्यापक हो गया, उसका मानसिक क्षितिज विस्तृत हो गया। उसने फिर अपने परमात्मा में परिवर्तन किया और उसे इस बार जितना संपूर्ण वह बना सकता था, उतना संपूर्ण बनाया, यह सब होने पर भी यह परमात्मा अपने को बनाने वालों के नमूने पर ही बना। जैसे-जैसे आदमी दयालु बना, उसने न्याय से प्रेम करना सीखा और जैसे-जैसे उसके मस्तिष्क में विकास हुआ, उसका आदर्श पवित्रतर और श्रेष्ठतर होता गया। इस प्रकार उसका परमात्मा अधिक दयालु तथा अधिक स्निग्ध प्रकृति का हो गया।

अब हम अपने युग में जिहोवा से आगे बढ़ गए हैं। अब वह संपूर्ण नहीं रहा। आज के धर्मोपरेश जिहोवा की नहीं, किंतु एक प्रेम-मूर्ति परमात्मा की बात करते हैं। उसे वे हमारा स्वामी, पिता, स्थायी मित्र और मानवता का विधाता कहते हैं, लेकिन जिस समय ये लोग इस प्रेम-मूर्ति परमात्मा की चर्चा करते हैं, उस समय भी आंधियां आती हैं, भूकंप आते हैं, बाढ़ें आती हैं, आकाश से वज्रपात होता है और प्लेग और महामारियां अथक मृत्यु की पैदावार काटती रहती हैं।

अब ये हमें शिक्षा देते हैं कि सब-कुछ अच्छे के लिए होता है। बुराई में छिपी हुई भलाई ही होती है। कष्ट ही आदमी को मजबूत और सदाचारी बनाते हैं और सुख तो आदमी की कमजोरी तथा पतन के कारण होते हैं। यदि ऐसा है तो नरक में पड़ी हुई आत्माओं का विकास होकर उन्हें महान बन जाना चाहिए और जो स्वर्ग में हैं, उन्हें सुकड़ कर छोटा हो

जाना चाहिए।

लेकिन, हम जानते हैं कि भलाई तो भलाई ही होती है। हम जानते हैं कि भलाई बुराई नहीं होती और बुराई भलाई नहीं होती। हम जानते हैं कि प्रकाश अंधकार नहीं है और अंधकार प्रकाश नहीं है। लेकिन हमें यह नहीं लगता कि भलाई–बुराई की योजना प्रकृति के परे के किसी परमात्मा की बनाई हुई है और वही इनका कारण है। हम दोनों को आवश्यक मानते हैं। हम न धन्यवाद देते हैं और न अभिशाप देते हैं। हम जानते हैं कि कुछ दुख से बचा जा सकता है और सुख में वृद्धि की जा सकती है। हम जानते हैं कि यह ज्ञान में वृद्धि करने से, दिमाग को विकसित करने से हो सकता है।

जैसे–जैसे ईसाइयों ने अपने परमात्मा में परिवर्तन किया है, उसी प्रकार उन्होंने अपनी बाइबल को भी बदला है। जो अंश असंभव और बेहूदा है, अत्याचारपूर्ण तथा नृशंस है, यह अधिकांश एक ओर फेंक दिया गया है और हजारों आदमी अब इस प्रयत्न में लगे हैं कि किसी न किसी तरह शेष इलहामी अंश को बचा लें। इसमें संदेह नहीं कि जो कट्टर हैं उन्हें अब भी प्रत्येक शब्द का आग्रह है। वे मानते हैं कि बाइबल की प्रत्येक पंक्ति सत्य है। वे शब्दों का मक्खीमार अर्थ करने वाले हैं। उनके लिए बाइबल का अर्थ एकदम वही है, जो उसके शब्दों से व्यक्त होता है। वे कोई व्याख्या नहीं चाहते। उन्हें किसी भाष्यकार की परवाह नहीं। परस्पर–विरोधी बातों से उनकी श्रद्धा में कुछ अंतर नहीं पड़ता, वे यह मानते ही नहीं कि बाइबल में कहीं कोई परस्पर विरोधी बात है। वे पवित्र ग्रंथ के प्रत्येक शब्द की कसम खाते हैं और उसके जितने संकुचित अर्थ हो सकते हैं, उतने संकुचित अर्थ करते हैं। वे उस मैनेजर–मकान की तरह हैं, जिसने एक आदमी को यह कहकर मकान किराए पर देने से इंकार कर दिया, क्योंकि उसके यहां बच्चे हैं। उसे बताया गया कि किरायेदार के दोनों बच्चों की शादी हो चुकी है और अब वे दूसरे शहर में रहते हैं। उसका उत्तर था कि इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता, मुझे किसी ऐसे आदमी को मकान किराए पर देने की आज्ञा नहीं है, जिसके बच्चे हों।

सभी कट्टर ईसाई–पंथ उन्नति के मार्ग की बाधा हैं। प्रत्येक कट्टर मत एक बधन है, एक कारागार है। इलहामी किताब का प्रत्येक विश्वासी एक ऐसा दास है, जो तर्क को उसके सिंहासन से च्युत कर भय के सिर ताज रखता है।

तर्क दिमाग का प्रकाश है, सूर्य है। यह दिमाग को ठीक दिशा सुझाने वाला यंत्र है। यह उत्तरी ध्रुव–तारा है। यह पर्वत की वह ऊंची चोटी है, जो सदा बादलें से ऊपर रहती है।

9

अंधकार की अनेक शताब्दियों तक ईसाइयत पर मजहब का अधिकार रहा। मिथ्या–विश्वास लगभग सर्वव्यापी था। बीस हजार में से एक भी आदमी न लिख सकता था, न पढ़ सकता था। इन शताब्दियों में आदमियों की पीठ ज्ञान के सूर्य की ओर थी और उनका मुंह अज्ञान तथा मिथ्या–विश्वास के अंधेरे की ओर। उस समय न कोई प्रगति थी, न आविष्कार था। चारों ओर अत्याचार और पूजा–पाठ, उत्पीड़न और प्रार्थना। पादरी–पुरोहित विचार और खोज के शत्रु थे। वे चरवाहे थे और लोग उनकी भेड़ें। यह उनका काम था कि विचार और जिज्ञासा के भेड़ियों से अपनी भेड़ों को बचाएं। परलोक के मुकाबले में इस लोक का कुछ भी महत्व न था। इस जीवन के व्यतीत करने का एकमात्र उद्देश्य था परलोक की तैयारी। लोगों का धन और श्रम गिरजों को बनाने तथा निकम्मे धार्मिक लोगों के भरण–पोषण में नष्ट होता था। ईसाइयत के इस अंधकारपूर्ण युग में, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, मानवता के कल्याण को दृष्टि में रखकर एक भी आविष्कार नहीं हुआ, एक भीनई बात का पता नहीं लगाया गया। ईसाइयत की सारी शक्ति परलोक से सहायता प्राप्त करने के व्यर्थ के प्रयत्न में नष्ट हुई।

शताब्दियों तक ईसायत इसी प्रयत्न में लगी रही कि मुहम्मद के अनुयायियों से ईसा की खाली कब्र छीनी जा सके। इस मूर्खता की बेदी पर लाखों जानें बरबाद हो गई। इतना होने पर भी झूठ की सेना विजयी हुई। जो लोग ईसा का झंडा उठाए

(शेष पृष्ठ 23 पर...)

प्रायश्चित

भगवतीचरण वर्मा
(1903-1981)

अगर कबरी बिल्ली घरभर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से। अगर रामू की बहू घरभर में किसी से घृणा करती थी, तो कबरी बिल्ली से। रामू की बहू, दो महीने हुए मायके से पहली बार ससुराल आई थी, पति की प्यारी और सास की दुलारी, चौदह वर्ष की बालिका। भंडार घर की चाबी उसकी करधनी में लटकने लगी, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा। सास जी ने माला ली और पूजा-पाठ में मन लगाया, लेकिन ठहरी चौदह वर्ष की बालिका, कभी भंडार खुला है, तो कभी भंडार-घर में बैठे-बैठे सो गई। कबरी बिल्ली को मौका मिला, घी-दूध पर अब वह जुट गई। रामू की बहू की जान आफत में और कबरी बिल्ली के छक्के पंजे। रामू की बहू दूध ढंककर मिसरानी को जींन दे गई और दूध नदारद। अगर बात यहीं तक रह जाती, तो भी बुरा न था, कबरी रामू की बहू से कुछ ऐसा परक गई थी कि रामू की बहू के लिए खाना-पीना दुश्वार। रामू की बहू के कमरे में रबड़ी से भरी कटोरी पहुंची और रामू जब आए तब तक कटोरी साफ चटी हुई। बाजार से मलाई आई और जब तक रामू की बहू ने पान लगाया मलाई गायब।

एक दिन रामू की बहू ने रामू के लिए खीर बनाई। पिस्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे दूध में औटाए गए, सोने का वर्क चिपकाया गया और खीर से भरकर कटोरा कमरे के एक ऊंचे ताक पर रखा गया, जहां बिल्ली न पहुंच सके। रामू की बहू इसके बाद पान लगाने में लग गई। उधर, बिल्ली कमरे में आई, ताक के नीचे खड़े होकर उसने ऊपर कटोरे की ओर देखा, सूंघा, माल अच्छा है, ऊंचाई अंदाजी। पान लगाकर रामू की बहू सासजी को पान देने चली गई और कबरी ने छलांग मारी, पंजा कटोरे में लगा और कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर।

आवाज रामू की बहू के कान में पहुंची, सास के सामने पान फेंककर वह दौड़ी, क्या देखती है कि फूल का कटोरा टुकड़े-टुकड़े, खीर फर्श पर और बिल्ली डटकर खीर उड़ा रही है। रामू की बहू को देखते ही कबरी चंपत। रामू की बहू पर खून सवार हो गया। सुबह हुई और वह देखती है कि कबरी देहरी पर बैठी बड़े प्रेम से उसे देख रही है। रामू की बहू ने कुछ सोचा, इसके बाद मुस्कराती हुई वह उठी। कबरी रामू की बहू के उठते ही खिसक गई। रामू की बहू एक कटोरा दूध कमरे के दरवाजे की देहरी पर रखकर चली गई। हाथ में पाटा लेकर वह लौटी, तो देखती है कि कबरी दूध पर जुटी हुई है। मौका हाथ में आ गया, सारा बल लगाकर पाटा उसने बिल्ली पर पटक दिया। कबरी न हिली, न डुली, न चीखी, न चिल्लाई, बस एकदम उलट गई। आवाज जो हुई तो महरी झाड़ू छोड़कर, मिसरानी रसोई छोड़कर और सास पूजा छोड़कर घटनास्थल पर उपस्थित हो गईं। रामू की बहू सर झुकाए हुए अपराधिनी की बातें सुन रही है।

महरी बोली-'अरे राम! बिल्ली तो मर गई, मांजी। बिल्ली की हतया बहू से हो गई, यह तो बुरा हुआ।'

मिसरानी बोली-'मांजी, बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या के बराबर है, हम तो रसोई बनावेंगी, जब तक बहू के सिर हत्या रहेगी।'

सास बोली-'हां, ठीक तो कहती हो, अब जब तक बहू के सिर से हत्या न उतर जाए, तब तक न कोई पानी पी सकता है, न खाना खा सकता है। बहू, यह कया कर डाला?'

महरी ने कहा-'फिर क्या हो, तो पंडितजी को बुलाए लाई।'

सास की जान में जान आई-'अरे हां, जल्दी दौड़ के पंडितजी को बुला लो।'

पंडित परमसुख को जब यह खबर मिली, उस समय वे पूजा कर रहे थे।

खबर पाते ही वे उठ पड़े-पंडिताइन से मुस्कुराते

हुए बोले–'भोजन न बनाना, लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।'

किसनू की मां ने कहा–'पंडितजी, बिल्ली की हतया करने से कौन नरक मिलता है?'

पंडित परमसुख ने पत्रे के पन्ने उलटे, अक्षरों पर उंगलियां चलाई, माथे पर हाथ लगाया और कुछ सोचा। चेहरे पर धुंधलापन आया, माथे पर बल पड़े, नाक कुछ सिकुड़ी और स्वर गंभीर हो गया–'हरे कृष्ण! हरे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ, प्रातःकाल ब्रह्म–मुहूर्त में बिल्ली की हत्या! घोर कुंभीपाक नरक का विधान है! रामू की मां, यह तो बड़ा बुरा हुआ।'

रामू की मां की आंखों में आंसू आ गए–'तो फिर पंडितजी, अब क्या होगा, आप ही बतलाएं!'

पंडित परमसुख मुस्कुराए–'रामू की मां, चिंता की कौन–सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं? शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जाएगा।' एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए। जब तक बिल्ली न दी जाएगी, तब तक तो घर अपवित्र रहेगा। बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाए।' रामू की मां ने कहा–'तो पंडित जी, कितने तोले की बिल्ली बनवाई जाए?' पंडित परमसुख मुस्कुराए, अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा–'बिल्ली कितने तोले की बनवाई जाए? अरे रामू की मां, शास्त्रों में तो लिखा है बिल्ली के वजन–भर सोने की बिल्ली बनवाई जाए, लेकिन अब कलियुग आ गया है, धर्म–कर्म का नाश हो गया है, श्रद्धा नहीं रही। सो रामू की मां, कम से कम इक्कीस तोले की बिल्ली बनवा के दान करवा दो और आगे तो अपनी–अपनी श्रद्धा!'

रामू की मां ने आंखें फाड़कर पंडित परमसुख को देखा–'अरे बाप रे, इक्कीस तोला सोना! पंडितजी यह तो बहुत है, तोलाभर की बिल्ली से काम न निकलेगा?'

मोल–तोल शुरू हुआ और मामला 11 तोले की बिल्ली पर ठीक हो गया। इसके बाद पूजा–पाठ की बात आई। पंडित परमसुख ने कहा–'उसमें क्या मुश्किल है, हम लोग किस दिन के लिए हैं, दान के लिए करीब दस मन गेहूं, एक मन चावल, एक मन दाल, मन भर तिल, पांच मन जौ और पांच मन चना, चार पसेरी घी और मन भर नमक भी लगेगा। बस, इतने से काम चल जाएगा।'

'अरे बाप रे, इतना आसान! पंडितजी इसमें तो सौ–डेढ़ सौ रुपया खर्च हो जाएगा'–रामू की मां ने रुआंसी होकर कहा!

'फिर इससे कम में तो काम न चलेगा। बिल्ली की हत्या कितना बड़ा पाप है, रामू की मां! खर्च को देखते वक्त पहले बहू के पाप को तो देख लो! यह तो प्रायश्चित है, कोई हंसी–खेल थोड़े ही है।

रामू की मां ने अपने चारों ओर देखा–सभी पंच पंडितजी के साथ। पंडित परमसुख मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने एक ठंडी सांस लेते हुए कहा–'अब तो जो नाच नचाओगे, नाचना ही पड़ेगा।'

पंडित परमसुख जरा कुछ बिगड़कर बोले–'रामू की मां! यह तो खुशी की बात है–अगर तुम्हें यह अखरता है तो न करो, मैं चला' –इतना कहकर पंडित जी ने पोथी–पत्रा बटोरा।

रामू की मां ने पंडितजी के पैर पकड़े और पंडितजी ने अब जमकर आसान जमाया और कहा, 'इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों वक्त पांच–पांच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा,' कुछ रुककर पंडित परमसुख ने कहा–'सो इसकी चिंता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूंगा और मेरे अकेले भोजन करने से पांच ब्राह्मण के भोजन का फल मिल जाएगा।'

'अच्छा तो फिर प्रायश्चित का प्रबंध करवाओ, रामू की मां 11 तोला सोना निकालो, मैं उसकी बिल्ली बनवा लाऊं–दो घंटे में मैं बनवाकर लौटूंगा, दो घंटे में मैं बनवाकर लौटूंगा, तब तक सब पूजा का प्रबंध कर रखो और देखो पूजा के लिए...'

पंडितजी की बात खत्म भी न हुई थी कि महरी हांफती हुई कमरे में घुस आई और सब लोग चौंक उठे।

रामू की मां ने घबराकर कहा–'अरी क्या हुआ री?'

महरी ने लड़खड़ाते स्वर में कहा–'मांजी, बिल्ली तो उठकर भाग गई!' ०००

०००

भारत के प्रख्यात नास्तिक

भारत रत्न सत्यजित रॉय

सत्यजित रॉय (2 मई, 1921–23 अप्रैल, 1992) एक भारतीय फिल्म निर्देशक थे, जिन्हें 20वीं शताब्दी के सर्वोत्तम निर्देशकों में गिना जाता है। इनका जन्म कला और साहित्य के जगत् में जाने–माने कोलकाता (तब कलकत्ता) के एक बंगाली परिवार में हुआ थ। इनकी शिक्षा प्रेसिडेंसी कालेज और विश्व–भारती विश्वविद्यालय में हुई। इन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत पेशेवर चित्रकार की तरह की। फ्रांसीसी फिल्म निर्देशक जाँ रन्वार से लिमने पर औस्रंदन में इतालवी फिल्म लादी दि बिसिक्लेत (बाइसिकल चोर) देखने के बाद फिल्म निर्देशन की ओर इनका रुझान हुआ।

रॉय ने अपने जीवन में 37 फिल्मों का निर्देशन किया जिनमें फीचर फिल्में, वृत्तचित्र और लघु फिल्मेंशामिल हैं। इनकी पहली फिल्म पथर पांचाली (पथ का गीत) को कान फिल्मोत्सव में मिले 'सर्वोत्तम मानवीय प्रलेख' पुरस्कार को मिलाकर कुल ग्यारह अंतराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। यह फिल्म अपराजितो और अपुर संसार (अपु का संसार) के साथ इनकी प्रसिद्ध अपु त्रयी में शामिल है। राय फिल्म निर्माण से संबंधित कई काम खुद ही करते थे।–पटकथा लिखना, अभिनेता ढूंढना, पार्श्व संगीत रचना, चलचित्रण, कला निर्देशन, संपादन और प्रचार सामग्री की रचना करना। फिल्में बनाने के अतिरिक्त वे कहानीकार, प्रकाशक, चित्रकार और फिल्म आलोचक भी थे। रॉय को जीवन में कई पुरस्कार मिले, जिनमें अकादमी मानद पुरस्कार और भारतरत्न शमिल हैं।

इनके दादा उपेन्द्रकिशोर राय चौधरी लेखक, चित्रकार, दार्शनिक, प्रकाशक और गैरपेशेवर खगोलशास्त्री थे। ये साथ ही ब्राह्म समाज के नेता भी थे। उपेन्द्र किशोर के बेटे सुकुमार रॉय ने लकीर से हटकर बांग्ला में निरर्थक कविता लिखी। वे योग्य चित्रकार और आलोचक भी थे। सत्यजित रॉय सुकुमार और सुप्रभा रॉय के बेटे थे। इनका जन्म कोलकाता में हुआ। जब सत्यजित केवल 5 वर्ष के थे तो इनके पिता चल बसे। इनके परिवार को सुप्रभा की मामूली तन्ख्वाह पर गुजारा करना पड़ा। रॉय ने कोलकाता के प्रेसिडेन्सी कॉलेज से अर्थशास्त्र पढ़ा, लेकिन इनकी रुचि ललित कलाओं में थी। 1940 में इनकी माता ने आग्रह किया कि वे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित विश्व भारती विश्वविद्यालय में आगे पढ़ें। राय को कोलकाता का माहौल पसंद था और शांतिनिकेतन के बुद्धिजीवी जगत् से ये खास प्रभावित नहीं थे। माता के आग्रह और ठाकुर के प्रति आदरभाव की वजह से अंततः इन्होंने विश्व भारती जाने का निश्चय किया। शांति निकेतन में रॉय पूर्वी कला से बहुत प्रभावित हुए। बाद में इन्होंने स्वीकार किया कि प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस और विनोद बिहारी मुखर्जी से इन्होंने बहुत कुछ सीखा। मुखर्जी के जीवन पर इन्होंने बाद में एक वृत्तचित्र 'द इनर आई' भी बनाया। अजन्ता, एलोरा और एलिफेंटा की गुफाओं को देखने के बाद ये भारतीय कला के प्रशंसक बन गए।

1943 में 5 साल का कोर्स पूरा करने से पहले रॉय ने शांतिनिकेतन छोड़ दिया और कोलकाता वापस आ गए, जहां उन्होंने ब्रिटिश, विज्ञापन अभिकरण डी.जे. केमर में नौकरी शुरू की। इनके पद का नाम 'लघु द्रष्टा' (Junior visualiser) था और महीने के केवल अस्सी रुपये का वेतन था। हालांकि दृष्टि रचना राय को बहुत पसंद थी और उनके साथ अधिकतर अच्छा ही व्यवहार किया जाता था, लेकिन एजेंसी के ब्रिटिश और भारतीय कर्मियों के बीच कुछ खिंचाव रहता था, क्योंकि ब्रिटिश कर्मियों को ज्यादा वेतन मिलता था। साथ ही रॉय को लगता था कि 'एजेंसी के ग्राहक प्रायः मूर्ख होते थे'। उन्हीं दिनों ये डी.के. गुप्ता द्वारा स्थापित सिग्नेट प्रेस के साथ भी काम करने लगे। गुप्ता ने रॉय को प्रेस में छपने वाली नई किताबों के मुखपृष्ठ रचने को कहा और पूरी

कलात्मक स्वतंत्रता दी। रॉय ने बहुत किताबों के मुखपृष्ठ बनाए, जिनमें जिम कार्बेट की मैन-ईटर्स आफ कुमाऊँ (कुमाऊँ के नरभक्षी) और जवाहर लाल नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया (भारत की खोज) शामिल हैं। इन्होंने बांग्ला के जाने-माने उपन्यास पथेर पांचाली (पथ का गीत) के बाल संस्करण पर भी काम किया, जिसका नाम था आम आंटिर भेंपु (आम की गुठली की सीटी)। रॉय इस रचना से बहुत प्रभावित हुए और अपनी पहली फिल्म इसी उपन्यास पर बनाई। मुखपृष्ठ की रचना करने के साथ उन्होंने इस किताब के अंदर चित्र भी बनाये। इनमें से बहुत से चित्र उनकी फिल्म के दृश्यों में दृष्टिगोचर होते हैं।

रॉय ने दो नए फॉण्ट भी बनाए-'राय रोमन' और 'राय बिज़ार'। रॉय रोमन को 1970 में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला। कोलकाता में रॉय एक कुशल चित्रकार माने जाते थे। रॉय अपनी पुस्तकों के चित्र और मुखपृष्ठ खुद ही बनाते थे और फिल्मों के लिए प्रचार सामग्री की रचना भी खुद ही करते थे।

1947 में चितानन्द दास गुप्ता और अन्य लोगों के साथ मिलकर रॉय ने कलकत्ता फिल्म सभा शुरू की, जिसमें उन्हें कई विदेशी फिल्में देखने को मिलीं। इन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में कोलकाता में स्थापित अमेरिकन सैनिकों से दोस्ती कर ली, जो उन्हें शहर में दिखाई जा रही नई-नई फिल्मों के बारे में सूचना देते थे। 1949 में रॉय ने दूर की रिश्तेदार और लंबे समय में उनकी प्रियतमा बिजोय रॉय से विवाह किया। इनका एक बेटा हुआ, सन्दीप, जो अब खुद फिल्म निर्देशक है। इसी साल फ्रांसीसी फिल्म निर्देशक जाँ रन्वार कोलकाता में अपनी फिल्म की शूटिंग करने आए। रॉय ने देहात में उपयुक्त स्थान ढूंढने में रन्वार की मदद की। रॉय ने उन्हें पथेर पांचाली पर फिल्म बनाने का अपना विचार बताया, तो रन्वार ने उन्हें उसके लिए प्रोत्साहित किया। 1950 में डी.जे. केमर ने रॉय को एजेंसी के मुख्यालय लंदन भेजा। लंदन में बिताए तीन महीने में रॉय ने 99 फिल्में देखीं। इनमें शामिल थी, वित्तोरिया दे सीका की नवयथार्थवादी फिल्म लादी दी बिसिक्लेते (बाइसिकल चोर) जिसने उन्हें अंदर तक प्रभावित किया। रॉय ने बाद में कहा कि वे सिनेमा से बाहर आए तो फिल्म निर्देशक बनने के लिए दृढ़संकल्प थे। 1960 के दशक में रॉय ने जापान की यात्रा की और वहां जाने-माने फिल्म निर्देशक अकीरा कुरोसावा से मिले। भारत में भी वे अक्सर शहर के भागम-भग वाले माहौल से बचने के लिए दार्जिलिंग या पुरी जैसी जगहों पर जाकर एकान्त में कथानक पूरे करते थे।

1983 में फिल्म 'घरे बाइरे' पर काम करते हुए रॉय को दिल का दौरा पड़ा, जिससे उनके जीवन के बाकी 9 सालों में उनकी कार्य-क्षमता बहुत कम हो गई। घरे बाइरे का छायांकन रॉय के बेटे की मदद से 1984 में पूरा हुआ। 1992 में हृदय की दुर्बलता के कारण रॉय का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया, जिससे वह कभी उबर नहीं पाए। मृत्यु से कुछ ही हफ्ते पहले उन्हें सम्मानजनक अकादम पुरस्कार दिया गया। 23 अप्रैल, 1962 को उनका देहान्त हो गया। उनकी मृत्यु होने पर कोलकाता शहर लगभग ठहर गया और हजारों लोग उनके घर पर उन्हें श्रद्धांजलि देने आए।

रॉय ने निश्चय कर रखा था कि उनकी पहली फिल्म बांग्ला साहित्य की प्रसिद्ध कृति पथेर पांचाली पर आधारित होगी, जिसे विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय ने 1928 में लिखा था। इस अर्धआत्मकथात्मक उपन्यास में एक बंगाली गांव के लड़के अपु के बड़े होने की कहानी है। रॉय ने लंदन से भारत लौटते हुए एक कर्मीदल एकत्रित किया, जिसमें कैमरामैन सुब्रत मित्र और कला निर्देशक बंसी चंद्रगुप्ता के अलावा किसी को फिल्मों का अनुभव नहीं था। अभिनेता भी लगभग सभी गैरपेशेवर थे। फिल्म का छायांकन 1952 में शुरू हुआ। रॉय ने अपनी जमापूंजी इस फिल्म में लगा दी, इस आशा में कि पहले कुछ शॉट लेने पर कहीं से पैसा मिल जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। पथेर पांचाली का छायांकन 3 वर्ष के लंबे समय में हुआ-जब भी रॉय या निर्माण प्रबंधक अनिल चौधरी कहीं से पैसों का जुगाड़ कर पाते थे, तभी छायांकन हो पाता था। रॉय ने ऐसे स्रोतों से धन लेने से मना कर दिया जो कथानक में परिवर्तन कराना चाहते थे या फिल्म निर्माता का निरीक्षण जरूरी समझते थे।

1955 में पश्चिम बंगाल सरकार ने फिल्म के लिए कुछ ऋण दिया, जिससे आखिरकार फिल्म पूरी हुई। सरकार ने भी फिल्म में कुछ बदलाव कराने चाहे (वे चाहते थे कि अपु और उसका परिवार एक 'विकास परियोजना' में शामिल हों और फिल्म सुखांत हो) लेकिन सत्यजित रॉय ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

पथेर पांचाली 1955 में प्रदर्शित हुई और बहुत लोकप्रिय रही। भारत और अन्य देशों में भी यह लंबे समय तक सिनेमा में लगी रही। भारत के आलोचकों ने इसे बहुत सराहा। द टाइम्स आफ इंडिया ने लिखा. ....'इसकी किसी और भारतीय सिनेमा से तुलना निरर्थक है। पथेर पांचाली तो शुद्ध सिनेमा है।' अमेरिका में लिंडसी अंडरसन ने फिल्म के बारे में बहुत अच्छी समीक्षा लिखी। लेकिन सभी आलोचक फिल्म के बारे में इतने उत्साहित नहीं थे। फ्रांस्वा त्रुफो ने कहा-'गंवारों को हाथ से खाना खाते हुए दिखाने वाली फिल्म मुझे नहीं देखनी।' इसके बावजूद यह फिल्म अमेरिका में बहुत समय तक चली। रॉय की अगली फिल्म अपराजितो की सफलता के बाद इनका अंतर्राष्ट्रीय कैरियर पूरे जोर-शोर से शुरू हो गया। इस फिल्म में एक नवयुवक (अपु) और उसकी मां की आकांक्षाओं के बीच अक्सर आलोचक इसे पहली फिल्म से बेहतर मानते हैं। अपराजितो को वेनिस फिल्मोत्सव में स्वर्ण सिंह (Golden Lion) से पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। अपु त्रयी पूरी करने से पहले राय ने दो और फिल्में बनाई-हास्यप्रद पारस पत्थर और जमींदारों के पतन पर आधारित जलसागर। जलसागर को इनकी सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में गिना जाता है।

अपराजितो बनाते हुए राय ने त्रयी बनाने का विचार नहीं किया था, लेकिन वेनिस में उठे एक प्रश्न के बाद उन्हें यह विचार अच्छा लगा। इस श्रृंखला की अंतिम कड़ी अपुर संसार 1959 में बनी। रॉय ने इस फिल्म में दो नए अभिनेताओं, सौमित्र चटर्जी और शर्मिला टैगोर को मौका दिया। इस फिल्म में अपु कोलकाता के एक साधारण मकान में गरीबी में रहता है और अपर्णा के साथ विवाह कर लेता है, जिसके बाद इन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कुछ आलोचक इसे त्रयी की सबसे बढ़िया फिल्म मानते हैं।

इस अवधि में रॉय ने कई विषयों पर फिल्में बनाई, जिनमें शामिल हैं, ब्रिटिश काल पर आधारित देवी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर एक वृत्तचित्र, हास्यप्रद फिल्म महापुरुष और मौलिक कथानक पर आधारिक इनकी पहली फिल्म कंचनजंघा। इसी दौरान इन्होंने कई ऐसी फिल्में बनाई, जिन्हें मिलाकर भारतीय सिनेमा में स्त्रियों का सबसे गहरा चित्रांकन माना जाता है। अपुर संसार के बाद राय की पहली फिल्म थी देवी, जिसमें इन्होंने हिन्दू समाज में अंधविश्वास के विषय को टटोला। शर्मिला टैगोर ने इस फिल्म के मुख्य पात्र दयामयी की भूमिका निभाई, जिसे उसके ससुर काली का अवतार मानते हैं। रॉय को चिंता थी कि इस फिल्म को सेंसर बोर्ड से शायद स्वीकृति नहीं मिले या उन्हें कुछ दृश्य काटने पड़ें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। 1961 में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर रॉय ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके जीवन पर एक वृत्तचित्र बनाया। ठाकुर के जीवन का फिल्मांकन बहुत कम ही हुआ था, इसलिए रॉय को मुख्यतः स्थिर चित्रों का प्रयोग करना पड़ा, जिसमें उनके अनुसार तीन फीचर फिल्मों जितना परिश्रम हुआ। इसी साल में रॉय ने सुभाषा मुखोपाध्याय और अन्य लेखकों के साथ मिलकर बच्चों की पत्रिका संदेश को पुनर्जीवित किया। इस पत्रिका की शुरुआत इनके दादा ने शुरू की थी और बहुत समय से राय इसके लिए धन जमा करते आ रहे थे। संदेश का बांग्ला में दो तरफा मतलब है-एक खबर और दूसरा मिठाई। पत्रिका को इसी मूल विचार पर बनाया गया-शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन। रॉय शीघ्र ही खुद पत्रिका में चित्र बनाने लगे और बच्चों के लिए कहानियां और निबन्ध लिखने लगे। आने वाले वर्षो में लेखन इनकी जीविका का प्रमुख साधन बन गया।

1962 में राय ने कंचनजंघा का निर्देशन किया, जिसमें पहली बार इन्होंने मौलिक कथानक पर रंगीन छायांकन किया। इस फिल्म में एक उच्च्य वर्ग के

परिवार की कहानी है, जो दार्जीलिंग में एक दोपहर बिताते हैं और प्रयास करते हैं कि सबसे छोटी बेटी का विवाह लंदन में पढ़े एक कमाऊ इंजीनियर के साथ हो जाए। शुरू में इस फिल्म को एक विशाल हवेली में चित्रांकित करने का विचार था, लेकिन बाद में रॉय ने निर्णय किया कि दार्जीलिंग के वातावरण और प्रकाश व धुंध के खेल का प्रयोग करके कथानक के खिंचाव को प्रदर्शित किया जाए।

1964 में रॉय ने चारुलता फिल्म बनाई जिसे बहुत से आलोचक इनकी सबसे निष्णात फिल्म मानते हैं। यह ठाकुर की लघुकथा नष्टनीड़ पर आधारित है। इसमें 19वीं शताब्दी की एक अकेली स्त्री की कहानी है जिसे अपने देवर अमल से प्रेम होने लगता है। इसे रॉय की सर्वोत्कृष्ठ कृति माना जाता है। राय ने खुद कहा है कि इसमें सबसे कम खामियां हैं और यही एक फिल्म है जिसे वे मौका मिलने पर बिल्कुल इसी तरह दोबारा बनाएंगे। चारु के रूप में माधवी मुखर्जी के अभिनय और सुब्रत मित्र और बंसी चंद्रगुप्ता के काम को बहुत सराहा गया है। इस काल की अन्य फिल्में हैं : महानगर, तीन कन्या, अभियान, कापुरुष (कायर) और महापुरुष। चारुलता के बाद के काल में रॉय ने विविध विषयों पर आधारित फिल्में बनाईं, जिनमें शामिल है, कल्पनाकथाएं, विज्ञानकथाएं, गुप्तचर कथाएं और ऐतिहासिक नाटक। रॉय ने फिल्मों में नयी तकनीकों पर प्रयोग करना और भारत के समकालीन विषयों पर ध्यान देना शुरू किया। इस काल की पहली मुख्य फिल्म थी नायक, जिसमेंएक फिल्म अभिनेता (उत्तम कुमार) रेल में सफर करते हुए एक महिला पत्रकार (शर्मिला टैगोर) से मिलता है। 24 घंटे की घटनाओं पर आधारित इस फिल्म में एक प्रसिद्ध अभिनेता के मनोविज्ञान का अन्वेषण किया गया है। बर्लिन में इस फिल्म को आलोचक पुरस्कार मिला।

1969 में रॉय ने व्यावसायिक रूप से अपनी सबसे सफल फिल्म बनाई-गुपी गाइन बाघा बाइन (गुपी गाए, बाघा बजाए) गायक गुपी और ढोली बाघा को भूतों का राजा तीन वरदान देता है, जिनकी मदद से वे दो पड़ोसी देशों में होने वाले युद्ध को रोकते हैं। यह रॉय के सबसे खर्चीले उद्यमों में से थी और इसके लिए पूंजी बहुत मुश्किल से मिली। रॉय की अगली फिल्म थी अरण्येर दिन-रात्रि (जंगल में दिन-रात), जिसकी संगीत-रचना चारुलता से भी जटिल मानी जाती है। इसमें चार ऐसे नवयुवकों की कहानी है, जो छुट्टी मनाने जंगल में जाते हैं। इसमें सिमी ग्रेवाल ने एक जंगली जाति की औरत की भूमिका निभाई है।

इसके बाद रॉय ने समसामयिक बंगाली वास्तविकता पर ध्यान देना शुरू किया। बंगाल में उस समय नक्सलवादी क्रांति जोर पकड़ रही थी। ऐसे समय में नवयुवकों की मानसिकता को लेकर इन्होंने कलकत्ता त्रयी के नाम से जानी जाने वाली तीन फिल्में बनाईं-प्रतिद्वंद्वी (1970), सीमाबद्ध (1971) और जनअरण्य (1975)। इन तीनों फिल्मों की कल्पना अलग-अलग हुई, लेकिन इनके विषय साथ मिलाकर एक त्रयी का रूप लेते हैं। प्रतिद्वंद्वी एक आदर्शवादी नवयुवक की कहानी है, जो समाज से मोह-भंग होने पर भी अपने आदर्श नहीं त्यागता है। इसमें रॉय ने कथा-वर्णन की एक नयी शैली अपनाइई, जिसमें इन्होंने नेगेटिव में दृश्य, स्वप्न दृश्य और आकस्मिक फ्लैश-बैक का उपयोग किया। जनअरण्य फिल्म एक नवयुवक की कहानी है जो अधिक धन कमाने के लिए भ्रष्ट राहों पर चलने लगता है। सीमाबद्ध में एक सफल युवक अधिक धन कमाने के लिए अपनी नैतिकता छोड़ देता है। 1970 के दशक में रॉय ने अपनी दो लोकप्रिय कहानियां-सोनार केल्ला (स्वर्ण किला) और जॉय बाबा फेलुनाथ का फिल्मांकन किया। दोनों फिल्में बच्चों और बड़ों दोनों में बहुत लोकप्रिय रहीं।

1977 में रॉय ने मुंशी प्रेमचंद की कहानी पर आधारित शतरंज के खिलाड़ी फिल्म बनाई। यह उर्दू भाषा की फिल्म 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक वर्ष पहले अवध राज्य में लखनफ शहर पर केंद्रित है। इसमें भारत के गुलाम बनने के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बॉलीवुड के बहुत से सितारों ने काम किया, जिनमें प्रमुख हैं-संजीव कुमार, सईद जाफरी, अमजदखान, शबाना आजमी, विक्टर

बनर्जी और रिचर्ड एटनबरो। 1980 में रॉय ने यूपी गाइन बाघा बाईन की कहानी को आगे बढ़ाते हुए हीरक राज नामक फिल्म बनाई, जिसमें हीरे के राजा का राज्य इंदिरा गांधी के आपात्काल के दौरान भारत की ओर इंगित करता है। इस काल की दो अन्य फिल्में थीं-लघु फिल्म पिंकूर डायरी (पिंकू की दैनन्दिनी) और घंटे-भर लंबी हिन्दी फिल्म सद्गति।

रॉय बहुत समय से ठाकुर के उपन्यास 'घरे बाइरे' पर आधारित फिल्म बनाने की सोच रहे थे। जो उन्होंने 1984 में बनायी। 1987 में उन्होंने अपने पिता सुकुमार रॉय के जीवन पर एक वृत्तचित्र बनाया। राय की आखिरी 3 फिल्में उनकी बीमारी के कारण मुख्यतः आंतरिक स्थानों में शूट हुईं और इस कारण से एक विशिष्ट शैली का अनुसरण करती हैं इनमें संवाद अधिक है और इन्हें रॉय की बाकी फिल्मों से निम्न श्रेणी में रखा जाता है। रॉय की अंतिम फिल्म आगन्तुक का माहौल हल्का है, लेकिन विषय बहुत गूढ़ है। इसमें एक भूला-बिसरा मामा अपनी भांजी से अचानक मिलने आ पहुंचता है तो उसके आने के वास्तविक कारण पर शंका की जाने लगती है।

सत्यजित रॉय मानते थे कि कथानक लिखना निर्देशन का अभिन्न अंग है। यह एक कारण है जिसकी वजह से उन्होंने प्रारंभ में बांग्ला के अतिरिक्त किसी भी भाषा में फिल्में नहीं बनाई। अन्य भाषाओं में बनी इनकी दोनों फिल्मों के लिए इन्होंने पहले अंग्रेजी में कथानक लिखा, जिसे इनके पर्यवेक्षण में अनुवादकों ने हिन्दी या उर्दू में भाषांतरित किया। रॉय के कला निर्देशक बंसी चन्द्र गुप्ता की दृष्टि भी रॉय की तरह ही पैनी थी। शुरुआती फिल्मों पर इनका प्रभाव इतना महत्वपूर्ण था कि रॉय कथानक पहले अंग्रेजी में लिखते थे, ताकि बांग्ला न जानने वाले चन्द्र गुप्ता उसे समझ सकें। शुरुआती फिल्मों के छायांकन में सुब्रत मित्र का कार्य बहुत सराहा जाता है और आलोचक मानते हैं कि अनबन होने के बाद जब मित्र चले गए, तो रॉय की फिल्मों के चित्रांकन का स्तर घट गया। रॉय ने मित्र की बहुत प्रशंसा की, लेकिन रॉय इतनी एकाग्रता से फिल्में बनाते थे कि चारुलता के बाद से रॉय कैमरा खुद ही चलाने लगे, जिसके कारण मित्र ने 1966 से रॉय के लिए काम करना बंद कर दिया। रॉय अपने को फ्रांसीसी नव तरंग के जॉ लुक गोदार और फ्रांस्वा त्रुफो का ऋणी मानते थे, जिनके नए तकनीकी और सिनेमा प्रयोगों का उपयोग राय ने अपनी फिल्मों में किया।

हालांकि दुलाल दत्ता रॉय के नियमित फिल्म संपादक थे। रॉय अक्सर संपादन के निर्णय खुद ही लेते थे और दत्ता बाकी काम करते थे। वास्तव में आर्थिक कारणों से और रॉय के कुशल नियोजन से संपादन अक्सर कैमरे पर ही हो जाता था। शुरू में रॉय ने अपनी फिल्मों के संगीत के लिए रवि शंकर, विलायत खां और अली अकबर खां जैसे भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञों के साथ काम किया, लेकिन रॉय को लगने लगा कि इन संगीतज्ञों को फिल्म की अपेक्षा संगीत की साधना में अधिक रुचि है। साथ ही रॉय को पाश्चात्य संगीत का भी ज्ञान था, जिसका प्रयोग वह फिल्मों में करना चाहते थे। इन तीन कारणों से तीन कन्या के बाद से फिल्मों का संगीत भी रॉय खुद ही रचने लगे। रॉय ने विभिन्न पृष्ठभूमि वाले अभिनेताओं के साथ काम किया, जिनमें से कुछ विख्यात सितारे थे, तो कुछ ने कभी फिलम देखी तक नहीं थी। रॉय को बच्चों के अभिनय के निर्देशन के लिए बहुत सराहा गया है, विशेषतः अपु एवं दुर्गा (पथेर पांचाली), रतन (पोस्टमास्टर) और मुकुल (सोनार केल्ला)। अभिनेता के कौशल और अनुभव के अनुसार राय का निर्देशन कभी न के बराबर होता था। (आगन्तुक में उत्पल दत्त) तो कभी वे अभिनेताओं को कठपुतलियों की तरह प्रयोग करते थे। (अपर्णा की भूमिका में शर्मिला टैगोर)।

रॉय की कृतियों को मानवता और सार्वदेशिकता से ओत प्रोत कहा गया है। इनमें बाहरी सरलता के पीछे अक्सर गहरी जटिलता छिपी होती है। इनकी कृतियों को अन्यान्य शब्दों में सराहा गया है। अकिरा कुरोसावा ने कहा-'रॉय का सिनेमा न देखना इस जगत में सूर्य या चंद्रमा को देखे बिना रहने के समान है।' आलोचकों ने इनकी कृतियों की अन्य कई कलाकारों से तुलना की है-और अंतोन चेखव, जाँ

रन्वार, वित्तोरियो दे सिका, हार्वर्ड हॉक्स, मोत्सार्ट, यहां तक कि शेक्सपियर के समतुल्य पाया है। नायपॉल ने शतरंज के खिलाड़ी के एक दृश्य की तुलना शेक्सपियर के नाटकों से की है–'केवल तीन सौ शब्द बोले गए, लेकिन इतने में ही अद्‌भुत घटनाएं हो गईं!' जिन आलोचकों को रॉय की फिल्में सुरुचिपूर्ण नहीं लगतीं, वे भी मानते हैं कि राय एक सम्पूर्ण संस्कृति की छवि फिल्म पर उतारने में अद्वितीय थे।

रॉय की आलोचना मुख्यतः इनकी फिल्मों की गति को लेकर की जाती है। आलोचक कहते हैं कि वे एक 'राजसी घोंघे' की गति से चलती हैं। रॉय ने खुद माना कि वे इस गति के बारे में कुछ नहीं कर सकते, लेकिन कुरोसावा ने इनका पक्ष लेते हुए कहा–'इन्हें धीमा नहीं कहा जा सकता। ये तो विशाल नदी की तरह शांति से बहती हैं।' कुछ आलोचक इनकी मानता को सादा और इनके कार्यों को आध‌ुनिकता-विरोधी मानते हैं और कहते हैं कि इनकी फिल्मों में अभिव्यक्ति की नई शैलियां नजर आती हैं। रॉय की आलोचना समाजवादी विचारधाराओं के राजनेताओं ने भी की है। इनके अनुसार रॉय पिछड़े समुदायों के लोगों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध नहीं थे, बल्कि अपनी फिल्मों में गरीबी का सौंदर्यीकरण करते थे। ये अपनी कहानियों में, द्वन्द्व और संघर्ष को सुलझाने के तरीके भी नहीं सुझाते थे। 1960 के दशक में रॉय और मृणाल सेन के बीच एक सार्वजनिक बहस हुई। मृणाल सेन स्पष्ट रूप से मार्क्सवादी थे और उनके अनुसार रॉय ने उत्तम कुमार जैसे प्रसिद्ध अभिनेता के साथ फिल्म बनाकर अपने आदर्शों के साथ समझौता किया। रॉय ने पलटवार जवाब दिया कि सेन अपनी फिल्मों में केवल बंगाली मध्यम वर्ग को ही निशाना बनाते हैं, क्योंकि इस वर्ग की आलोचना करना आसान है। 1980 में सांसद एवं अभिनेत्री नरगिस ने रॉय की खुलकर आलोचना की थी कि ये 'गरीबी का निर्यात' कर रहे हैं, और इनसे मांग की कि ये आधुनिक भारत को दर्शाती हुई फिल्में बनाएं।

रॉय ने बांग्ला फिल्म के बाल-साहित्य में दो लोकप्रिय चरित्रों की रचना की–गुप्तचर फेलुदा और वैज्ञानिक प्रोफेसर शंकु। इन्होंने कई लघुकथाएं भी लिखीं, जो बारह-बारह कहानियों के संकलन में प्रकाशित होती थीं और सदा उनके नाम मे बारह से संबंधित शब्दों का खेल रहता था। उदाहरण के लिए 'एकेर पिठे दुइ' (एक के ऊपर दो)। रॉय को पहेलियों और बहुअर्थी शब्दों के खेल से बहुत प्रेम था। इसे इनकी कहानियों में भी देखा जा सकता है–फेलुदा को अक्सर मामले की तह तक जाने के लिए पहेलियां सुलझानी पड़ती हैं। शर्लक होम्स और डॉक्टर वाटसन की तरह फेलुदा की कहानियों का वर्णन उनका चचेरा भाई तोपसे करता है। प्रोफेसर शंकु की विज्ञानकथाएं एक दैनन्दिनी के रूप में हैं जो शंकु के अचानक गायब हो जाने के बाद मिलती हैं। रॉय ने इन कहानियों में अज्ञात और रोमांचक तत्वों को भीतर तक टटोला है, जो उनकी फिल्मों में नहीं देखने को मिलता है। इनकी लगभग सभी कहानियां हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुदित हो चुक हैं।

रॉय के लगभग सभी कथानक बांग्ला की साहित्यिक पत्रिका 'एकशान' में प्रकाशित हो चुके हैं। रॉय ने 1982 में आत्मकथा लिखी (जब मैं छोटा था।) इसके अतिरिक्त इन्होंने फिल्मों के विषय पर कई पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से प्रमुख हैं, आवर फिल्म देयर फिल्मस (हमारी फिल्में, उनकी फिल्में)। 1976 में प्रकाशित इस पुस्तक में रॉय की लिखी आलोचनाओं का संकलन है। राय ने चार्ली चैपलिन और अकीरा कुरोसावा जैसे निर्देशकों और इतालवी नवयथार्थवाद जैसे विषयों पर विशेष ध्यान दिया है। 1976 में ही इन्होंने एक और पुस्तक प्रकाशित की–विषय चलचित्र, जिसमें सिनेमा के विभिन्न पहलुओं पर इनके चिंतन का संक्षिप्त विवरण है। इसके अतिरिक्त इनकी एक और पुस्तक एकेई बोले शूटिंग (इसको शूटिंग कहते हैं) 1979 में प्रकाशिता हुई है।

निधन के कुछ ही दिन पहले मिले अकादमी पुरस्कार के साथ राय को जीवन में अनेकों पुरस्कार और सम्मान मिले। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने इन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। चार्ली चैपलिन के बाद ये इस सम्मान को पाने वाले पहले फिल्म

निर्देशक थे। इन्हें 1985 में दादा साहब फालके पुरस्कार और 1987 में फ्रांस के लेज्यो द ओनु पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मृत्यु के कुछ समय पहले इन्हें सम्मानजनक अकादमी पुरस्कार और भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किए गए मरणोपरांत सेनफ्रांसिस्को अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव में इन्हें निर्देशन में जीवन-पर्यन्त उपलब्धि-स्वरूप अकिरा कुरोसावा पुरस्कार मिला, जिसे इनकी ओर से शर्मिला टैगोर ने ग्रहण किया। सामान्य रूप से यह समझा जाता है कि दिल का दौरा पड़नेके बाद उन्होंने जो फिल्में बनाईं, उनमें पहले जैसी ओजस्विता नहीं थी।

सत्यजित रॉय भारत और विश्वभर के बंगाली समुदाय के लिए एक सांस्कृतिक प्रतीक हैं। बंगाली सिनेमा पर रॉय ने अमिट छाप छोड़ी है। बहुत से बांग्ला निर्देशक इनके कार्य से प्रेरित हुए हैं-अपर्णा सेन, ऋतुपर्ण घोष, गौतम घोष, तारिक मसूद और तन्वीर मुकम्मल। भारतीय सिनेमा पर इनके प्रभाव को हर शैली के निर्देशक मानते हैं, जिनमें बुद्धदेव दासगुप्ता, मृणाल सेन और अटूर गोपालकृष्णन शामिल हैं। भारत के बाहर भी मार्टिन सोर्सीसी, जेम्स आइबरी, अब्बास कियारोस्तामी और एलिया काजान जैसे निर्देशक भी इनकी शैली से प्रभावित हुए हैं।

1995 में भारत सरकार ने फिल्मों से संबंधित अध्यन के लिए सत्यजित रॉय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान की स्थापना की। लंदन फिल्मोत्सव में नियमित रूप से एक ऐसे निर्देशक को सत्यजित रॉय पुरस्कार दिया जाता है, जिसने पहली फिल्म में ही 'रॉय की दृष्टि की कला, संवेदना और मानवता' को अपनाया हो।

(डॉ. रणजीत की पुस्तक 'भारत के प्रख्यात नास्तिक' से)

पृष्ठ 14 कर शेष (मिथ्या विश्वास...

फिरते थे, वे उसी प्रकार तितर-बितर हो गए, जैसे आंधी के आगे सूखे पत्ते।

मैं समझता हूं, इन शताब्दियों में एक आविष्कार हुआ। कहा जाता है कि तेरहवीं शताब्दी में रॉजर बैकन नाम के एक ईसाई साधु ने बारूद का आविष्कार किया। किंतु यह आविष्कार अकेला था। हम इसका श्रेय ईसाइयत को नहीं दे सकते। कारण, बैकन एक नास्तिक था और वह इतना महान अवश्य था कि सब चीजों में बुद्धि को ही निर्णायक मानता था। जैसा कि उन पुण्य दिनों में सभी बुद्धिमान आदमियों के साथ होता था, बैकन को भी पीड़ित किया गया और जेल में डाला गया। ईसाइयत विजयी हुई। उसके हाथ में धर्म-दंड था और ऊंची टोपी। तो भी उसकी यह विजय जबरदस्ती और ठगी की विजय थी। उसी के पेट में पराजय के बीज छिपे हुए थे। ईसाइयत ने असंभव को संभव बनाने का प्रयत्न किया। उसने चाहा कि संसार एक विश्वास हो जाए, सभी दिमाग एक ही ढंग के हो जाएं और आदमी के व्यक्तित्व का सर्वथा नाश हो जाए। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उसने सभी चालबाजियों का उपयोग किया और लोगों को हर प्रकार से पीड़ित किया।

लेकिन, इस सबके बावजूद कुछ आदमी सोचने लगे। वे इस संसार के मामलों में दिलचस्पी लेने लगे-प्रकृति के इस महान नाटक में उन्होंने घटने वाली घटनाओ के कारणों की, उनकी व्याख्या की, खोज आरंभ की। वे ईसाइयत की स्थापनाओं से संतुष्ट नहीं थे। इन चिंतकों ने अपनी दृष्टि आकाश की ओर से हटा अपने चारों ओर घुमाई। वे इतने 'अनाधात्मवादी' अवश्य थे कि इसी लोक में सुख-सुविधा की इच्छा करें। वे दुनियावी और बुद्धिमान बन गए।

इसका क्या परिणाम हुआ? उन्होंने आविष्कार करना, पता लगाना, घटनाओं के आपसी संबंध का अध्ययन करना प्रारंभ किया। उन्होंने इस बात की खोज की कि वे कौन-सी बातें हैं, जो आदमी को सुखी बनाती हैं, वे कौन से साधन हैं जो मानव-बंधुओं का कल्याण करते हैं।○○○

भूत से साक्षात्कार

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर

भूत से सीधे साक्षात्कार करते समय मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। इसकी बड़ी अच्छी सबक हमें तब मिली, जब महादेव चव्हाण नामक मांत्रिक ने भूत-पिशाच दिखाने की चुनौती स्वीकार की।

असल में महादेव चव्हाण का पता सांगली जिले के हमारे कार्यकर्त्ताओं को ज्योतिषी क्षितिज शिंदे ने बताया। क्षितिजे शिंदे सांगली के एक समाचार-पत्र में भूतों पर एक सीरिज चला रहा था। उसके लेखों के 'भूत के जन्मदाता ब्रह्मचारी' 'कम्युनिस्ट भूत' जैसे शीर्षक चक्र में डालने वाले थे। उसकी राय के मुताबिक विश्व की 70 से 80 फीसदी दुर्घटनाएं दुष्ट पिशाच की बाधा से होती हैं। स्त्री के पास यदि पूर्व जन्म के पुण्य का संचय नहीं है, तो वह चुड़ैल या पिशाच भूत की योनि में चली जाती है। अवैध संबंधों से पुत्र प्राप्ति करने वाली स्त्री यदि प्रसूति के समय मृत हुई, तो पिशाच योनि में जाकर अपने शिशु की तलाश करती है। ब्राह्मण की मृत्यु हुई तो वह ब्रह्मराक्षस बनता है और यदि लालची या लोभी ब्राह्मण की मृत्यु हुई तो ब्रह्मसमंध (ब्रह्मपिशाच) बनता है। सदियों पूर्व के भूत आज भी घूमते हुए नज़र आते हैं। वे वायु रूप में रहते हैं। लेकिन अदृश्य रूप में भटकते हुए वे पीड़ा दे सकते हैं। अनगिनत जीवात्मा (सिरिट्स) हमारे आस-पास मंडाराते रहते हैं। हमसे एक हाथ की दूरी पर उनके सूक्षम जीव कार्यरत रहते हैं। हमारे शरीर की ऊर्जा को वे चूसते हैं। भूतों के विश्व में 'साम्यवाद' रहता है। सारे भूत समान हैं। लेकिन अच्छे भूत मार्गदर्शन करते हैं, जबकि बुरे भूत मांत्रिक से वशीभूत होकर अपनी वासनाओं के प्रतिशोध की पूर्ति करते हैं।

यह सब पढ़कर 'भूत दिखाओ, पांच लाख रुपए पाओ' का समिति का आह्वान रजिस्टर पोस्ट से क्षितिज शिंदे के घर पहुंचा और एक महीने तक उसके उत्तर की राह देखकर सांगली जिले के अधश्रद्धा निर्मूलन समिति के छह कार्यकर्त्ताओं ने डॉ. प्रदीप पाटिल के नेतृत्व में क्षितिज शिंदे के घर दस्तक दी। हम भूत देखने आए हैं, यह कार्यकर्त्ताओं का पैंतरा था, जबकि क्षितिज शिंदे को भूतों पर पक्का विश्वास था। उसका मानना था कि उसका गुरु हमेशा भूतों के साथ रहता है। विशेष मंत्रशक्ति द्वारा वह भूतों को काबू में रखता है। वह हमें भूतों को दिखाता है। साथ ही लोगों की भूतबाधा को दूर करता है। इतना सब सुनकर सीधे उससे मिलना ही तय हुआ।

जयसिंहपुर से चार-पांच किलोमीटर की दूरी पर 'खंजिरे मला' नाम की एक बस्ती थी। प्रत्यक्षतः खेती बहुत कम थी, बस कुछ एक लोग वहां रह रहे थे। इसके इर्द-गिर्द कई उतार-चढ़ाव, गड्ढों तथा बड़े-बड़े पत्थरों से भरी हुई बंजर भूमि थी। इसी बंजर भूमि पर खंजिरेमला के नजदीक महादेव चव्हाण का खपरैल घर था। घर क्या, 200 वर्ग फीट का एक विशाल कमरा ही था। दीवारें कच्ची थीं। नाथ सम्प्रदाय के इस मांत्रिक की आयु पैंसठ वर्ष की थी। सिर के बाल सफेद और गुच्छेदार सफेद मूंछें भी थीं। बड़ी आंखें, गरजने वाली आवाज, शरीर पर धोती और बंडी, माथे पर बड़ा तिलक, सामने जलती हुई धूप, एक ओर काले मोटे दोर की गठरी, मंत्र-तंत्र के चौकोर कागज। शंकर और कृष्ण के तस्वीरों से दीवारें ढंकी हुई थी।

समिति के कार्यकर्त्ता सामने बैठे। क्षितिज शिंदे ने कहा, 'ये अंधश्रद्धा निर्मूलन वाले लोग हैं, इन्हें भूत देखना है।'

गुरु ने गरज कर कहा, 'दिखाएंगे भूत, अभी दिखाता हूं, लेकिन भूतों को काबू में रखने वाले चार लड़के आज यहां नहीं हैं, वे बाजार गए

हैं।'

प्रदीप ने पूछा, 'भूत कैसे होते हैं।'

'हमें छोड़ो, विश्व में आज तक किसी ने भी भूत को नहीं देखा है।' शिंदे बताते हैं, 'आप तो भूतों के साम्राज्य मे रहते हैं, तो फिर बताएं, भूत कैसे होते हैं?'

'राक्षस के जैसा मुंह होता है।' गुरु चव्हाण ने कहा।

उसके पच्चीस-तीस भक्तगण जो हमारे पीछे बैठे थे, वे चिल्लाए, 'हां-हां इन्होंने हमें भी दिखाया है भूत...'

'उसका शरीर, हाथ-पांव कैसे होते हैं?'

'तुम्हारे-हमारे जैसे ही घूमते हैं इधर-उधर. ..,' कार्यकर्त्ताओं के साथ आए 'दैनिक सकाल' के चिंतामणि सहस्रबुद्धे ने कहा, 'तो फिर कब दिखाएंगे भूत?'

'बृहस्पतिवार के दिन आओ, भूत दिखाएंगे।'

भूत दिखाने का समय तय हुआ-बृहस्पतिवार सुबह 11 बजे। सभी समाचार पत्रों में खबरें छपीं : 'सावधान! आने वाले बृहस्पतिवार के दिन भूत के दर्शन होंगे। मांत्रिक महादेव चव्हाण प्रत्यक्ष भूत दिखाएंगे।'

समिति की सांगली शाखा में पत्रों का ढेर लग गया। कार्यकर्त्ताओं को भी लगा कि सभी लोगों को आना चाहिए। भूत सचमुच होता है या नहीं, इसका आमने-सामने फैसला एक बार ही हो जाए। लोगों के मन का भ्रम दूर होगा। नहीं तो कम से कम इस भ्रम को धक्का तो लगेगा। इसी उद्देश्य से कार्यकर्त्ताओं ने सारी चुनौतियों को सरेआम प्रदर्शित किया। 'चलो भूत देखने' की चर्चा से माहौल गरम हो उठा। सभी ओर एक ही चर्चा, भूत दिखाई देगा या नहीं। खंजिरे मला जिस पुलिस थाने की सीमा में था, वहां कार्यकर्त्ताओं ने जाकर सुरक्षा हेतु विधिवत् अर्जी दी और पुलिस द्वारा पुख्ता बंदोबस्त रखने की मांग की।

भूतदर्शन के कार्यक्रम में ऐन वक्त पर कुछ मुद्दों पर शिकायत न हो, इसलिए एक दिन पहले डॉ. शीतल भरगुडे और डॉ. प्रदीप पाटिल एक बार क्षितिज शिंदे से मिले। महादेव चव्हाण की ओर से क्षितिज शिंदे ही सब कुछ देख रहा था। क्षितिज शिंदे को दो बार निवेदन पढ़कर सुनाया गया, जो इस प्रकार था-

1. मांत्रिक ने बताया है कि तथाकथित भूत दृश्य रूप में मनुष्य की तरह दिखावा करने वाला, राक्षस जैसे मुंह वाला होता है। इस वर्णन के सिवाय कोई भी भूत, 'भूत' नहीं रहेगा।

2. मांत्रिक चव्हाण ने समिति को दूसरी चुनौती दी थी कि 'मैं जिस भूत को बुलाऊंगा, वह भूत आप में से किसी के भी घर का, घर की वस्तुओं की बड़ी सफाई से वर्णन करेगा।' समिति के पांच कार्यकर्त्ताओं के उपर्युक्त वर्णन कागजबंद लिफाफों में रखे जाएंगे और भूत के बताने के बाद हर एक लिफाफा खोला जाएगा। यदि लिफाफे में रखे विवरण भूत के बताए वर्णन से पूरी तरह मेल खाएंगे, तो इससे भूत के होने की पुष्टि हो जाएगी।

3. भूत दिखाई देने पर समिति द्वारा एक बार फिर उसकी जांच की जाएगी और भूत दिखाई न देने पर क्षितिज शिंदे और चव्हाण को भूत दिखने का एक और मौका दिया जाएगा।

अंतिम मुद्दा था कि भूत का अस्तित्व मांत्रिक इस तरीके से दिखाएगा-

1. ताली बजाकर 2. समिति के कार्यकर्त्ताओं को हानि पहुंचाकर।

क्षितिज शिंदे ने इन सभी मुद्दों के निवेदन पर आपत्ति न होने के हस्ताक्षर कर उसे लौटा दिया। उसके जरा भी विचलित न होने पर अचरज हुआ। कई लोगों को लगने लगा कि भूत यकीनन दिखाई देगा।

लेकिन क्षितिज शिंदे की यह शक्ति अस्थायी थी। शाम के सात बजे सभी समाचार पत्रों से डॉ. प्रदीप पाटिल को फोन आए कि क्षितिज शिंदे ने समिति द्वारा शर्तें रखने के कारण कार्यक्रम स्थगित करने की घोषणा की है। अलबत्ता समिति द्वारा सभी समाचार-पत्रों को तुरंत सफाई दी गई कि भूत देखने के लिए समिति खंजिरे मला जाएगी ही। महादेव चव्हाण ने समिति को वचन दिया है और वे उस पर

कायम रहेंगे, ऐसा समिति को भरोसा है।

इस रोमांचक नाटक में शामिल होने के लिए मैं सुबह दस बजे जयसिंगपुर बस स्टैंड पर पहुंचा। जयसिंगपुर से खंजिरे मला की ओर जाते समय मुझे थोड़ा अंदेशा होने लगा कि पता नहीं, आगे क्या होने वाला है। गांव लोगों के झुंड खंजिरे मला की ओर जा रहे थे। जब मैं वहां पहुंचा तो उस विस्तृत बंजर भूमि पर दो-तीन हजार साइकिलें और कुल सात-आठ हजार लोग जमा थे। मेरे वहां पहुंचने तक हमारे कार्यकर्त्ता विजय-मेला शुरू करने की तैयारी में जुट चुके थे।

विजय चव्हाण ने इतनी भारी भीड़ की अपेक्षा नहीं की थी। यहां चल रही गतिविधियों को देखकर उसने पूरी तरह पीछे हटने का पैतरा अपनाया। उसने स्पष्ट रूप से कबूल किया, 'भूत प्रेत कुछ नहीं होते। मुझसे गलती हुई है।'

प्रदीप पाटिल ने कहा, 'भीड़ के सामने जाकर कहो कि 'मैंने झूठ कहा, मुझे माफ करें।'

चव्हाण इसके लिए राजी हो गया। अपने आगे खड़ी भारी भीड़ के सामने वह भुनभुनाया, 'माफ करें, भूत नहीं होता।' और दौड़कर अपने कमरे में चला गया।

यह सब घटित होने तक मैं वहां पहुंच गया था। महादेव चव्हाण से यह सब लिखित रूप में लेने की बात मैंने उठाई। अंदर जाकर उससे ऐसा लिखवा भी लिया। मैंने सोचा कि बाहर जाकर लोगों को यह लिखित कबूलनामा सुनाऊंगा। दो कारणों से यह संभव न हुआ। एक तो हमारे पास लाउड स्पीकर नहीं था और विस्तीर्ण बंजर भूमि पर गले की आवाज पहुंचना संभव न था। दूसरी बात यह कि लोगों को इस इकरारे जुर्म में तनिक भी रस नहीं था। उन्हें भूत देखना था और इसी अपार उत्साह से वे केवल सांगली, कोल्हापुर से ही नहीं, बल्कि दूर-दूर रत्नागिरी, उस्मानाबाद से मुंह अंधेरे इस बंजर भूमि पर आए थे। 'मैं भूत नहीं दिखा सकता' वाला महादेव चव्हाण का कबूलनामा बेशक समिति की दृष्टि से बहुमूल्य था, लेकिन भूत देखने के लिए जुटे उत्साही लोगों की दृष्टि में वह एक कौड़ी का भी न था। फंसाए जाने का उन्हें बहुत गुस्सा था। इसी कारण वे एक ही अनुरोध कर रहे थे कि 'महादेव चव्हाण को बाहर बुलाइए। उसे ही कबूलनामा पढ़ने दें। हमें उससे ही प्रश्न पूछने हैं।' लेकिन गुस्से से बेकाबू भीड़ की मांग को स्वीकृति देना अकलमंदी की बात नहीं थी। हमें 'भूत नहीं' के इकरारे जुर्म में रस था। यह संघर्ष वैचारिक था और यहां तो गुस्से से बेकाबू जनता द्वारा चव्हाण को ही 'भूतयोनि' में भेजने का खतरा स्पष्ट रूप से नजर आ रहा था।

स्वाभाविक रूप से अब चव्हाण की सुरक्षा की जिम्मेदारी समिति पर आ चुकी थी। हमने पुलिस थाने में संदेश भेजा। कुरुंदवाड समिति के कार्यकर्त्ताओं ने महादेव चव्हाण के घर के बाड़ के चारों ओर घेरा बनाया। उससे बेकाबू भीड़ को घर में घुसने से रोकना संभव हुआ। मैं और प्रदीप पाटिल घर में जाकर महादेव चव्हाण को ढांढस बंधा रहे थे। पुलिस नहीं आ रही थी और वातावरण में पल-पल तनाव बढ़ रहा था। इसका हल क्या निकालें तथा परिस्थिति को कैसे नियंत्रित करें, इसका समाधान किसी को सूझ नहीं रहा था। आखिरकार भीड़ में से किसी ने एक पत्थर उठाकर महादेव चव्हाण के घर की ओर दे मारा। भीड़ को तुरंत ही एक उपाय मिल गया। कई हजार खाली हाथों और अनगिनत पत्थरों से अंत में क्या होगा, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। घर के आधे से अधिक खपरैल चकनाचूर हो गए। महादेव चव्हाण के घर की तीनों औरतें वही थीं। पत्थरों ने उनके सिर को निशाना बनाया। उनके सिर जख्मी हो गए। खून बहने लगा। हमें आगे के भीषण भविष्य का अंदाजा हो गया था। इतने में कहीं से 'पुलिस आई, पुलिस आई' का शोरगुल हुआ। पथराव थोड़े समय के लिए रुक गया। पुलिस आई थी, यह सच था पर वह बिल्कुल अकेली थी। बताया गया कि थाने के निरीक्षक, सहायक निरीक्षक तथा अधिकतर पुलिस किसी चीनी मिल की चुनावी सुरक्षा के लिए गए थे। पुलिस थाने में केवल दो ही हवलदार थे और उनमें से आधी फोर्स उन्होंने हमारे यहां भेजी थी। पुलिस दिखाई देने पर स्वाभाविक रूप से लोगों को लगा कि तुरंत ही पीछे से और व्यवस्था आ रही

है। कुछ समय के लिए रुके हुए पथराव का लाभ उठाकर कमरे की घायल औरतें पीछे की दिशा में रहने वाली खंजिरे मला की बस्ती की ओर भाग गई। अकेले सिपाही को परिस्थिति देखकर इस बात का अंदाजा आया कि यह अकेले के बस की बात नहीं। वह उल्टे पांव पीछे लौट आया।

खंजिरे बस्ती के मुट्ठी भर लोगों से अपनी बस्ती की औरतों का बहता हुआ खून देखा नहीं गया। वे गुस्से से आपा खो बैठे और 'खून का बदला खून' से लेने वाले अंदाज में सामने वाले जनसमूह पर पथराव शुरू कर दिया। पथराव रोक चुके लोगों को इस हमले ने बहाना दे दिया। पुलिस को लौटते हुए वे देख चुके थे। इसके चलते उन्होंने भी 'ईंट का जवाब पत्थर से' देने की नीति अपनाई।

महादेव चव्हाण के घर में लोग न घुस जाएं, इसलिए वहां रुके समिति के कार्यकर्त्ताओं पर दोनों ओर से पत्थरों की वर्षा होने लगी। घर के हर खपरैल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। पत्थर सीधे अंदर आने लगे। घर के लोगों का बचाव करने के लिए अंदर बैठे मै और प्रदीप पाटिल ने सिर पर पीतल की बाल्टी, हंडी लेकर अपने-आपको बचाया। ऊपर से आने वाले पत्थर बर्तनों पर गिरकर टन-टन की आवाज कर रहे थे। आखिरकार हिंदी सिनेमा की तरह अंतिम क्षण में पुलिस की गाड़ी आई। परिस्थिति की गंभीरता को देखकर किसी भी प्रकार कर रास्ता नहीं दिखने पर भी वे जीप को जितना संभव हो सका महादेव चव्हाण के घर के दरवाजे के नजदीक ले आए। हमने महादेव चव्हाण को घर से बाहर निकाला। उसे चोट न पहुंचे इसलिए कड़ी सुरक्षा में उसे गाड़ी में पहुंचाया और गाड़ी पुलिस थाने पहुंच गई।

पुलिस थाने में एक सहायक निरीक्षक बैठा था। हमने संक्षेप में कहानी सुनी। उसे इस मामले में दिन दहाड़े भीड़ द्वारा डाले गए डाके का नजारा नजर आया। हमारे खिलाफ महादेव चव्हाण के रूप में गवाह था ही, इसी कारण हमें थाने में बैठने की धमकी देकर घटना का 'आंखों देखा हाल' देखने वह घटनास्थल की ओर रवाना हुआ। परिस्थिति की गंभीरता को हमने भांप लिया था। फौजदारी मुकदमें की संभावना अटल थी। महादेव चव्हाण के घर की क्षति, पथराव में महिलाओं का घायल होना आदि कारण हमारी ओर ही इशारा कर रहे थे। भीड़ हट गई और निर्दोष बरी होने का भरोसा होने पर भी फौजदारी मुकद्दमें में तीन-चार साल तक कोर्ट का चक्कर लगाने के आसार नजर आ रहे थे।

'गरज पागल होती है' जैसे यह सच था वैसे ही 'गरज से अक्ल आती है' भी सच था। हमारी समझ में आया कि इस मामले में महादेव चव्हाण ही हमें बचा सकता है। यदि उसने किसी भी प्रकार की शिकायत न होने का जवाब दिया तो मुकद्दमा दायर ही नहीं होगा। हमने महादेव चव्हाण से यह बात की। हमने उसे समझाया कि हमारा झगड़ा उससे नहीं, भूत से है। उसे हमने ही बचाया था और इसे वह देख भी रहा था। उसकी मांग इतनी ही थी कि हम उसके घर पर खपरैल छत बहाल करें। हमने झट से इसे स्वीकृति दी। मुझे लगा कि उसके मन में एक अज्ञात-सा डर बसा था। इक्ट्ठी हुई भारी भीड़ को वह हमारी शक्ति समझ बैठा। उसे लगा होगा कि यदि हमारे ऊपर मुकद्दमा दायर किया तो मुकद्दमे की सुनवाई के दिन भी इतनी भारी भीड़ के रोष का सामना करना पड़ेगा।

पुलिस उपनिरीक्षक वापस आए। उनके साथ उस थाने के पुलिस निरीक्षक भी थे। वे कबड्डी के खिलाड़ी के रूप में मुझे अच्छी तरह से पहचानते थे, आदर करते थे। साथ ही हमारे आंदोलन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे। एक ओर यह सहानुभूति, दूसरी ओर किसी भी प्रकार की शिकायत न होने का महादेव चव्हाण का बयान, दोनों कारणों से मुकद्दमा दायर न करने का निर्णय हुआ। हम तुरंत गाड़ी में बैठकर वहां से चल दिए। हमारी गाड़ी वहां से बाहर निकाली और तीनों घायल औरतों को लेकर महादेव चव्हाण के रिश्तेदारों को पुलिस थाने में घुसते हुए हमने देखा। वहां क्या हुआ, इसका हमें पता न चला, लेकिन इतना पक्का था कि हमारी गाड़ी वहां से बाहर निकलने में दो मिनट की देरी होती तो फिर सीन बदलने की संभावना थी।
✶✶✶

कैंसर और इरादा फिल्म

ऐंगल्स ने कहा था कि किसी लेखक को अगर मारना है तो उसकी रचना पर चर्चा बंद कर दो। एक चुप्पी बना लो। उसके पक्ष या विपक्ष में कोई चर्चा ही न हो। लेखक और उसका लिखा सब मर जायेगा। उस समय ऐंगल्स के साथ पूंजीवादी लेखकों ने ये ही तरीका अपनाया था। इरादा फिल्म जो फरवरी 2017 में आई। जो एक बेहतरीन फिल्म है। इरादा फिल्म के साथ भी ये ही हुआ। इरादा फिल्म जो कैंसर, कैंसर होने के कारण पर बनी फिल्म है। कैंसर के इस खेल में किस-किसको फायदा है, इसका बखूबी चित्रण है। फिल्म ने जो मुद्दा उठाया, उस पर चर्चा आज वक्त की जरूरत है। लेकिन वक्त पर और चर्चा पर उन्हीं लोगों का कब्जा है, जिनके मुनाफे के कारण कैंसर महामारी का रूप ले चुका है। कैमिकल फैक्ट्रियों के कचरे को जमीन में रिवर्स बोरिंग के जरिये पहुंचाने के कारण जमीन का पानी जहरीला हो गया। जो पानी और फसलों के माध्यम से ये जहर हमारे अंदर तक पहुंच रहा है, जिस कारण कैंसर होता है। लेकिन आम इंसान के दिमाग में पूंजीपतियों ने प्रचार के माध्यम से बैठा दिया कि कैंसर धुम्रपान और तम्बाकू से होता है। कैंसर धूम्रपान और तम्बाकू से भी होता है, लेकिन कैमिकल कचरा जमीन में पहुंचाने से पानी और फसल जहरीली हो गयी, जिस कारण कैंसर महामारी बन गयी। लुटेरे पूंजीपतियों की मुनाफे की चाहत ने जमीन के पानी को जहर बना दिया। इसका विरोध न हो इसलिए ये चुप्पी बनाई गई। आप धूम्रपान और तम्बाकू छोड़ सकते हो ये आपके हाथ में है, लेकिन आप पानी पीना कैसे छोड़ सकते हैं। ये तो आपकी मूल जरूरत है। इस जहरीले पानी पीने से आज कैंसर महामारी का रूप धारण कर चुकी है।

मैंने दो दिन पहले इरादा फिल्म देखी। जैसे-जैसे फिल्म देख रहा था वैसे-वैसे देश की भयंकर सच्चाई डरा रही थी। हम एक ऐसी जगह रह रहे हैं, जहां रोजाना कोई न कोई इस कैंसर की चपेट में आकर तड़प-तड़प कर मर रहा है। तड़फने के साथ-साथ उसको एक पूरा संगठित गिरोह लूट भी रहा है। खून बेचने वालों से लेकर कीमो थैरेपी, इंशोरैंस, पानी बेचने वालों का एक बहुत बड़ा स्कैम है इसके पीछे।

पानी जो मौत की दलदल बन गयी।

यहां के लोगों के लिए पानी ही मौत बन गई है। पानी किसी भी इंसान की जिंदगी का सबसे जरूरी पेय पदार्थ है। अब वो ही उसके लिए जहर बन गया है।

कोई अगर इस जहर पर रिसर्च करता भी है, तो लुटेरा पूंजीपति उसको मरवा देता है। जिसने इस जहर को पैदा किया और जिसकी इस जहर के कारण दुकानदारी चल रही है वो सब इस जहर के खिलाफ बोलने वालों का मुंह बंद कर देते हैं।

कारपोरेट का मीडिया प्रचार करता है कि

'यहां का पानी पीने से आप नहीं बच सकते।'

सेफ रहो, अलर्ट रहो, साफ पानी पीओ।

मतलब आरओ लगाओ। बोतल बंद पानी खरीदो। जमीन का या नदियों के पानी से ये जहर खत्म हो इस पर कोई चर्चा नहीं।

फिल्म में लुटेरा पूंजीपति, खोजी ईमानदार पत्रकार को मारने से पहले कहता है कि-

रिवर्स बोरिंग किस चिड़िया का नाम है ये कोई नहीं जानता

अमोनियम नाइट्रेट, क्रोमियम कैमिकल ये जहरीले है। किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता है। इंजैक्शन लगाकर सब बेहोशी में जीये जा रहे हैं।

शनिवार-रविवार को बीबी के साथ डिनर, गर्ल फ्रेंड के साथ डिस्को बस ये जिंदगी है।

इस जहर की उनको आदत सी पड़ गई है

इसलिए मेरा बिजनेस सही है। क्योंकि कोई मेरे बिजनेस पर सवाल नहीं उठाता।

वैसे पूंजीपति ठीक कह रहा है। आज ये ही तो हालात हैं। पंजाब और पंजाब के लगते बार्डर

इलाकों में हर घर से कैंसर के कारण मौत हो चुकी है, लेकिन क्या आपने कभी विरोध के स्वर सुने। सुनोगे भी नहीं।

कभी पंजाब की धरती क्रांति और क्रांतिकारियों को पैदा करती थीं, लेकिन आज हालात क्या हैं। रोजाना इस बीमारी की चपेट में आकर लोग मरते हैं लेकिन पंजाब का आवाम पूंजीवाद के नशे में चूर है। बहुतों को कोकीन का नशा मार गया तो बहुतों को फ्री इंटरनेट, फैशन, शॉपिंग मार गया।

क्योंकि पूंजीवाद ने आपकी नशों में बड़े शातिराना तरीके से अपने नशे को पहुंचा दिया है। पिछले 20 साल में 3 लाख किसान आत्महत्या कर गए, जिसका हम सब जगह जिक्र करते हैं। लेकिन पिछले 20 साल में कैंसर से भी लाखों लोग मर गए। कोई सर्वे नहीं, कोई जिक्र नहीं, कोई लड़ाई नहीं।

कुछ सालों में कैंसर के मरीजों को नजदीक से देखा है। कैंसर के कारण होने वाला असहनीय दर्द, गरीब परिवार की रुपयों के अभाव में बेबसी, कैसे धीरे-धीरे घर से इंसान भी जाता है और जमीन, रुपया, गहने सब कुछ चला जाता है। ईमानदारी से सरकार कैंसर से मरने वालों का सर्वे करवाए तो एक बहुत बड़ी भयानक सच्चाइ सामने आ सकती है।

बहुत पहले कहानियों में सुनते थे कि फलाने इलाके में एक जिन्न आ गया। जो गावं से दूर जंगल या पहाड़ में रहता है, वो इलाके वालों से हर रोज एक इंसान को खाने के लिए लेता है। उसके साथ में भेड़, बकरी, गाय, फल बहुत से सामान भी साथ में लेता है। फिर एक दिन उस गांव में एक इंसान आता है और उस जिन्न को मारकर वहां के इंसानों को बचाता है। ये कहानी बहुत सुनी है, फिल्मों में भी है, महाभारत में ऐसी कहानी का जिक्र मिलता है, लेकिन उस जिन्न को किसने पैदा किया, ये उन कहानियों में नहीं है, लेकिन जो ये कैंसर का जिन्न है, जो हर रोज बहुत से इंसानों की बलि ले रहा है। साथ में उसकी भेड़, बकरी, गाय, भैंस, जमीन, गहनों को भी खा रहा है। इसको किसने पैदा किया ये जरूर मालूम है। पूंजीपति की पूंजी कमाने की हवस ने इस जिन्न को पैदा किया है। इस हवस पर लगाम लगाने की जिम्मेदारी हमने जिनको सौंपी नेता, पुलिस, नौकरशाह, मीडिया, कानून वो सब इस लूट के हिस्सेदार बन बैठे हैं।

कुछ दिन पहले मेरे एक मित्र से लड़ने के तरीकों पर चर्चा चल रही थी कि इस कैंसर वाले मसले पर कैसे लड़ा जाए। क्योंकि ये मामला बहुत बड़ा है। गांव या 10 गांव मिलकर भी इस लड़ाई को जीत नहीं सकते। मेरा दोस्त भी उन्हीं गांव से था जिस गांव में प्रत्येक घर से ये बीमारी बलि ले चुकी है। वो साथीइस मुद्दे पर लड़ भी रहे हैं। इस फिल्म ने लड़ने का तरीका बता दिया। लड़ाई का एक ही तरीका है, वो है शहीद-ऐ-आजम भगत सिंह का रास्ता 'बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है।'

मदारी फिल्म के बाद इरादा एक बेहतरीन फिल्म है, जो समस्या को उठाती है। पूंजीपति, पुलिस, मीडिया, राजनीति के लूट के लिए बने नापाक गठबंधन को बेबाक तरीके से दिखाती है व इसके साथ में समस्या के समाधान के लिए क्रांतिकारी रास्ता दिखाती फिल्म है।

फिल्म में भटिंडा से बीकानेर के बीच एक पैसेंजर ट्रेन जिसमें 60 प्रतिशत से ज्यादा कैंसर के मरीज आते और जाते हैं। इस ट्रेन का चित्रण रौंगटे खड़े करने वाला है। भारत की ट्रेनों में अक्सर नमकीन, छोले, पॉपकार्न, मूंगफली, पापड़ बेचने वाले मिलते हैं। लेकिन इस ट्रेन में खून बेचने वाले, इंशोरैंस बेचने वाले, कीमोथैरेपी का पैकेज बेचने वाले मिलते हैं, जिसको फिल्म में बहुत ही अच्छे तरीके से दिखाया है। खून बेचने वाला आवाज लगा रहा है कि 2 के साथ एक फ्री, आज का रेट 150-150

फिल्म ने रक्तदान कैंपों पर भी सवाल उठाया है।

फिल्म में नसीरुदीन शाह की दमदार आवाज में दुष्यंत की ये लाइनें लाजवाब हैं-

'सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं, मेरा मकसद नहीं, मेरी कोशिश है, ये सूरत बदलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर में, हर

गांव में

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं, तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

-दुष्यंत कुमार

'समुद्र के किनारे मकान हो तो, तूफान से होशियार रहना चाहिए।'

दमदार और असरदार डायलोग भी फिल्म की कहानी को बेहतरीन बनाते हैं-

'चूहे मारने वाली दवाई से आप बच जाओगे, लेकिन यहां के पानी से कभी नहीं बच पाओगे' 'लाशें दलद में धंसती हुई।'

'कैमिकल के कारण यहां का पानी, यहां की मिट्टी, यहां कि फसलों में जहर घुला है।'

'यहां का पानी ही नहीं खून भी लुटेरे पूंजीपति की जगीर है।'

'ये शहर जितना जमीन के ऊपर है उतना ही जमीन के नीचे है।'

'घुन ही गेहूं को मिटा सकता है।'

लेकिन पत्रकार जो अपनी सच्चाई के कारण मौत के मुआने पर खड़ा है, वो पूंजीपति को कहता है-

पत्रकार- तुम्हें लगता है तुम सच को दबा दोगे, कोई न कोई सच को जरूर सामने लाएगा

सच छुपेगा नहीं। सच छुपेगा नहीं।

हमको भी लगता है कि आने वाले समय में लोग लड़ेंगे, मजबूती से और इस लुटेरी कौम का सर्वनाश कर देंगे।

'जलते घर को देखने वालो
फूस का छपर आपका है।
आग के पीछे तेज हवा
आगे मुकद्दर आपका है।
उसके कत्ल पर मैं भी चुप था।
मेरी बारी अब आयी।
मेरे कत्ल पर आप भी चुप हो।
अगला नंबर आपका है।

०००

अपराजिता

-कात्यायनी

सृष्टिकर्त्ता ने नारी को रचते समय बिस्तर, घर, जेवर, अपवित्र इच्छायें, ईर्ष्या, बेईमानी और दुर्व्यवहार दिया।-मनु

हाँ
उन्होंने यही
सिर्फ यही दिया हमें
अपनी वहशी वासनाओं की तृप्ति के लिए
दिया एक बिस्तर,
जीवन घिसने के लिए, राख होते रहने के लिए
चौका-बर्तन करने के लिए बस एक घर,
समय-समय पर
नुमाइश के लिए गहने पहनाये,
और हमारी आत्मा को पराजित करने के लिए
लाद दिया उस पर तमाम अपवित्र इच्छाओं
और दुष्कर्मो का भार।
पर नहीं कर सके पराजित वे
हमारी अजेय आत्मा को
उनके उत्तराधिकारी
और फिर उनके उत्तराधिकारियों के उत्तराधिकारी भी
नहीं पराजित कर सके जिस तरह
मानवता की अमर-अजेय आत्मा को,
उसी तरह नहीं पराजित कर सके वे
हमारी अजेय आत्मा को
आज भी वह संघर्षरत है
नित-निरन्तर
उनके साथ
जिनके पास खोने को सिफ जंजीरें ही हैं
बिल्कुल हमारी ही तरह!

झरनों से मधुर संगीत न सुनाई देता
अगर राहों में उनके पत्थर न होते।

चिकित्सा विज्ञान को चुनौती

–संजीव खुदशाह

पिछले दिनों देश के कुछ अखबारों में एक आध्यात्मिक समागम का दो सम्पूर्ण पृष्ठ वाला विज्ञापन प्रकाशित हुआ, ऐसे विज्ञापन बड़े-बड़े होर्डिंग, फ्लेक्स, बैनर, पोस्टर पूरे रायपुर शहर में लगाए गए। विज्ञापन में यह दावा किया गया कि ऐसे तमाम रोग जिसमें चिकित्सा विज्ञान नाकाम हो गया है। उन्हें इन दो दिवस के समागम में ठीक किया जाएगा। इस विज्ञापन में बहुत सारे लाभार्थियों के फोटो सहित इंटरव्यू थे और केंद्रीय मंत्री समेत स्थानीय मंत्री एवं सेलिब्रिटी, फिल्म अभिनेता के साथ आर्शीवाद लेते हुए उस बाबा की तस्वीर थी। मैं बड़ा ही हैरान था कि क्या धर्म प्रचार या किसी समागम में बुलाने के लिए इस प्रकार महंगे एवं लुभावने विज्ञापन प्रकाशित किया जाना सही है ?

दरअसल यह विज्ञापन सिर्फ अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाला नहीं है। इस विज्ञापन के जरिए चिकित्सा जगत को चुनौती भी दी जा रही है, लेकिन इस विज्ञापन पर किसी भी डॉक्टर ने आपत्ति दर्ज नहीं कराई, न ही किसी प्रकार विरोध किया। डॉक्टरों की एसोसिएशन ने मानो चुप्पी साध रखी थी। सिवाए कुछेक डॉक्टरों के जिन्होंने सोशल मीडिया पर इसकी चर्चा की। दरअसल हम अक्सर अपनी शिक्षा प्रणाली को दोष देते रहते हैं और अपनी अयोग्यता का क्रेडिट इसी प्रणाली के सिर पर मढ़ देते हैं, जबकि समस्या कहीं और है। डॉक्टर को आपत्ति के मद्देनजर यह कहा जा सकता है कि उन्होंने विज्ञापन नही देखा होगा या वे इन बातों से वाकिफ नहीं होंगे, लेकिन यह बात गलत है आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि शहर में आयोजित इस कार्यक्रम में बहुत सारे सरकारी कर्मचारी-अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर, आईएएस, मंत्री नेता पहुंचे हुए थे। जाहिर है उनका वहां पहुंचने का मकसद विज्ञापन के अनुरूप ही रहा होगा।

यह सही है कि इस प्रकार अंधविश्वास को बढ़ाते हुए विज्ञान को चुनौती देना गलत है। लेकिन यह बताना जरूरी है कि देश के तमाम इंजीनियर और डॉक्टर प्रतिदिन किस प्रकार विज्ञापन को चुनौती देते हैं। एक बार शहर के एक नामी गैस्ट्रोलाजी (विभाग का नाम बदला हुआ है) डाक्टर के पास जाना हुआ। इस डॉक्टर के पास अपाएंटमैंट लेने के लिए 15 दिन पहले कॉल करना पड़ता है और परामर्श फीस 600 रुपए के साथ दिनभर का इंतजार जरूरी है, लेकिन उनके मरीजों की संख्या काफी है। इसमें कोई शक नहीं कि वे बहुत ही बेहतर इलाज करते हैं, लेकिन जब उनके क्लीनिक रूम पर नजर पड़ी तो मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनकी टेबल पर व्यवसाय बढ़ाने हेतु तमाम अंधविश्वास की वस्तुएं रखी हुई थी। जैसे पानी में डूबा हुआ कछुआ, ताबिज, नींबू मिर्च और डाक्टर के हाथों में बहुरंगी अंगूठियां। देश में वे अकेले डाक्टर नहीं हैं, जो इस प्रकार विज्ञापन पर कम अंधविश्वास पर ज्यादा भरोसा करते हैं, बल्कि यूं कहें कि ज्यादा संख्या में ऐसे ही डॉक्टर आप को मिलेंगे, जहां कहीं न कहीं अंधविश्वास, टोने-टोटके का दामन थामे हुए हैं।

इसी प्रकार एक नामी गिरामी आर्किटेक्ट इंजीनियर के घर के सामने अजीब डिजाईन का पत्थर पड़ा हुआ था। मैंने कहा कि इस खूबसूरत घर में आपने इस बदरंग पत्थर को क्यूं रखा है। उन्होंने बताया कि यह क्रिस्टल पत्थर है। इसे घर के सामने रखने से मेरी आय में बढ़ौतरी होगी ऐसा किसी आईआईटी के दोस्त ने बताया। फिर मैंने उनके निवास पर तमाम ऐसी अवैज्ञानिक अंधविश्वास से भरी वस्तुएं देखी। जिससे मुझे उनकी शिक्षा पर संदेह होने लगा। जाहिर है कि उन्हें भी अपने हूनर पर कम, टोटके पर ज्यादा विश्वास है। राजस्थान भरतपुर के पूर्व सरकारी डाक्टर ने तो बकायदा एक मरीज को दवाई देने के साथ-साथ प्रिस्क्रप्सन में टोने-टोटके करने की सलाह दी, जो सोशल मीडिया में काफी चर्चित भी रहा।

क्या हम ऐसे डॉक्टर इंजीनियर से यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे अंधविश्वास के खिलाफ खड़े हो सकेंगे, उनका प्रतिरोध कर सकेंगे? उन शासकीय कर्मचारियों-अधिकारियों को जिन देश का क्रीम समझा जाता है। जो कम्पीटीशन पास करके सरकारी सेवा में आते हैं। क्या हम उनसे अपेक्षा कर सकेंगे कि वह ऐसी अंधविश्वास का विरोध करेंगे? या हम उन मंत्रियों, नेताओं से अपेक्षा करेंगे जो सारी दुनिया घूमते हैं, जिनकी यह जिम्मेदारी है कि देश को अंध ाविश्वास से मुक्त कराएं?

आज देश में चुनौती वह बाबा और अंधविश्वास फैलाने वाले व्यवसायी नहीं हैं। आज विज्ञान के लिए सबसे बड़ी चुनौती है खुद हमारे डॉक्टर इंजीनियर वकील शासकीय कर्मचारी अधिकारी मंत्री नेता और वैज्ञानिक। हमारी शिक्षा प्रणाली को धम्र से अलग करना होगा और अंधविश्वास पर एक खास चैप्टर रखना पड़ेगा ताकि अंधविश्वास और विज्ञान का घालमेल ना हो सके। यह विचार करना होगा कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 100 विश्वविद्यालयों में हमारा एक भी विश्वविद्यालय शामिल क्यों नहीं हो पाया?

बावजूद इसके इस पहलू का सकारात्मक तथ्य यह है कि तमाम डॉक्टर इंजीनियर समेत कई लोग ऐसे हैं, जो ऐसे अंधविश्वास, टोने-टोटके का विरोध करते हैं और लोगों को जागरूक करने का काम कर रहे हैं, लेकिन ऐसे लोगों की संख्या कम है। बावजूद इसके वे एक आशा की किरण बने हुए हैं।०००

डायन बताकर हर माह हो रही एक निर्दोष महिला की हत्या

जागरण विशेष मोतकी, चाईबासा (पश्चिम सिंहभूम)

यकीन नहीं होता, पर यह तस्वीर आज के भारत की है। किसी निर्दोष महिला को डायन बता भीड़ द्वारा पीट-पीट कर मार दिया जाता है। यही नहीं, उसे मैला खिलाना, मुंडन कर और निर्वस्त्र कर गांव में घुमाना, भीड़ की शक्ल में बेइंतहा पीटना, पेड़ से बांधकर लाठियां बरसाना, तब तक जब तक वह दम न तोड़ दे, ऐसा खौफनाक मंजर जिसकी सभ्य समाज में कल्पना भी न की जा सके, आए दिन सामने आता है। यह अंधविश्वास नहीं, बल्कि अंधविश्वास की आड़ लेकर डायन बता किसी महिला से निजी दुश्मनी निकालने का क्रूरतम कृत्य है। बावजूद इसके, इसे लेकर देश और समाज संवेदनशील और खामोश बना रहा है। 2016में प्रयास हुआ, लेकिन देशव्यापी कठोर कानून नहीं बन सका। झारखंड, बिहार, प. बंगाल, असम, राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में ऐसी घटनाओं पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। ग्रामीण इलाकों में ज्यादातर गरीब, मजबूर व विधवा महिलाएं इसका शिकार हो रही हैं। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले की ही बात करें तो यहां गत पांच वर्षो में इस तरह की वीभत्स घटनाओं की संख्या बढ़ी है। इस साल ही अब तक चार माह में चार हत्याएं हो चुकी हैं।

एक जिले का हाल-प. सिंहभूम जिले के गांव-कस्बे महिला को डायन बता प्रताड़ित करने के लिए कुख्यात हो चुके हैं। आए दिन यहां भूमि व सम्पति हड़पने, शराबखोरी और स्त्रियों से दुष्कर्म के लिए उन्हें डायन घोषित कर मार दिया जाता है। पुलिस आंकड़ों के मुताबिक हर माह यहां एक महिला की हत्या इस कारण हो रही है। डायन के नाम पर ज्यादातर गरीब, मजबूर व विधवा को शिकार बनना पड़ता है। पुलिस रिकार्ड के अनुसार वर्ष 2017 में दस महिलाओं की हत्या डायन का आरोप लगाकर कर दी गई। जबकि हत्या के कई मामले तो पुलिस थानों में दर्ज ही नहीं हो पाते हैं। पिछले पांच वर्षो की रिपोर्ट देखने पर पता चलता है कि जिले में 37 महिलाओं की हत्या डायन के नाम पर की जाती चुकी है। टोंटो, खंटपानी, गोईलकेरा, मनोहरपुर, गुदड़ी और बचगांव समेत कई अन्य क्षेत्र इस दायरे में शामिल हैं। चिंता की बात है कि झारखंड में हर साल यह आंकड़ा बढ़ रहा है। बावजूद इसके कि प्रशासन और सामाजिक संस्थाएं लगातार जागरूकता अभियान चला रहे हैं। घटनाए थम नहीं रही हैं।

अम्बाला, दिल्ली, मुंबई आश्रम में साध्वियों से होता रहा गैंगरेप

संत कुटीर आश्रम बस्ती में यौन शोषण का मामला, पीड़ित का बयान दर्ज

अमर उजाला ब्यूरो

बस्ती। संत कुटीर आश्रम में यौन शोषण मामले में वीरवार को पीड़िताओं का मेडिकल परीक्षण करवाया गया। गैंगरेप की शिकार दोनों महिलाओं के कोर्ट में बयान भी दर्ज कराए गए, जिनकी शिकायत पर पुलिस ने मुकद्दमा दर्ज किया है। पीड़िताओं ने आरोप लगाया है कि उन्हें अम्बाला, मुंबई के आश्रमों में लेजाकर भी उनका यौन शोषण किया गया। उधर, पुलिस ने आश्रम से जुड़े लालगंज थाना क्षेत्र के सेल्हरा में भी दबिश दी, लेकिन वहां कुछ हासिल नहीं हो सका।

तीसरी पीड़िता भी वीरवार को कचहरी पहुंची, जिसका मुंबई के आश्रम में बंधक बनाकर कई दिनों तक रेप का आरोप है। एसपी संकल्प शर्मा का कहना है कि मुख्य आरोपी सच्चिदानंद उर्फ दयानंद और उसके शागिर्दो की गिरफ्तारी के लिए तीन टीमें गठित की गई हैं, जो लगातार दबिश दे रही हैं। संत कुटीर आश्रम से साध्वियों को कभी अंबाला, कभी मुंबई तो कभी दिल्ली के आश्रम में सत्संग के लिए भेजा जाता है। जहां उनका यौन शोषण होता था। उन्हें आश्रम के सदस्य और उनके खास मेहमानों के सामने पेश किया जाता था। मुंह खोलने पर परिवार वालों को जान से मारने की धमकी दी जाती थी।

बाबाओं के कारनामे

भूत भगाने के नाम पर किया बेटी से दुष्कर्म

बठिंडा, 9 मार्च (विजय) : बठिंडा के बंगी नगर में एक ऐसा मामला सामने आया। एक कलयुगी बाप जो सिर पर जटाएं रखकर साधू के भेस में रहता था। परंतु यह ढोंगी साधू हवस में इस कदर अंधा हो गया कि भूत भगाने के नाम पर अपनी बेटी से दो सालों से दुष्कर्म करता रहा। पीड़िता के मुताबिक कलियुगी बाप चरस के नशे में पिछले दो साल से डरा-धमका कर उसके साथ दुष्कर्म करता आ रहा था। अब उसकी हरकतें बर्दाश्त से बाहर हो गई। पीड़िता की बहन व भाई ने लोगों के साथ मिलकर अपने पिता की काली करतूत का भांडा फोड़ कर दिया। वहीं उक्त मामला सामने आने के बाद थाना कैनाल कालोनी पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करके गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपी को वीरवार को अदालत में पेश करेगी। मिली जानकारी के अनुसार बठिंडा के बंगी नगर वासी आरोपी अमरनाथ उर्फ भूतनाथ उर्फ भूतना है। कुछ साल पहले अपने परिवार के साथ गिदड़बाहा में रहता था। परिवार में उसकी पत्नी के अलावा तीन बेटियां व एक बेटा था। दो बेटियों की शादी हो चुकी है। दो साल पहले भूतनाथ की पत्नी का देहांत हो गया। उस समय पीड़िता 13 साल की थी। उसका साधु का भेस देख लोग भी उसके पास दड़े-सट्टेका नंबर लेने के लालच में आते थे। बता दें कि पत्नी के मरने के बाद उसके मन में हवस की आग लगी। उसने अपनी अय्याशी पूरी करने के लिए मासूम बच्ची को निशाना बना यह कह कर डराना शुरू कर दिया कि उसके सिर पर भूत का साया है। आरोपी भूत भगाने के नाम पर उसके साथ दुष्कर्म करने लगा। नाबालिगा से कहता कि ऐसा करने से भूत उसके शरीर से हमेशा के लिए भाग जाएगा।विरोध

करने पर नाबालिक बेटी को लेकर वहां से रातों रात गायब हो गया। उसकी दोनों बेटियां, दामाद व बेटा उसकी तलाश करते रहे। मगर वो नहीं मिला। मंगलवार पीड़िता की बहनों को पता चला कि उनका पिता छोटी बेटी के साथ बठिंडा के बंगी नगर में रहता है। इस दौरान पहुंच उनके द्वारा समाज सेवक व कांग्रेस के नेता हरिओम ठाकुर और जसविंदर सिंह के सामने सारी अपनी आप बीती सुनाई। लोगों ने मामले की गंभीरता को देखते हुए थाना कैनाल कालोनी पुलिस को मामले की शिकायत दी। शिकायत की भनक लगते ही आरोपी फरार हो गया, लेकिन कुछ समय बाद पुलिस ने उसको धर-दबोचा। पीड़िता का सिविल अस्पताला में मैडिकल करवाया गया। उसकी उम्र 15 साल बताई जा रही है। इस संबंध में कैनाल थाना एसएचओ दविन्द्र सिंह ने बताया कि शिकायत के बाद पुलिस ने पीड़िता का मैडिकल करवाया। उसके पिता के खिलाफ केस दर्ज करके उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस की ओर से पीड़ित नाबालिग को इंसाफ दिलाने का भरोसा दिया गया।

चहलां कत्लकांड में तांत्रिक का हाथ

पत्र प्रेरक : गांव चहलां में हुए तिहरे हत्याकांड में किसी तांत्रिक का हाथ होना माना जा रहा है। पुलिस ने इस मामले में लुधियाना के एक तांत्रिक को उसके कुछ साथियों के साथ गिरफ्तार किया है। सूत्रों से पता लगा है कि मृतक परिवार सदस्य भी अपने वहमों-भ्रमों में तांत्रिक के पास जाते थे। एसएसपी नवजोत सिंह माहल इसका खुलासा बहुत जल्द प्रैस कांफ्रेंस में कर सकते हैं। डीएसपी हरसिमरत सिंह छेतरा ने कहा कि काफी हद तक पुलिस कातिलों के नजदीक पहुंच चुकी है। गांव मीरपुर वासी सुखदेव सिंह, उसकी पत्नी गुरमीत कौर और बेटे हरजोत सिंह का होली वाले दिन से पहली रात को अज्ञात लोगों ने बेरहमी से कत्ल कर दिया था। जिस ढंग से अलग-अलग कमरों में पहले जमीन पर कंबल व चादरें बिछाकर परिवार के तीनों सदस्यों को जमीन पर लिटाया गया था, तो पुलिस को पहली ही नजर में शक हो गया था कि मामला वहमो-भरमों से जुड़ा हुआ लगता है।

तर्कशील हलचल

कैथल में मनोरोगियों के लिए लगाया कैंप

(अंधविश्वास मनोरोग का मुख्य कारण)

दिनांक 11 मार्च 2018 को तर्कशील कार्यालय नजदीक गुलमोहर सिटी बाई पास जींद रोड़ कैथल में कृष्ण राजौंद जिला प्रधान तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अध्यक्षता में मनोरोगियों का कैम्प लगाया गया जिसमे लोगों को तर्कशीलता के बारे में जागरूक किया गया और लोगों को बताया गया के गंभीर मनोरोग होने पर मनोरोग विशेषज्ञों की राय लें। और तथा कथित भूत प्रेत जिन ओपरा-पराया लोगों के घरों में गिरते ईट पत्थर खून के छींटे आदि घरों में आग लगने, मनोरोग से ग्रस्त लोगों द्वारा सिर घूमना या ऊट पटांग की बातें करना । इस तरह के रोगियों को तर्कशीलों द्वारा समाधान करने के बारे में जानकारी दी जिसमे प्रदेश के भिन्न भिन्न कोनों में तर्कशीलों साथी फरियाद सिंह सनियाना, मास्टर बलवंत सिंह, अजायब जलालआना, मास्टर राजाराम हंडियाया, भाई राजेश पेगा द्वारा किये जा रहे अंधविश्वास ओर पाखंड के खिलाफ किये गए सराहनीय कार्यो के बारे में जानकारी दी गई। कैम्प में पाखंडियों द्वारा दिये गए धागे ताबीजों को उतरवाया गया। ओर अंध ाविश्वास छोड़ वैज्ञानिक सोच लाने पर बल दिया गया । लोगों में आत्मविश्वास बढ़ाने के बारे में जानकारी दी गयी। साथ ही बताया गया कि जब आपके अंदर आत्मविश्वास आ जायेगा तथाकथित भूत प्रेत आपका कुछ भी नही बिगाड़ पाएंगे

------ कृष्ण लाल राजौंद (कैथल)

प्रश्नः जानवर बुद्धिमान है या इंसान?
उत्तरः पता नहीं। मगर बिल्ली के सामने मिट्टी का चूहा रख दो, वो उसका शिकार नहीं करेगी। मगर इंसान मिट्टी की मूर्ति के सामने अपनी खुशी की भीख मांगता है।

-व्हाट्सएप ग्रुप से

अंधविश्वास के चलते

लड़की ने मां दुर्गा को भेंट चढ़ाने के लिए अपनी दोनों आंखें निकाल ली

दरभंगा। बिहार के दरभंगा जिले में एक लड़की ने मां दुर्गा के प्रति अपनी भक्ति को दर्शाने के लिए सभी हदें पार कर दी। लड़की ने नवरात्रि के मौके पर मां दुर्गा को भेंट चढ़ाने के लिए अपनी दोनों आंखें निकाल लीं। जानकारी के अनुसार, यह घटना जिले के बहेड़ी थाना अंतर्गत सिरुआ गांव की है। शनिवार की सुबह दुर्गा पूजा के दौरान लोग मंदिर के आंगन में पूजा करने पहुंचे थे। इसी दौरान कोमल कुमारी नाम की लड़की ने देवी की चौखट पर बैठ कर अपनी उंगलियों के जरिए अपनी दोनों आंख निकाल ली।

यह नजारा कुछ लोगों ने अपनी आंखों से देखा, लेकिन जब तक वह कुछ समझ पाते लड़की ने अपनी आंखें निकाल ली थी और वह आंखों को मां दुर्गा को भेंट चढ़ाने लगी थी। इसी बीच पूजा कमिटी के लोगों ने उसे रोक लिया। इस घटना के बाद लड़की बेहोश हो गई। डॉक्टरों का कहना है कि आंखों को अपनी जगह लगा दिया गया है लेकिन कोमल कुमारी अपनी आंखों से अब कभी देख नहीं पाएगी।The khabrilal-com

तंत्र-मंत्र के फेर में बुजुर्ग महिला की हत्या

संवाद सहयोगी। फर्रूखनगर (गुरुग्राम)। तंत्र-मंत्र के चक्र में फंसकर अज्ञात बदमाशों ने गांव हाजीपुर पातली निवासी बाला देवी (62) की गला दबाकर हत्या कर दी। मंगलवार रात महिला खेतों में बने मकान से बाहर सोयी हुई थी। बुधवार सुबह 5 बजे जब उनका बेटा व बहू पशुओं को चारा देने और दूध निकालने पहुंचे, तो वह चारपाई से 20 मीटर दूर जमीन पर मृत पड़ी थी। शव के पास से अगरबत्ती और कपूर, लौंग, उड़द की दाल, सिंदूर और शराब की बोतल मिली है। फर्रूख नगर थाना प्रभारी टीम के साथ पहुंचे और जांच शुरू कर दी। पुलिस को दिए बयान में बाला देवी के पति चंद्ररूप ने बताया कि उन्होंने खेत में ही मकान बनाया हुआ है, जहां परिवार के सभी सदस्य रहते हैं। मंगलवार रात को उनकी पत्नी बाला देवी पशुओं की निगरानी के लिए घर के बाहर सो रही थी, जबकि बाकी लोग घर के अंदर सो रहे थे।

पंडित जी ने कष्ट दूर करने के नाम पर हड़पे 15 लाख रुपए

सिरसा :घर में चल रही परेशानियों की बात सुनकर एक व्यक्ति को पाखंड दिखाकर पाखंडी पंडित ने लाखों रुपए हड़प लिए। घर में देवी-देवताओं की नाराजगी दिखाकर पीड़ित से पंडित पैसे ऐंठता रहा। पंडित की मांग पूरी करने के लिए व्यक्ति ने ब्याज पर पैसे तक लिए। पंडित की हरकतों पर शक होने पर पीड़ित ने पैसे देने से इंकार कर दिया और उसके खिलाफ सदर थाना सिरसा में शिकायत दी।

नेजाडेलाकलां निवासी गुरचेत सिंह ने बताया कि उसके घर में परेशानी चल रही थी। इस कारण उसका पिता जगजीत सिंह गांव के ही एक तथाकथित पंडित से मिला। पंडित ने बताया कि तुम्हारे परिवार से गुरुनानक देव और गुरु गोविंद सिंह महाराज नाराज हैं, जो बार-बार कष्ट देते हैं। परिवार को बचाने के लिए अगर उपाय नहीं किया, तो आपके परिवार की मृत्यु हो जाएगी। इसके बाद वह गुरचेत सिंह के पिता जगजीत सिंह से उपाय के नाम पर पैसे ऐंठता और दो-तीन सालों में 14-15 लाख रुपए ऐंठ लिए। सोमवार को विभिन्न गांवों के प्रमुख लोग भी थाना पहुंचे और पंडित के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग करते हुए ऐंठी गई राशि को वापस दिलाने की गुहार लगाई। इस मौके पर सरपंच जोगा सिंह, सरपंच गुरप्रीत सिंह, सरपंच प्रतिनिधि बूटा सिंह बाजीगर, पूर्व सरपंच कश्मीर सिंह, महेन्द्र सिंह, सांझा सिंह, बचेतर सिंह, शमशेर सिंह, कश्मीर चंद, सुखचैन सिंह, दिलराज सिंह भी मौजूद रहे।

स्वास्थ्य

क्यों बढ़ रहे हैं हृदय रोग

हमारे देश में हृदय रोगियों की संख्या हर साल बढ़ती जा रही है। क्यों बढ़े रहे हैं, आओ, जरा इसके कारण जानेंः

1 हृदय की रक्तवाहिनी नलिकाओं मे चर्बी का जमाव बचपन से ही प्रारंभ हो जाता और धीरे-धीरे बढ़ता रहता है। जब वह जमाव अधिक हो जाता हैं तो एंजाइना का दर्द या हार्ट-अटैक हो सकता है। हमारे भोजन में वसा की मात्रा बढ़ती जा रही है। आधुनिक जीवन की दौड़ के साथ फास्ट-फूड का शौक भी बहुत बढ़ चुका है। अधिकतर फास्ट-फूड संतृप्त वसा से भरपूर होते हैं।

2. विशेषज्ञों के अनुसार यह सिद्ध हो चुका कि दक्षिण एशियाई देशों में हृदय रोग होने की संभावना अधिक रहती है।

3. हृदय रोग के लक्षणों के संबंध में जानकारी न होना भी इन रोगों के बढ़ने का एक कारण हैं। साधारण से रूटीन टेस्ट जेसे रक्त शर्करा, कोलैस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड आदि की जांच से हृदय रोग की संभावना का पता लगाया जा सकता है। हैरानी तो यह है कि बहुत से पढ़े लिखे लोग भी रक्तचाप नपवाने की आवश्यकता भी नहीं समझते।

4. आधुनिक जीवन शैली भी बढ़ते हृदय रोग का एक बहुत बड़ा कारण है। शारीरिक श्रम की कमी और शहरी जीवन की बढ़ती समस्याओं ने मनुष्य के तनाव को बहुत बढ़ा दिया हैं । कई बार तनाव के कारण हमारे रक्तचाप और कोलैस्टॉल के स्तर में वृद्धि हो सकती है।

मोटापा और मुधुमेह हृदय रोग के लिए खतरनाक कारक है। हम उचित खान पान, हल्का शारीरिक श्रम, सक्रिय जीवनशैली और तनाव रहित रहने की आदत से हृदय रोग से काफी हद तक बच सकते हैं।

वर्चुअल रियलिटी से किया
अवसाद का उपचार

न्यूयार्क टाइम्स न्यूज सर्विस-सैन फ्रांसिस्को। किसी बड़े हादसे के बाद अक्सर इलाज हो जाने पर रोगी दर्द भरी यादों के कारण दोबारा वाहन चलाते वक्त या सड़क पर यातायात को देखकर बुरी तरह डरने लगता है। ऐसे में उसके मस्तिष्क की सामान्य गतिविधियां बिगड़ जाती हैं, लेकिन अमेरिका की एक मनोवैज्ञानिक ने रोगियों को इस अवसाद से निकालने के लिए पहली बार वर्चुअल रियलिटी की तकनीक का इस्तेमाल करते हुए 'एक्सपोजर थैरेपी' दी। उपचार की इस नई विधि से रोगियों में बेहद तेजी से सुधार हुआ और वे जल्द ही सामान्य हो गए।

डा. डॉन ज्वैल ने भीषण कार हादसे के बाद ऐसे दो रोगियों का हाल ही में उपचार किया और इस नई तकनीक का इस्तेमाल किया। इसे 'एक्सपोजर थैरेपी' का नाम देते हुए उन्होंने रोगी को वर्चुअल रियलिटी से भावुक दिशानिर्देश देकर वैसा ही माहौल खड़ा किया जैसा हादसे के वक्त था। इस दौरान डाक्टर अपने रोगी को सशरीर हादसे वाले स्थान पर नहीं ले जाता है। डा. ज्वैल ने बताया कि इस दौरान रोगी को सुरक्षित महसूस कराया जाता है। हम दोनों वर्चुअल रियलिटी द्वारा उसी लोकेशन पर जाते हैं जहां हादसा हुआ था और वह महसूस करता है कि कहां क्या गड़बड़ी हुई थी। इसके लिए गूगल के एक और प्रोडक्ट 'स्ट्रीट व्यू' का सहारा लिया जाता है। इसके द्वारा डाटाबेस से कई तरह की तस्वीरें निकालकर सड़क और स्थान की आभासी दुनिया खड़ी की जाती है। इसके बाद वर्चुअल स्ट्रीट दृश्य खड़ा किया जाता है और रोगी को उस लोकेशन पर ले जाकर मनोवैज्ञानिक उपचार किया जाता है। डा. ज्वैल पहली मनोवैज्ञानिक हैं, जिन्होंने सिलिकॉन वैली में 'लिम्बिक्स' नाम से स्टार्ट-अप खड़ा किया है। इसमें दिवास्वप्न दृश्य तैयार कर स्मार्टफोन के साथ गूगल हेडसेट पर काम किया जाता है। -अमर उजाला 2अगस्त 2017 ✶

खोज खबर

गूगल का ज्यादा प्रयोग बना सकता है डिर्मेंशिया का मरीज

लंदन, प्रेट्र : पहले लोग किसी जानकारी के लिए डिक्शनरी या किताबों की मदद लेते थे, लेकिन सर्च इंजन गूगल के आने के बाद पूरी तरह उस पर ही आश्रित हो गए हैं। देश-विदेश, फिल्म, साहित्य या विज्ञान से जुड़ी किसी भी जानकारी के लिए दिमाग पर जोर डालने के बजाए लोग अब गूगल की शरण लेते हैं, लेकिन शोधकर्त्ताओं ने आगाह किया है कि गूगल का ज्यादा इस्तेमाल हमारी स्मरण शक्ति को कमजोर कर डिमेंशिया का मरीज बना सकता है।

ब्रिटेन की सेंट एंड्रयूज यूनिवर्सिटी के फ्रेंक गन मूर कहते हैं, 'मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है कि उसका अधिक से अधिक इस्तेमाल हों लेकिन गूगल का प्रयोग कर हम अपने शरीर पर ही प्रयोग कर रहे हैं।' बढ़ती उम्र के साथ इंसान की याददाश्त कमजोर होने लगती है। याददाश्त कमजोर होने पीछे आसपास का वातावरण, चिंता या अन्य आनुवांशिक कारण भी जिम्मेदार हो सकता है। लेकिन शोधकर्ताओं के अनुसार इन कारणों की सूची में जल्द ही गूगल भी जुड़ सकता है। ✶

नई जांच शीघ्र बताएगी विटामिन ए की कमी

एक भारतीय समेत वैज्ञानिकों के दल ने रक्त की जांच की नई विधि विकसित की है। कम लागत वाली इस जांच से महज 15 मिनट में ही शरीर में विटामिन ए ओर आयरन की कमी का पता चल सकता है। शोध ाकर्ताओं के अनुसार, लंच बाक्स के आकार के इस पोर्टेबल डाइग्नोस्अिक सिस्टम में डायबिटीज की जांच में इस्तेमाल होने वाली स्ट्रिप सरीखी एक ब्लड सैंपल टेस्अ स्ट्रिप रहती है।

अमेरिका की कार्नेल यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर सौरभ मेहता ने कहा, 'विटामिन ए और आयरन की कमी से दुनियाभर की एक तिहाई से ज्यादा आबादी प्रभावित है। इनकी कमी के चलते खासतौर से बच्चों और महिलाओं में दृष्टिहीनता, एनीमिया और असमय मौत का खतरा रहता है। ज्यादा विकासशील देशों में इस तरह के उन्नत उपकरणों का अभाव है, जिससे इन कमियों का झटपट पता लगाया जा सके।' विश्व संगठन के अनुसार, दुनियाभर में करीब 25 करो बच्चे विटामिन ए की कमी से पीड़ित हैं। ✶

हर वक्त पैर हिलाने से हो सकती है दिल की बीमारी

अगर आपको बैठे या लेटे हुए पैर हिलाने की आदत तो सचेत हो जाएं। ये रेस्टलेस सिंड्रोम के लक्षण हो सकते हैं। इसका कारण शरीर में आयरन की कमी है। यह समस्या दुनियाभर के 10 फीसदी लोगों को होती है। ज्यादातर 35 साल से ज्यादा उम्र के व्यक्तियों को यह समस्या होती है। शोधकर्ताओं का यह स्पष्ट कहना है कि लगातार पैर हिलाने से दिल का दौरा पड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

क्या है रेस्टलेस सिंड्रोम-यह नर्वस सिस्टम से जुड़ा रोग है। पैर हिलाने पर व्यक्ति में डोपामाइन हॉर्मोन रिलीज होने के कारण उसे ऐसा बार-बार करने का मन करता है। इसे स्लीप डिसऑर्डर भी कहते हैं। नींद पूरी न होने पर इंसान थका हुआ महसूस करता है। जांच लक्षणों के आधार पर ब्लड टैस्ट किया जाता है। नींद न आने की दिक्कत बढ़ने पर पॉलिसोमनोग्राफी भी करवाकर इसकी पुष्टि की जाती है। इस जांच से नींद न आने के कारणों का पता चलताहै। हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. संतोष कुमार की मानें तो यह बहुत ज्यादा पैर हिलाना भी बीमारी का लक्षण है। जिसे लोग सामान्य मानते हैं। थोड़ा ध्यान देकर इस बीमारी से बचा जा सकता है।

बीमारी की वजह-यह रोग शरीर में मूलतः आयरन की कमी के कारण होता है। इसके अलावा किडनी, पाकिर्संस से पीड़ित मरीजों व गर्भवती महिलाओं में डिलीवरी के अंतिम दिनों में हॉर्मोनल बदलाव के कारण भी हो सकता है।०००

बच्चों का कोना

क्या चांद अपनी धुरी पर घूमता है?

आप इस बात से वाकिफ़ तो होंगे ही कि हमें हमेशा चांद का एक ही चेहरा (सतह) दिखता है। इस पर से क्या आप जान सकते हैं कि चांद अपनी धुरी पर घूमता है या नही?

इस तरह से करें:

सबसे पहले धुरी पर घूमना घूर्णन शब्द को समझ लें। अपनी जगह पर खड़े होकर एड़ी पर फिरकनी की तरह एक पूरा चक्कर लगायें। यही धुरी पर घूमना या घूर्णन कहते हैं। गौर करें, धुरी पर घूमते समय आपका चेहरा सभी दिशाओं में घूमता है।

अब जमीन पर एक बड़ा सा गोल बना लें। गोल के केंद्र में अपने दोस्त को खड़ा कर दें। उसे आप 'पृथ्वी' मान लें। आप वृत्त की परिधि पर खड़े हो जाएं, आप हैं :चांद'।

अब चादं(आप) को धरती (दोस्त) का एक चक्कर लगाना है। और यह ध्यान रखना है कि चांद का चेहरा धरती की ओर ही रहे। घेरे पर चलते हुए एक पूरी परिक्रमा कर लें और तय करें कि, परिक्रमा के दौरान आप अपनी धुरी पर घूमें हैं या नहीं? इसके लिए आपको यह देखना हो गा कि आपका चेहरा हर दिशा में घूमा था या नहीं।

इसी तरह चांद भी अपनी कक्षा में परिभ्रमण के दौरान अपनी धुरी पर घूमता है

चांद को अपनी धुरी पर एक चक्कर घूमने में उतना ही समय लगता है जितना समय उसे घरती का एक चक्कर लगाने में लगता है। इसी लिए हमें चांद का एक ही चेहर दिखता है।

तारों को चलता देखें

हमारी धरती अपनी धुरी पर लगातार पश्चिम से पूरब की ओर घूमती है। ज़ाहिर है हम सब भी उसके साथ घूम रहे हैं। इसलिए सभी आकाशीय पिंड पूरब से पश्चिम दिशा में जाते हुए दिखते हे।। हालांकि दूरस्थ तारों की आभासी काफ़ी धीमी दिखती है, फिर भी आप उन्हें चलता हुआ देख सकते हैं।

इस तरह से कर:

किसी बादल रहित रात में, ऐसी खुली जगह चुनें जहां पूरब की ओर कोई ऊंची ईमारत या बड़ा पेड़ हो।

यहां खाट ऐसी जगह रख दें कि जब आप खाट पर लेटें । तब पूरब की ओर दिखने वाला कोई चमकदार तारा, इमारत या पेड़ के शीर्ष भाग के पीछे छिप जाए।

खाट पर उसी स्थिति में लेटे रहे। कुछ ही मिनिट में, छिपा हुआ तारा फिर इमारत या पेड़ों के ऊपर दिखने लगेगा।

एक बार फिर अपनी खाट इस तरह से सरकाएं कि तारा फिर छिप जाए। थोड़ी देर में तार फिर से दिखाई देने लगेगा।

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की यमुनानगर में मीटिंग सम्पन्न'

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक व जागरूकता सेमिनार का आयोजन 11 मार्च 2018 को यमुनानगर में किया गया। सभा के आयोजन में यमुनानगर इकाई के साथी रमेश, सुखदेव, बलबीर सिंह, आर. पी. गांधी, हरभजन लठा आदि ने अहम भूमिका निभाई। इस बैठक की अध्यक्षता सोसायटी प्रधान गुरमीत सिंह ने की व मंच संचालन राज्य सचिव राजेश पेगा ने किया। सभा के प्रारम्भ में आपसी परिचय के बाद रमेश व इन्द्रजीत कमल ने जादू के शो के माध्यम से वैज्ञानिक चेतना अपनाने की बात कही। जादू के इस शो में बच्चों के साथ-साथ बाकी उपस्थित लोगों ने भी आनन्द उठाया। मंच संचालन के दौरान सचिव राजेश पेगा ने सोसायटी की चुनोती व अन्य विषयों की भी जानकारी दी। बलबीर सिंह एडवोकेट ने 'अन्धविश्वास से मुक्ति कैसे' विषय पर विचार रखे। मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. मंगला ने मानसिक रोगों के प्रकार पर प्रकाश डाला और स्पष्ट किया कि रोगों का सही निदान न होने से तथा अन्धविश्वास में पड़ने से बेहद कष्ट उठाने पड़ते है।

सभा मे हरविलास, कृष्ण, सुभाष तीतरम ने भी सम्बोधन किया। मुख्य वक्ता के रुप मे प्रा. बलवन्त सिंह ने अंधविश्वास से मुक्त होने का आह्वान किया और बाबाओं के चंगुल में न फंसने की अपील की। राज्य प्रधान गुरमीत सिंह ने देश भर में चलते तर्कशील आंदोलन पर प्रकाश डाला. उन्होंने द नरेंद्र दाभोलकर, द काव्वुर, के योगदान को याद किया और लोगो को तर्कशील बन कर जीने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा अंधविश्वासी लोगों को होने वाले नुकसान बताते हुए बताया कि वैज्ञानिक चिंतन ही जीवन जीने का सही मार्ग है

रा.व.मा. विद्यालय, नाहरा-देहरा, अम्बाला में

तर्कशील कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 12-4-2018 को रा.व.मा. विद्यालय, नाहरा-देहरा, जिला अम्बाला में तर्कशील पथ के संपादक बलवंत सिंह द्वारा चमत्कारों का पर्दाफाश का एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस में जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनके रहस्यों के बारे में जानकारी दी गई।

अपनी बात रखते हुए मा. बलवंत सिंह ने तर्कशील सोसायटी द्वारा रखी गई 23 शर्तो की चुनौती एवं सासायटी के उद्देश्यों के बारे में भी जानकारी दी। साथ ही विद्यार्थियों को समझाया कि दुनिया में किसी भी व्यक्ति के पास कोई चमत्कारिक शक्ति अथवा दिव्य शक्ति नहीं होती। दुनिया में कहीं भी कोई चमत्कार नहीं होता, केवल घटनाएं घटती हैं। यदि हम उन घटनाओं के कारणों एवं रहस्यों को जान लें तो चमत्कार की हवा अपने आप ही खत्म हो जायेगी। हमें हमेशा क्या, क्यों, कब, कैसे और कहां के अनुसार ही चिंतन करना चाहिए। आज का युग विज्ञान का युग है और वैज्ञानिक विचारअपना कर ही हम अपने देश और समाज को प्रगति के पथ पर आगे ले जा सकते हैं।

स्कूल के प्रिंसीपल श्री राकेश कुमार ने इस कार्यक्रम की सराहना की और बच्चों को अंधविश्वासों से दूर रहने की सलाह दी। इस कार्यक्रम में स्कूल मे अंग्रेजी के प्राध्यापक श्री रघुबीर सिंह एवं पंजाबी अध्यापक श्री अंग्रेज सिंह ने विशेष सहयोग दिया।साथ ही बच्चों ने इस कार्यक्रम में काफी दिलचस्पी दिखाई।

★★

केस रिपोर्ट

बंद ताले में लगने वाली आग का रहस्य

बलवंत सिंह लैक्चरार

शेर सिंह अपने गांव में एक औसत दर्जेका किसान था। उसके दो लड़के और एक लड़की सभी शादीशुदा थे। दोनों लड़कों का खेत खलिहान एवं घर की रसोई का काम अलग-अलग था। उसका बड़ा लड़का कुलबीर शहर की एक प्राईवेट कम्पनी में नौकरी करता था और साथ ही अपने हिस्से में आई हुई जमीन पर खेती भी कर लेता था। छोटा लड़का राजबीर अपने पिता के साथ मिलकर अपनी खेती का कार्य ही संभालता था। शेर सिंह अपनी पत्नी समेत अपने छोटे लड़के राजबीर के साथ रहता था। उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व अपने पुराने मकानों को तुड़वाकर अपने गांव में काफी बड़ी एक कोठी बनवा ली थी। इसी दौरान उनकी लड़की का रिश्ता एक अच्छे परिवार में तय हो गया। फिर कुछ समय के पश्चात लड़की के ससुराल वालों के दबाव में उन्हें लड़की की शदी निश्चित करनी पड़ गई। कोठी बनाने पर किए गए खर्च का कर्जा अभी उतरा भी नहीं था, ऊपर से लड़की की शादी करने के लिए और कर्जा लेना पड़ गया। उन्होंने बैंक के पास कुछ जमीन गिरवी रखककर लड़की की शदी के लिए लाखों का लोन मंजूर करवा लिया और धूमधाम के साथ लड़की की शादी कर दी।

समय गुजरने के साथ दोनों बहुओं में आपसी खटपट रहने लग गई। वक्त की नजाकत को देखते हुए शेर सिंह ने परिवार की सहमति से बड़े लड़के कुलबीर सिंह को घर से अलग कर दिया। उसी कोठी में से दो कमरे कुलबीर सिंह को और दो कमरे छोटे लड़के राजबीर को दे दिए। कोठी की लॉबी एवं ड्राइंग रूम सभी के लिए सांझा रख लिया गया। एक कमरा शेर सिंह ने अपने व अपनी पत्नी के लिए रख लिया और स्वयं दोनों अपने छोटे लड़के राजबीर के साथ रहने लग गए। फिर जब घर में जमीन के बंटवारे को लेकर झगड़ा होने लगा तो शेर सिंह ने 4 एकड़ अपने पास रख लिए। उसका तर्क था कि जब तक लड़की की शादी मे लिया गया कर्ज खत्म नहीं हो जाता, तब तक यह 10 एकड़ उसके पास रहेगी, जब कर्जा उतर जाएगा तो कुलबीर को आधी जमीन बांट कर दे दी जाएगगी। वह खुद अपने छोटे लड़के राजबीर के साथ रह रहा था। अतः यह सारी जमीन छोटा लड़का राजबीर ही संभाल रहा था।

जमीन का बंटवारा होने के एक-डेढ़ साल तक तो घर में सब कुछ ठीक चलता रहा, परन्तु पिछले तीन-चार महीने से घर में अजीब सी घटनाएं घटनी शुरू हो गई। घर की दीवारों पर कभी-कभी लाल रंग के खून के छींटे गिरने शुरू हो गए। फिर कुछ दिनों के पश्चात् घर के किसी न किसी कोने में कागज पर तंत्र-मंत्र द्वारा लिखे हुए ताबीज गिरे हुए मिलने लग गए। फिर एक दिन कोठी की लॉबी में रखा हुआ राजबीर की पत्नी सुमन का एक सूट बुरी तरह कटा हुआ मिला। फिर एक दिन चारपाई पर रखे हुए कपड़ों में आग लग गई। जब घर में बार-बार ऐसी घटनाएं होने लग गई तो वे किसी बाबा के पास पुच्छा लेने के लिए चले गए। उस बाबा ने पुच्छा में बता दिया कि किसी दुश्मन ने तुम्हारे ऊपर किसी 'ओपरी पराई चीज' का वार करवाया हुआ है। यह ओपरी पराई चीज ही ये सभी वारदातें कर रही है। इन चीजों से छुटकारा दिलाने के नाम पर उसने उन्हेंघर में छिड़कने के लिए 'पवित्र जल' दे दिया और मोटी 'दक्षिणा' लेकर उन्हें वापिस भेज दिया। अभी 'पवित्र जल' छिड़कते हुए उन्हें 3-4 दिन ही हुए थे कि एक दिन राजबीर उसकी पत्नी सुमन तथा उसकी मां तीनों किसी जरूरी कार्य के लिए शहर गए हुए थे। जाते समय वे अपने सभी कमरों को अपने हाथ से ताला लगाकर गए थे। उनके जाने के लगभग एक घंटा बाद कुलबीर और उसकी पत्नी सलिन्द्रो ने देखा

कि सुमन के एक कमरे में से धुआं बाहर निकल रहा है, परन्तु उसके खिड़कियां दरवाजे सभी बंद हैं, कमरे को ताला लगा हुआ है तथा चाबी सुमन अपने साथ लेकर गई हुई है। उन्होंने राजबीर को फोन पर इसकी सूचना दी और कमरे की चाबी के बारे में पूछा। राजबीर ने बताया कि चाबी तो सुमन के पर्स में है। उसने उन्हें कमरे का ताला तोड़ कर आग बुझाने के लिए कह दिया। इतने मे शेर सिंह भी खेतों से वापिस घर में आ गया। शेर सिंह और कुलबीर ने मिलकर कमरे का ताला तोड़ा तो देखा कि सुमन की अलमारी में रखे हुए कपड़ों में आग लगी हुई है और अलमारी में रखे हुए सुमन के सभी कीमती कपड़े जलकर राख हो चुके हैं। कुछ देर के बाद राजबीर व सुमन शहर से वापिस आ गए। अपने कमरे में जली हुई अलमारी देखकर वे भयभीत हो गए। परिवार के सभी सदस्य एक कमरे में बैठकर इस बाबत बातचीत कर ही रहे थे कि दूसरे कमरे में बैडों पर पड़े हुए कपड़ों में आग लग गई। फिर अगले दिन उनकी सास की अलमारी में रखे कपड़ों में आग लग गई। उससे अगले दिन स्टोर में पड़ी हुई पेटी में रखे हुए कपड़ों में आग लग गई। दो दिन के पश्चात् सुमन अपने कपड़े धोकर सुखाने के लिए छत पर बांधी हुई रस्सी पर डालकर नीचे आ गई। कुछ देर के बाद देखा तो छत पर डाले हुए कपड़ों में आग लगी हुई थी। फिर एक दिन धर में कभी कहीं तो कभी कहीं पर लगातार 5-6 बार कपड़ों में आग लग गई। इसी दौरान उनके घर से उनकी अपनी-अपनी अलमारियों में से 8-10 तोला सोने के जेवर भी गायब हो गए। कई बार घर के सदस्यों के कपड़े भी कट जाते रहे। कई बार उनकी भैंसों के ऊपर खून इत्यादि आदि गिरा हुआ पाया गया।

परिवार के सदस्य अधिक भयभीत थे। इसके हल के लिए वे अनेक बाबाओं, तांत्रिकों एवं मुल्ला-मौलवियों की शरण में गए, परंतु हालात और भी अधिक खराब होते चले गए। अंत में उनका एक रिश्तेदार जो तर्कशील सोसायटी की कार्यप्रणाली से परिचित था, उन्हें लेकर मेरे पास आ गया। उनकी सारी व्यथा कथा सुनकर मैंने उनके घर जाकर सारे हालात का जायजा लेकर सारी समस्या का हल करने का निर्णय लिया।

निश्चित दिन पर उनके घर में मैंने पूरे घर का निरीक्षण किया और फिर बारी-बारी से परिवार के सभी सदस्यों के साथ विस्तार से बातचीत की। सभी के साथ बातचीत करने के बाद एक बात साफ थी कि परिवार के पुरुष सदस्य किसी भी वारदात के समय लगभग घर से बाहर ही गए हुए थे। घर की तीनों महिलाएं प्रत्येक वारदात के समय पर घर में ही मौजूद हाती थी। केवल एक बार जब सुमन अपने पति और अपनी सास के साथ शहर में गई हुई थी और अपने कमरे की चाबी अपने साथ अपने पर्स में रखकर ले गई थी और उसके बाद उसके ताला बंद कमरे की अलमारी में आग लग गई थी। यह हालात इशारा कर रहे थे कि सुमन ही दोषी है और उसी ने ही घर छोड़ने से पूर्व अपने हाथों से अलमारी में रखे कपड़ों में आग लगाई है और फिर ताला लगाकर चाबी अपने साथ लेकर शहर चली गई। आमतौर पर कपड़ों में जब आग लगा दी जाए तो वह धीरे-धीरे सुलगती रहती है तथा आग लगने के एक-डेढ़ घंटा बाद ही धुएं के अंबार से पता चल पाता है कि कहीं पर आग लगी हुई है। इस हिसाब से स्तही पड़ताल में तो सुमन ही दोषी प्रतीत हो रही थी। इसलिए मैंने सुमन से गहनता के साथ पूछ-पड़ताल की। फिर मनोवैज्ञानिक ढंग से सम्मोहन अवस्था में ले जाकर भी गहराई से जांच-पड़ताल की, परंतु सुमन ने हर मामले में अनभिज्ञता ही प्रकट की।

फिर मैंने सभी कारणों की गहराई के साथ परख-पड़ताल करनी शुरू की तो पाया कि पारिवारिक कारणों में से कोई एक भी ऐसा कारण नहीं है कि सुमन के मन पर जिसका कोई दुष्प्रभाव पड़ सकता हो अथवा जिससे उसको किसी प्रकार का कोई तनाव हो सकता हो। सुमन को आर्थिक तौर पर किसी भी प्रकार की कोई तंगी नहीं थी, पति-पत्नी में अत्यधिक प्रेम था। संतान के रूप में उनके पास एक वर्ष का एक बेटा था, सास व ससुर सुमन को बहुत सम्मान देते थे। दूसरी तरफ बड़ी बहू सलिन्द्रो की अपनी सास के साथ हमेशा खटपट रहती थी। सलिन्द्रो बात-बात पर यह भी ताना देती थी कि 'बूढ़े' ने उन्हें जमीन थोड़ी देकर उनके साथ नाइंसाफी की है। अपने

देवर राजबीर के साथ तो वह सीधे मुंह बात भी नहीं करती थी। यदि कोई सांझा मेहमान घर में आ जाए तो उसके सामने भी वह अपने सास-ससुर का अपमान कर दिया करती थी। ऐसे में स्तही पड़ताल को छोड़कर मैंने कारणों का विश्लेषण करना जब शुरू किया तो साफ हो गया कि इन सब के पीछे सलिन्द्रो का ही हाथ है और वह ईर्ष्यावश अपने सास-ससुर व देवर-देवरानी से बदला लेने की भावना से जानबूझ करती रही है।

अब ताला बंद कमरे में पड़ी अलमारी में आग लगने वाला रहस्य अभी शेष था। मैंने जब इस दिशा में सुमन से पूछताछ की तो साफ हो गया कि उस दिन शहर जाने से पहले वह कोठी से बाहर बने बाथरूम में नहाने के लिए गई थी। नहाने के बाद उसने दूसरे कमरे में जाकर अपनी शहर जाने की तैयारी की थी। जब वह अपने दूसरे कमरे में तैयार हो रही थी, तब तक सभी कमरे खुले हुए थे। इसी दौरान मौका पाकर सलिन्द्रो ने सुमन के कमरे में रखी अलमारी में आग लगा दी होगी और सुमन ने तैयार होकर बिना देखे-परखे उस कमरे का ताला लगा दिया और चाबी अपने पर्स में रखकर पति के साथ शहर चली गई। स्वाभाविक है कि आग धीरे-धीरे सुलगती रही और घंटा-डेढ़ घंटा बाद कमरे में धुएं का गुबार बन गया, जिसे जब कुलबीर ने देखा तो सलिन्द्रो ने उससे पहले ही शोर मचा दिया, ताकि उसके पति को उस पर संदेह न हो। इसी प्रकार शेष वारदातें करते समय भी वह चालाकी से वारदात करने के पश्चात् चुपचाप आकर अपनी सास अथवा अपनी देवरानी के पास आकर बैठ जाती थी और उहें अपनी बातों में लगाए रखती।

अब मामला तो साफ हो चुका था परन्तु जब मैंने दोबारा से सलिन्द्रो को बुलाकर अप्रत्यक्ष रूप से उस पर उस द्वारा अचेतन अवस्था में ये सभी वारदातें किए जाने की बात करनी चाही, तो वह एकदम से बिफर गई और मेरे साथ बातचीत करने से इन्कार कर दिया। अब मैंने समय की जरूरत को देखते हुए राजवीर, सुमन और उसकी मां को बुलाकर स्पष्ट रूप में समझा दिया कि ये सभी घटनाएं सलिन्द्रो ही जानबूझ कर तुम्हारे से बदला लेने की नीयत के साथ करती रही है। अब इसके हल का एक ही उपाय है कि अपनी अलमारियों में ताला लगाकर चाबी अपनी जेब में रखो और सलिन्द्रो की प्रत्येक गतिविधि पर पैनी नजर रखो। कपड़े धोकर जब सुखाने के लिए डालते हो तो कोई न कोई वहां आसपास मौजूद रहा करो। जब भी कहीं बाहर जाओ तो हमेशा कमरों को ताले लगाकर चाबियां अपने साथ लेकर जाया करो। मैंने उनको यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि इस समस्या का स्थाई हल चाहते हो तो अपने लिए अथवा कुलबीर के परिवार के लिए किसी अलग जगह पर नया मकान बनवा दो। उन्होंने आश्वासन दिया कि जब तक एक भाई के लिए नया मकान नहीं बन जाता, तब तक हम सलिन्द्रो की गतिविधियों पर पूरा ध्यान रखेंगे। उसके पश्चात उके घर में कभी कोई इस प्रकार की घटना नहीं घटी।०००

<u>विज्ञान का एक और कदम</u>

अमेरिका में हुआ दुनिया का पहला लिंग प्रत्यारोपण

वाशिंगटन, एफपीः अमेरिका में जॉन्स हॉपकिंस चूनिवर्सिटी के डॉक्टरों ने दुनिया में पहली बार लिंग और अंडकोष का प्रत्यारोपण किया है। करीब 14 घंटे का यह ऑपरेशन अफगानिस्तान में घायल हुए अमेरिकी जवान पर किया गया। नौ प्लास्टिक सर्जनों तथा दो यूरोलॉजी सर्जनों ने 26 र्माच को ऑपरेशन पूरा किया।

यूनिवस्टि के स्कूल ऑफ मडिसीन के प्रोफेसर एवं प्लास्टिक व रिंकस्ट्रक्टिव सर्जरी विभाग के निदेशक डब्ल्यूपी एंड्रेजव ली ने बताया, 'हमें आशा है कि इस प्रतयारोपण से जवानकी यूरिनरी तथा सेक्सुअल फंक्शन बहुत हद तक सामान्य हो जाएगा।' प्रत्योरोपण के लिए पूर्ण लिंग, अंडकोष तथा आंशिक उदर भित्ति एक मृत अंगदाता से मिला था। बयान में कहा गया है कि जवान ने अपनी पहचान उजागर नहीं करने आग्रह किया है।

राजनीति का गिरता स्तर

आर.पी. गांधी
9315446140

भारत दुनिया में सबसे बड़ा गणतंत्र वाला देश है, परन्तु यहां राजनीति का स्तर दिन-प्रतिदिन नीचे गिर रहा है। दल बदलुओं की भरमार है। राजनीतिक पार्टी जिन लोगों को गलत कहती है, जब दूसरी पार्टी में होती है, परंतु जब वही लोग दल बदली कर अपनी पार्टी में आ जाते हैं, तो वह दूध नहाये बन जाते हैं। अर्थात उनमें कोई कमी नहीं रहती है। एक नेता जिसको उसके हिसाब से पार्टी में सही स्थान नहीं मिलता, तो अपनी नई पार्टी खड़ी कर लेता है, जिससे आज देश में कितनी ही राजनीतिक पार्टियां बन चुकी हैं और हर पार्टी अपने-आप को किसान-मजदूर का हमदर्द बताती है। जबकि इसके उल्ट उनको सत्ता की भूख होती है और सत्ता को प्राप्त करने के लिए नैतिकता को ताक में रखकर बिकने के लिए तैयार रहते हैं और जनता असमंजस में होती है कि वोट किसको दें, कौन हमारा सच्चा हमदर्द है। इस तरह से जनता इन पथभ्रष्ट नेताओं के कारण अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं से वंचित कर दी जाती है। जनता के असली मुद्दों से भटका कर बेसिर -पैर के नारों से भ्रमित किया जाता है। जनता के मुख्य मुद्दे भुखमरी, बेकारी, भ्रष्टाचार, अनपढ़ता, अज्ञानता और अंधविश्वास मुद्दों से भटकाकर बेकार के नारों में उलझा लिया जाता है। जैसे कि गौमाता, कहीं गंगा माता, भारत माता और कहीं राम मंदिर और इन नारों का सहारा ले जनता में एक दूसरे के प्रति घृणा को जन्म दिया जाता है। जातपात को बढ़ावा दे आपसी झगड़े जनता को बांटने का प्रयास इन भ्रष्ट नेताओं का मुख्य कार्य है। आए दिन बड़े-बड़े घोटाले सामने आते हैं और जनता की लूट-खसूट जारी रहती है। कई प्रकार का शोषण होता है। किसानों की उपज का पूरा मूल्य नहीं मिलता, जिससे वह कर्जो में दब जाते हैं। कर्जा न चुकाने के कारण आत्महत्या के लिए विवश होते हैं लाखों किसान अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठे और नेताओं को उनके दर्द का कोई अहसास नहीं है। उनको केवल अपनी कुर्सियों की चिंता होती है और कुर्सी प्राप्ति या सत्ता प्राप्ति के लिए गिरावट के निचले पायदान तक पहुंच जाते हैं। बिहार की उदाहरण है नितिश कुमार महागठबंधन के साथ जुड़कर मुख्यमंत्री बन गया, परंतु लोगों की भावनाओं की परवाह न करते हुए जिन राजनीतिक पार्टियों के विरोध में चुनाव लड़ा, उसी के साथ गोद में जा बैठा और दुबारा मुख्यमंत्री बन सत्ता प्राप्त कर ली। टू जी घोटाला जिसका बहुत शोर-शराबा था। सत्रह नेताओं का इल्जाम लगा था। वो सभी के सभी न्यायपालिका से बरी कर दिए गए और बताया गया, यह तो घोटाला हुआ ही नहीं। इसके कारण कांग्रेस को सत्ता से हाथ धोना पड़ा और भाजपा ने सत्ता हथिया ली। झूठे वायदे राजनेताओं के द्वारा बहुत किए जाते हैं, परन्तु जनता के हाथ कुछ नहीं लगता। नतीजा वही ढाक के तीन पात।

आवश्यकता इस बात की है कि जनता जागरूक हो। इनके झूठे वायदों से छुटकारा पा कर अपने अधि ाकारों के लिए संघर्ष करते रहना पड़ेगा। कई जगह यह भी देखने में मिला कि राजनीतिक पार्टियां विरोध ाी राजनीतिक पार्टियों के कार्यकर्त्ताओं को जान तक से मरवा देती हैं। सच की आवाज उठाने वालों को बेरहमी से कत्ल कर दिया जाता है। पिछले दिनों कर्नाटक में गौरी लंकेश को घर में घुस कर गोली से मार दिया गया। केवल कसूर उसका यह था कि वह सच के हक में आवाज उठाती थी। पूना में डॉ. नरेन्द दावोलेकर जब वह सैर पर निकले तो उनको कट्टरपंथियों ने गोलियों से भून दिया। ऐसे कई साथियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा। वोट हासिल करने के लिए कई तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं। बंगाल में साइकिलें बांटी गई। उत्तर प्रदेश में लैपटाप का वितरण कई स्थानों पर नकद पैसा, शराब और मुर्गे का लालच दिया जाता है। धनराशि से वोट खरीदे जाते हैं। भाषा, जातपात के नाम पर भी वोट की खरीद फरोख्त होती है। इस तरीके से सरेआम जनवाद की नीलामी की जाती है और जनता को सही नेतृत्व नहीं मिल पाता।

चुनाव प्रक्रिया बहुत महंगी है। एक गरीब

आदमी भले वह कितना भी काबिल क्यों न हो, वह चुनाव नहीं लड़ पाता। हमें अपनी चुनाव प्रणाली में सुधार लाने की अति आवश्यकता है, ताकि लोगों को सही सरकार मिल सके जो जनता की भावनाओं का और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखे। मजदूर और किसान जो किसी भी राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी होते हैं उनके हालात सुधारने की आवश्यकता है। सरकार कोई भी हो, वह जनता को तीन बातों की गारंटी अवश्य दे।

1. स्वास्थ्य के लिए जो सभी सुविधाएं हैं, वह मिलनी चाहिएं। हर व्यक्ति को जो किसी भी तरह का रोग क्यों न हो, उसका निदान होना चाहिए।

2. सभी नागरिकों को शिक्षा प्रदान की जाए। कोई भी शिक्षा से वंचित न रहे और शिक्षा में समानता होनी चाहिए। यह नहीं होना चाहिए कि अमीर आदमी या नेताओं के बच्चे महंगे स्कूलों में पढ़ें और साधारण व्यक्तियों को शिक्षा न मिले।

3. रोजगार हर व्यक्ति को मिलना चाहिए, जिसमें लिंग मतभेद या जाति भेदभाव नहीं रहना चाहिए। तब हर व्यक्ति को रोजगार मिलेगा। आरक्षण को लेकर जो टकराव होते हैं, वह समाप्त हों जायेंगे। जब हर एक को रोजगार मिल जायेगा, तब आरक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हमें ऊंच-नीच को समाप्त कर समानता की राजनीति अपनानी होगी और देश को सही ढंग से उन्नति की ओर ले जाना चाहते हैं और अमीर-गरीब की बढ़ती हुई खाई को खत्‍ करने के लिए समानता की आवश्यकता है।

मनोरोग विशेषज्ञ की राय

डिप्रेशन की समस्या होगी दूर

डिप्रेशन को समझने के लिए हमें इस रोग के बुनियादी स्वरूप को समझना जरूरी है। जैसे कुछ समय के लिए होने वाली तनावपूर्ण स्थिति को हम डिप्रेशन नहीं कह सकते। विशेष विपरीत परिस्थितियों मे सभी लोगों को दुख या तनाव महसूस होता है, लेकिन डिप्रेशन ऐसा मनोरोग है, जिसमें पीड़ित व्यक्ति लगातार काफी समय तक अत्यधिक उदासी और नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है। यही नहीं, वह शारीरिक रूप से भी शिथिल महसूस करता है।

डिप्रेशन होने पर क्या करें

यदि आपके किसी जानने वाले को सहायता की आवश्यकता हो, तो क्या करना चाहिए? इस बारे में मरीज को यह आश्वस्त करना चाहिए कि डिप्रेशन एक ठीक होने वाली बीमारी है। यदि कोई व्यक्ति दो सप्ताह से अधिक वक्त तक दुख, चिड़चिड़ापन, निजी और सामाजिक मामलों में दिलचस्पी नहीं ले रहा है, तो उसे मदद की आवश्यकता है।

ऐसी स्थिति में आप सहायता का हाथ बढ़ा सकते हैं। ध्यान रहे कि यह सहायता निर्देशात्मक न हो। डिप्रेशन से पीड़ित व्यक्ति के आसपास रहें, उसकी बात सुनें और उसके अनुभवों के लिए उनकी आलोचना न करें। किसी मनोरोग विशेषज्ञ से मदद लेने में उनकी सहायता करें।

भारत में ९० प्रतिशत मानसिक बीमारी से पीड़ित लोग उपचार की सुविधा की पहुंच से बाहर है। ऐसा इसलिए, क्योकि देश में मानसिक बीमारी को एक कलंक की तरह देखा जाता है। मैं पागल नहीं हूं, तो फिर मैं मनोरोग विशेषज्ञ के पास क्यों जाऊं? रोगी की इस सोच को बदलने की जरूरत है।

भारत में हर तीन मिनट में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है। इससे भी ज्यादा अफसोस इस बात का है कि डिप्रेशन की बीमारी का इलाज होते हुए भी ऐसा होता है। यदि आप डिप्रेशन के साथ जी रहे हैं तो याद रखिए कि इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। मदद लेना बहादुरी का काम है। आप कुछ सप्ताह में ही डिप्रेशन के खिलाफ जंग जीत सकते हैं।

-डॉ. अचल भगत
वरिष्ठ मनोरोग विशेषज्ञ

आसाराम ही नहीं बल्कि समूचे धर्म के लुटेरे चरित्र की पहचान करो!

-लखविन्दर

(आखिर बलात्कारी बाबा आसाराम बापू को अदालत ने दोषी करार दे दिया। इस अवसर पर पढ़ें यह लेख जो आसाराम बापू के गोरखधंधे को तो उजागर करता ही है साथ ही धर्म के लुटेरे चरित्र पर भी सवाल उठाता है)

बलात्कार के मामले में आजकल जेल की हवा खा रहे आसाराम के काले कारनामों के बारे में टी.वी. चौनलों, अखबारों, मैगजीनों आदि के जरिए रोजाना नये-नये खुलासे हो रहे हैं। अधिकतर बात इस पर हो रही है कि एक सन्त होने का दावा करने वाले व्यक्ति द्वारा अपने भक्तों की श्रद्धा का नाजायज़ फायदा उठाया गया है, कि सन्त कहलाने वाले व्यक्ति द्वारा अपनी भक्तिनों के साथ बलात्कार करके डरा-धमकाकर चुप करा कर रखा जाता रहा है और उसके द्वारा बेहिसाब धन-दौलत जुटाई गई है। कहा जा रहा है कि ऐसा व्यक्ति सन्त नहीं हो सकता। पूँजीवादी मीडिया में हो रही इस विचार-चर्चा के जरिए व्यक्तिगत तौर पर आसाराम जैसे बाबाओं पर तो निशाना साधा जा रहा है लेकिन कुल मिलाकर धर्म और सन्तों के चरित्र पर पर्दा डालने की चाही-अनचाही कोशिश हो रही है। असल में धर्म और साधू-सन्त शोषणकारी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था और राजनीति से पूरी तरह घुले-मिले हुए हैं। आज जरूरत इस बात की है कि इस लुटेरे गठबन्धन की पहचान की जाए।

लोग सामाजिक-आर्थिक असुरक्षा और तार्किक व वैज्ञानिक नजरिया न होने के कारण भगवान, भूत-प्रेत, शैतान, जादू-टोने, पूजा-पाठ जैसी चीजों में विश्वास रखते हैं। विभिन्न धर्मो में इन विश्वासों के विभिन्न रूप हैं, विभिन्न रीति-रिवाज हैं। शोषक वर्ग हमेशा जनता के धार्मिक विश्वासों का फायदा उठाकर उनका आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक लूट-शोषण करते आये हैं।' धर्म कभी भी पारलौकिक चीज नहीं रहा बल्कि हमेशा से ही लौकिक रहा है। हालांकि हमेशा से ही शोषक वर्ग जनता पर हथियारबन्द ताकत के दम पर राज करते रहे हैं लेकिन मौजूदा व्यवस्था से पहले गुलाम-मालिक और खासकर सामन्ती राजे-रजवाड़े इस धार्मिक विचार से राज करने की शक्ति प्राप्त करते रहे हैं कि वे भगवान का रूप हैं या कि भगवान ने ही उन्हें राज करने के लिए, धन-दौलत के मालिक बनने के लिए और जनता से सेवा कराने के लिए उन्हें जन्मसिद्ध अधिकार दिया है। यह शोषणकारी सत्ता का दैवी कानूनीकरण था। लेकिन आज पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत ऐसा नहीं है। पूँजीपतियों के राज को धर्म के द्वारा सीधा दैवी कानूनीकरण प्राप्त नहीं है। लेकिन जैसे कि हमेशा से ही होता आया है, धर्म आज भी हुक्मरान पूँजीपति वर्ग के हाथों में राज करने का एक महत्वपूर्ण हथियार है।'

साधू, सन्तों, पादरियों, मौलवियों आदि को हमेशा से ही शोषक वर्ग इस्तेमाल करते आए हैं। इसके बदले में इन्हें भी लूट का हिस्सा प्राप्त होता आया है। जैसे-जैसे सामाजिक- आर्थिक-राजनीतिक हालात बदलते गए हैं, वैसे-वैसे धर्म भी बदलता गया है। आज पूँजीवादी व्यवस्था कायम हो चुकी है और धर्म भी पूँजीवादी धर्म बन चुका है। धर्म के प्रचारक साधू, सन्त, पादरी, मौलवी आदि भी पूँजीवादी रंग में रंग गए हैं। आम तौर पर ये प्रचारक, ये ''भगवान के भेजे हुए'', या ''भगवान का रूप'' ये सन्त-बाबा

खुद भी पूँजीपति बन चुके हैं। ये अब साधू-सन्त बाद में हैं बल्कि कारोबारी, दलाल, पूँजीपति पहले हैं।'

मुनाफा हर पूँजीपति का एकमात्र मकसद होता है। किसी भी ढंग से, भले ही कितना भी बड़ा अपराध क्यों न करना पड़े, उसे अमानवीयता की किसी भी हद तक क्यों न गिरना पड़े वह हमेशा अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की कोशिशों में लगा रहता है। हर पूँजीपति उत्पादन कराते हुए और बेचते वक्त जनता की अज्ञानता, उसके विभिन्न तरह के विश्वासों का फायदा उठाकर अधिक से अधिक मुनाफा हासिल करना चाहता है। धर्म को कारोबार के साथ जोड़कर यह काम और भी बेहतर ढंग से किया जा सकता है और किया जा रहा है। धर्म और पूँजी का मिलाप अकूत मुनाफे का स्रोत है। हमारे देश में इतने बड़ी तादाद में सन्त पूँजीपतियों के पनपने के पीछे यही कारण है।

सभी पूँजीवादी चुनावी पार्टियों के नेता इनके ''भक्त'' हैं। हर सन्त के जनाधार को हर चुनावी पार्टी अपना वोट बैंक बना लेना चाहती है। सन्त अपनी पूँजी और सामाजिक आधार के दम पर अच्छा-खासा राजनीतिक असर-रसूख हासिल कर लेते हैं। सन्तों का धर्म के नाम पर खड़ा किया गया कारोबार और पूँजीवादी राजनीति एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों एक दूसरे की सेवा करते हैं। ये सन्त अपना कारोबार बढ़ाने के लिए और अपने अपराधों को ढकने, कानूनी पचड़ों से बचने के लिए अपने सामाजिक आधार, पूँजी और राजनीतिक असर-रसूख का पूरा फायदा उठाते हैं।

आसाराम भी पूँजीपति सन्तों में से एक सन्त है। आसाराम की कुल जायदाद मीडिया खबरों के अुनसार लगभग 10 हजार करोड़ रुपए है। सन्त आसाराम बापू ट्रस्ट नाम की संस्था के कुल 425 आश्रम हैं जिनमें से कुछ विदेशों में हैं। दवाइयों, अस्पतालों, स्कूलों, किताबों, मैगजीनों आदि से तो मुनाफा आता ही है, चढ़ावा अलग से चढ़ता है। श्री श्री रविशंकर, गुरमीत राम रहीम, बाबा रामदेव आदि जैसे इन पूँजीपति सन्तों की संख्या भारत में बहुत अधिक है। सन् 2011 में ही बाबा रामदेव 1100 करोड़ रुपए धन-दौलत का मालिक था।(जो बढ़कर अब कई गुणा हो चुका है) उतराखण्ड में जहाँ बाहरी व्यक्ति 250 वर्ग मीटर से अधिक जमीन नहीं खरीद सकता वहाँ बाबा रामदेव 1700 बीघे का मालिक है। हमारा यह स्वदेशी बाबा अमेरिका के ह्यूसटन में 100 एकड़ जमीन और स्कॉटलैंड में एक टापू तक खरीद चुका है। आप देख सकते हैं कि पूँजीवादी धर्म कितना मुनाफे वाला कारोबार है।

इन सन्तों के पूँजीवादी राजनीति में असर-रसूख को भी कुछ उदाहरणों से आसानी से देखा जा सकता है। आसाराम द्वारा अकूत मुनाफे वाले आश्रमों, गुरुकुलों, स्कूलों का साम्राज्य सरकार की ओर से ग्रांट की गई जमीनों पर खड़ा किया गया है। सरकार से हासिल की गई जमीन के साथ-साथ इसने आगे भी सरकारी-गैरसरकारी जमीनों पर कब्जे जमा लिए। गुजरात सरकार ने सन् 2009 में माना था कि आसाराम के आश्रमों ने 67,099 एकड़ जमीन पर कब्जा किया हुआ है। इसी तरह के आरोप उस पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी लगे हैं। सन् 2010 में आसाराम के मठों में जब चार बच्चों की रहस्यमयी मौतें हुई थी तो वह अपने राजनीतिक असर-रसूख के दम पर जेल जाने से बच गया था। इस सम्बन्धी गुजरात सरकार की ओर से मजबूरी में जो जाँच करवाई गई थी उसकी रिपोर्ट आज तक जनता के सामने पेश नहीं की गई है। गुजरात में सरकार भले ही भाजपा की रही हो या तथाकथित धर्मनिरपेक्ष कांग्रेस की, आसाराम अघोषित ''राजगुरू'' रहा है। खासकर भाजपा के नेतृत्व की प्रांतीय सरकारें आसाराम जैसे बाबाओं का खुलेआम साथ देती और लेती रही हैं। उमा भारती जब मध्यप्रदेश की मुख्यमंत्री थी तो बाकायदा विधान सभा में आसाराम के प्रवचन करवाए गए थे। भाजपा के आडवाणी और कांग्रेस के दिग्विजय सिंह जैसे बड़े नेताओं के आसाराम से पुराने सम्बन्ध रहे हैं। अब जब आसाराम द्वारा नाबालिग लड़की से बलात्कार की घटना और अन्य काले कारनामे सरेआम बेपर्द हो गए हैं तो उसके ''भक्त'' नेता और पार्टियाँ सरेआम उसका साथ देने से किनारा कर गए हैं। उसके

अपराध के सबूत इतना स्पष्ट होना, पूँजीपति वर्ग के अंदरूनी झगड़े, मीडिया के विभिन्न हिस्सों में जबरदस्त मुकाबलेबाजी, समाज के जनवादी–क्रान्तिकारी हिस्सों द्वारा आसाराम के खिलाफ उठी आवाज आदि कारणों से आसाराम को जेल जाना पड़ा है।

अन्य सन्तों के राजनीतिक असर–रसूख के उदाहरणें भी देखिए। श्री श्री रविशंकर को आर्ट आफ लिविंग के हेडक्वार्टरों के लिए कर्नाटक सरकार ने 99 वर्षो के लिए जमीन लीज पर दी है। आर्ट आफ लिविंग ने ओडीसा सरकार की ओर से ग्रांट के तौर पर मिली 200 एकड़ जमीन पर ''प्राचीन मूल्यों से युक्त आधुनिक शिक्षा" के लिए "विश्वविद्यालय'' पिछले वर्ष शुरू किया गया है। मध्य प्रदेश में महर्षि महेश योगी को सरकार ने एक'विश्वविद्यालय' के लिए जमीन ग्रांट में दी है। बाबा रामदेव को भी विभिन्न प्रांतीय सरकारों ने जमीन दी है। नवउदारीकरण–निजीकरण के इस दौर में सरकारें जनता के स्रोत–संसाधनों को देशी–विदेशी पूँजीपतियों को सौंपती जा रही हैं। पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप के नाम पर जनता का पैसा और संसाधन पूँजीपतियों की तिजोरियाँ भरने पर लगाये जा रहे हैं। इन नीतियों का ये सन्त पूँजीपति बखूबी फायदा उठा रहे हैं।

ये सन्त घोर रूढ़िवादी, प्रति–क्रांतिकारी, फासीवादी और जनविरोधी ताकतों का एक हिस्सा हैं। आसाराम ने अपना पहला आश्रम गुजरात के अहमदाबाद में 1970 में खोला था। लेकिन उसकी प्रसिध्दि और कारोबार खासकर 1980 के बाद फले–फूले हैं। यही वह समय है जब भारत में नवउदारवाद की शुरूआत होती है और हिन्दुत्ववादी कट्टरपंथी शक्तियों तथा अन्य धार्मिक कट्टरपंथी शक्तियों का उभार होता है। आसाराम का उभार भी हिन्दुत्ववादी कट्टरपंथ के उभार का एक हिस्सा है। आसाराम आत्मसुधार के प्रवचनों के नाम पर हिन्दुत्ववादी कट्टरता और रूढ़ीवादी संस्कृति का प्रचार करता है। स्त्रियों की आजादी का यह कट्टर विरोधी है। पश्चिमी संस्कृति का अन्धा विरोध इसके प्रचार का खास अंग है। ईसाइयों और मुसलमानों के खिलाफ साधारण हिन्दु जनमानस में जहर घोलना और उनके खिलाफ हिंसक कार्रवाइयाँ तक करना इसकी संस्थाओं की सरगर्मियों का हिस्सा है। आसाराम पर बलात्कार का दोष लगने के बाद विश्व हिन्दू परिषद के अशोक सिंघल ने एक प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा कि आसाराम पर बलात्कार का दोष लगाना हिन्दु संस्कृति पर हमला है। आसाराम के चेले यह प्रचार कर रहे हैं कि बापू हिन्दु धर्म का प्रचार कर रहे थे और हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को रोक रहे थे इस लिए गैर–हिन्दु शक्तियाँ उनके खिलाफ साजिश रच रही हैं। धार्मिक कट्टरता का प्रचार, दूसरे धर्मो के लोगों के खिलाफ माहौल तैयार करना, स्त्रियों की आजादी का विरोध, पश्चिमी संस्कृति का अंधा विरोध आदि बातें कम–ज्यादा रूप में सभी सन्तों में साझी हैं। ये घोर रूढ़ीवादी सन्त मेहनतकश जनता के कट्टर दुश्मन हैं जो कभी नहीं चाहते कि मेहनतकश जनता पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ क्रान्तिकारी एकजुटता कायम करे।

धर्म के नाम पर सभी सन्त लोगों को आत्मसुधार के प्रवचन देते हैं लेकिन कभी भी खुद पर इन प्रवचनों को लागू नहीं करते। अन्य पूँजीपतियों की तरह ये पूँजीपति सन्त भी मुनाफे के अंधे भक्त हैं और लोगों की लूट से परजीवी और अय्याशी का जीवन जीते हैं। जनता की चेतना में किसी भी प्रगतिवादी–क्रांतिकारी विकास की राह में ये हर हमेशा रोड़े अटकाने का काम करते हैं। वे कभी नहीं बताते कि जनता की बदहाली का कारण पूंजीपति वर्ग द्वारा मेहनतकश जनता की श्रम शक्ति की लूट है बल्कि इसके लिए उसे जन्म–कर्म पाप–पुण्य की बेबुनियादी बातों में उलझाए रखते हैं। सच्चाई बताकर वे खुद तथा समुचे पूंजीपति वर्ग के हितों क`खिलाफ नहीं जा सकते। अंधविश्वासों पर टिके धर्म का नशा जनता को उसकी बदहाली के कारणों की पहचान नहीं करने देता। धर्म जो हमेशा से शोषकों की सेवा करता आया है, आज पूंजीपति वर्ग की सेवा कर रहा है।

(यह लेख मजदूर बिगुल, दिसंबर 2013 में प्रकाशित हुआ था)

✶✶✶

सामाजिक रीति-रिवाजों की आड़ में

बहिष्कार के मनमाने फरमान जारी करने वाले हैरानीजनक मामले

-डॉ. दिनेश मिश्र

सामाजिक रीति-रिवाजों की आड़ लेकर सामाजिक बहिष्कार के मनमाने फरमान जारी करने की प्रथा अब बड़ी सामाजिक कुरीति के रूप में सामने आ गई है।

जनजागरण अभियान के दौरान विभिन्न स्थानों का दौरा करने के दौरान हमने पाया कि एक सप्ताह में ही सामाजिक बहिष्कार की एक दर्जन घटनाएं हुई हैं जिनमें किसी न किसी कारणों से समाज से बहिष्कृत किया गया । भाटापारा, चापा, राजनांदगाँव, रायपुर, बिलासपुर, बालोद, दुर्ग जिले में पीडित जनों को विभिन्न कारणों से समाज से बहिष्कृत कर दिया गया है जिन्हें गाँव में दूध, राशन, मजदूर यहाँ तक कि बात करने तक पर जुर्माना करने की घोषणा कर दी गई है। धरसींवा, खैरखूँट में तो एक महिला ने सामाजिक बहिष्कार के कारण खुदकुशी कर ली। इस संबंध में दूसरा मामला महासमुंद जिले का है जिसमें एक परिवार का विगत कुछ महीनों से हुक्का पानी बंद कर दिया गया है जिसके कारण उसे गाँव में मजदूरी तथा गुजर-बसर मुश्किल हो गई है।

भिलाई में एक मामले में तो बहिष्कार से पीडित व्यक्ति ने अपनी पत्नी और बच्चों को गला दबाकर मार दिया था तथा फाँसी लगा ली थी। वहीं चाम्पा में सामाजिक बहिष्कार के जरिए संतोष पटेल नामक युवक ने समाज में मिलाने की मांग करते हुए अंततः फाँसी लगाकर खुदखुशी कर ली।

देवभोग में सामाजिक बहिष्कार के कारण माली परिवार में एक बुजुर्ग की मृत्यु हो जाने पर उसके बेटे को अपने पिता की मृत्यु होने पर कंधा नहीं देने दिया गया। वहीं सरगुजा में तो बहिष्कार के चलते एक व्यक्ति की मृत्यु होने पर जब उसका अंतिम संस्कार नहीं हो पाया तो उसकी पत्नी ने उसका घर के आंगन में ही दफन कर अंतिम संस्कार कर दिया। ऐसे ही कुछ मामले प्रकाश में आये हैं। बहिष्कृत व्यक्ति को शादी, मृत्यु, पर्व, त्यौहार, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सार्वजनिक उपयोग के स्थल जैसे बाजार, तालाब, नदी के उपयोग से वंचित कर दिया जाता है। समिति सामाजिक बहिष्क्रार की सजाओं के विरोध में तथा उन्हें न्याय दिलाने एवं कानून बनाने के लिए अभियान चला रही है।

सामाजिक बहिष्कार के फरमान से बहिष्कृत व्यक्ति का जीवन कठिन हो जाता है। वह व्यक्ति व उसके परिवार का हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है तथा किसी का समाज से बहिष्कार करने की सजा मृत्यु दण्ड से भी कठोर सजा है क्योंकि मृत्यु दण्ड में वह व्यक्ति एक बार में अपने जीवन से मुक्त हो जाता है परंतु समाज से बाहर निकाले व्यक्ति व उसके परिवार को घुट-घुट कर जीवन बिताना पड़ता है तथा यही नहीं उसके परिवार व बच्चों को भी प्रतिदिन सामाजिक उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

जानकारी मिली है कि कुछ समाजों में उनके तथाकथित ठेकेदारों ने सामाजिक बहिष्कार को खत्म करने के लिए बकायदा रेट लिस्ट तक तय कर दी है जिसमें यदि वह व्यक्ति किसी कार्यक्रम में शामिल होता है रू 15000/- जुर्माना, यदि बीपीएल कार्डधारी है तो 35000/- जुर्माना, यदि उसका परिवार साथ देता है 50000/- जुर्माना, यदि मध्यम परिवार का व्यक्ति है उसे पचास हजार से पचहत्तर हजार रूपये जुर्माना, यदि उच्च्य परिवार से व्यक्ति है तो उसे एक लाख से डेढ़ लाख रूपये तक जुर्माने का प्रावधान रखा गया है। डा. मिश्र ने कहा उनके पास कुछ लोगों की रसीदें हैं जिनसे लाख रूपये तक जुर्माना वसूला

गया है।

कुछ ऐसे भी मामले आये हैं जिनमें किसी सदस्य की मृत्यु होने पर दाह संस्कार में समाज के लोगों को शामिल करने के लिए दस हजार रूपये तक जुर्माना लिया गया है।

डॉ. मिश्र कहा कि यदि इस संबंध में सक्षम कानून बनाया जाता है तो हजारों निर्दोष व्यक्तियों को बहिष्कार की प्रताडना से बचाया जाना संभव होगा। समिति द्वारा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उच्च न्यायाधीश सहित देश के सभी जनप्रतिनिधियों, विधायकों, सांसदों को पत्र लिखकर इस संबंध में कानून बनाने की मांग की गई है। पर अब तक कोई ठोस परिणाम नही निकला है, समिति इस सम्बंध में सभी जिलों में पीड़ितों से सम्पर्क कर रही है, तथा उन्हें पीड़ितों के आवेदन प्राप्त हो रहे हैं तथा उनकी समस्याओं के निराकरण का प्रयास कर रही है।।

(डॉ दिनेश मिश्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष हैं)

'जैसे दूध पर मलाई जमती है'

शरद कोकास
मो. 8871665060

अंतरिक्ष में दो विशालकाय पिंडों के टकराव से इस पृथ्वी का जन्म हुआ। यह पृथ्वी भी अपने जन्म लेने के पश्चात प्रारम्भ में विभिन्न प्रकार की गैस से मिलकर बना एक विशालकाय पिंड थी जो अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा कर रही थी ।

ताप के विकीरण के फलस्वरूप धीरे धीरे यह पिंड ठंडा हुआ, द्रव्य व गैसों का शीतलीकरण हुआ तथा तरलीय व अर्धसान्द्रीय अवस्थाओं से होता हुआ वर्तमान अवस्था तक पहुंचा। फिर बाहरी तल से घनीकरण प्रारम्भ हुआ,उपरी सतह पर पपड़ी जमी जो भीतर की ओर मोटी होती गई। गर्भ भाग में सिकुड़ना प्रारंभ हुआ, पपड़ी में झुर्रियाँ व दरारें पड़ीं फलस्वरूप हिमालय जैसे पर्वत और नदियाँ बनीं । यह सब घटित होने में कई करोड़ साल लगे ।

दिमाग पर ज्यादा जोर मत लगाइये। चलिए, अपने घर में ठंडे होते हुए दूध पर मलाई जमते हुए देखिए और इस पर विचार कीजिए । ठंडी होती हुई पृथ्वी पर समुद्र, पहाड़, नदियाँ, झीलें, चट्टानें ऐसे ही बनी होंगी ।

और पृथ्वी पर रहने का किराया देने की बात भी भूल जाईये। यह तो एक बहुत बड़ा बाड़ा है जिसके मालिक का कुछ अतापता ही नहीं है। अब जो जितना पुराना किरायेदार उसका उतना हक। वही किरायेदार वही मकान मालिक, जैसे अफ्रिका जैसे बड़े देश और हमारे जैसे छोटे , या फिर अमेरिका जैसे नए किरायेदार जिन्होंने अपनी चालाकी से मकान पर ही कब्जा कर लिया है। फिर हर देश में भी कुछ बड़े बड़े धन्ना सेठ और ढेरों हमारे जैसे फुटपाथिये और जंगल मे रहने वाले आदिवासी ।

इस धरती पर रहने की कीमत न वो देते है न हम । लेकिन उस पर तुर्रा यह कि अपने बड़े बड़े उद्योगों से , कारखानों से प्रदुषण फैलाकर पृथ्वी का सबसे ज्यादा नुकसान वे करते हैं और इलजाम हमारे जैसे अविकसित देश के कमजोर लोगों के सर पर कि हम प्रदूषण फैलाते हैं ,जंगल काटते हैं, जमीन से पानी चूस लेते हैं और नुकसान करते हैं इस पृथ्वी का ।

वाह ! क्या दादागिरी है !

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

सदवचन

'आओ, मनुष्यों को इन्साफ-पसंद, दयावान, नर्म दिल एवं मिलनसार होना सिखाएं, इसलिए नहीं कि उनके ईश्वर अथवा देवता यह चाहते हें, बल्कि अन्य मनुष्यों को सुखी एवं खुश करने के लिए'

जीन मिस्लियर

(1664–1729)

रागणी

अंधविश्वास नाश की राही

–रामेश्वर दास 'गुप्त'

तर्क करूं अर सच जाणूं, ये रहणी चाहिए ख्यास मनै
अंधविश्वास सै नाश की राही, बात बताणी खास मनै।

भगत और भगवान बीच म्हं, दलाल बैठ गे आ कै,
कई भेडिये पहन भेड़ की, खाल बैठ गे आ कै,
भगवान बहाने कई ऊत चाटणे, माल बैठ गे आ कै,
क्यूं होरी सै खूण्डी लूटयें, सवाल बैठ गे आ कै,
करणी चाहिए जांच परख, तंग कर री यें बकवास मनै।

मुल्ला किते पुजारी तो, किते ग्रंथी ठेकेदार बणे,
खूब कमा कै भूखा, यें महलां के सरदार बणै,
सभी ठिकाणे दीन धर्म के, लूटण के हथियार बणे,
पहन गेरूए रण्ड-मलंग, मेहणत के हकदार बणे,
इस तरियां की लूट दुधारी, ना आणी चाहिए रास मनै।

खा कै किलो अफीम सोच ली, बात उड़ा दी जनता म्हं,
सहम नशे म्हें गप्पे घढ़ र्या, अर् सरका दी जनता म्हं,
झूठ-कपट की टेढ़ी-मेढ़ी, राह बिछा दी जनता म्हं,,
राम-नाम की झूठ कहाणी, ईब सुणा दी जनता म्हं,
समझ रह्या मैं 'रामेश्वर' सुं, वो आज समझ रे 'दास' मनै।

–लेखक की पुस्तक 'च्यौंद कसूती (2010) में से

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

–राज्य कार्यकारिणी



पाकिस्तानी नाटककार : मदीहा गौहर

वह औरत जिसकी सांसों में रंगमंच धड़कता था, जो पाकिस्तान जैसे मजहबी मुल्क में रंगमंच के माध्यम से औरतों के हक की बात करती थी, जो पाकिस्तान की हुकूमत को चेतावनी करने की हिम्मत रखती थी, जो धार्मिक कट्टरता को ललकारती थी, जो दोनों मुल्कों को एक दूसरे के साथ हंसते हुए गलबाहियां पाते हुइ हुए देखना चाहती थी जो दोनों मुल्कों के बीच रंगमंच के सांझे पुल का काम करती थी – वह मदीहा गौहर हम सब को अलविदा कह गई। मदीहा गौहर का जन्म कराची में 1956 में हुआ था। अंग्रेजी साहित्य में डिग्री प्राप्त करने के बाद वह इंगलैंड चली गई। वहां पर उन्होंने लंदन युनिवर्सिटी से रंगमंच में मास्टर डिग्री प्राप्त की 2006 में उनको नीदरलैंड से प्रिंस पलोस अवार्ड के साथ सम्मानित किया गया।

मदीहा पिछले 35 सालों से पाकिस्तान में प्रगतिशील, सार्थक संदेश देने वाला रंगमंच कर रही थी। उन्होंने अजोका रंगमंच लाहौर की स्थापना की ओर पहला नाटक 'जलूस' लाहौर में मंचित किया। पाकिस्तान की सरकार ने उन्हें लाहौर के किस थिएटर, हाल या सड़क पर नाटक करने की इजाजत नहीं दी। फिर भी उन्होंने यह नाटक अपनी मां के घर के खुले आंगन में लोगों को इकट्ठे करके खेला। उन्होंने लगातार रंग मंच खेला और पाकिस्तानी रंगमंच को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया, उन्होने भारत में 100 से ज्यादा नाटक मंचित किए, दुनियां के बहुत से देशों में, पाकिस्तानी नाटक को सम्मान दिलवाए। उन के रंगमंच सफर में पति साहिद नदीम ने उच्च स्तर के नाटक लिखे और उनके दोनों पुत्रों ने नाटकों में भुमिका निभाई। वो सदा लाहौर व अमृतसर को एक जैसा शहर मानती थी जिसका खाना पीना, तहजीब, संस्कृति एक ही है।

उन्होनें 14 अगस्त की रात बाघा बार्डर पर मोमबत्तियों जगाने के कारण पाकिस्तानी कट्टरपंथियों की लाठियां खाई, परन्तु अमन का पैगाम देने से वो कभी नहीं रुकी। मदीहा गौहर एक चलती फिरती संस्था थी, उन के सिखाए कलाकार आज पाकिस्तानी नाटकों, टी.वी., फिल्मों के प्रसिद्ध कलाकार है। पिछले 4 साल से वो कैंसर से पीड़ित थी, परन्तु रंगमंच से अंतिम समय तक जुड़ी रही।

उन्होंने आतंकवाद के विरुद्ध स्टेज पर खड़े होकर कहा – थिएटर अगेंस्ट तालिबान। उन्होंने पाकिस्तान के मुल्लों को ललकारा और बुर्का परम्परा के खिलाफ नाटक खेला – बुरका वगैंजा। यह नाटक बैन कर दिया पर उन्होंने फिर भी ये नाटक खेला। लाहौर के बसंत फेस्टीवल पर जब पाबंन्दी लगाई गई उन्होने नाटक खेला 'लो फिर बसंत आई'। उन्होंने मजदुरों के हक में नाटक 'ईट भी खेला' और बेटियों के हक के लिए 'शर्म की बात', थप्पड़ और धी राणी नाटक खेले।

अलविदा मदीहा, तुम हैवानीयत के दौर में इन्सानियत की जीती जागती मिसाल थी। दोनों मुल्कों की प्यारी बेटी। अलविदा!

केवल धालीवाल



"वे कौन थी? एक बकरवाल की आठ साल की बेटी। बकरवाल कौन है, एक कबीले के लोग जिन्होनें कारगिल में घुसपैठियों की भारतीय सेना को जानकारी दी थी। अब वो कौन है? जो दोषियों को बचाने की कोशिश कर रहे। अब बारी है तुम्हारी- उन्हें जवाब देने के लिए।"

जावेद अख्तर

"भारत में जहां मैं गांधी, टेगौर और नेहरू की यादों में बड़ी हुई थी, वह मजबूत देश था। धर्म निरपेक्षता की जरूरत हमारे अंदर कूट कर भरी गई थी। हम जानते हैं कि हमारे राजनेता बहुत जहरी है, परन्तु अभी भी यहां पर नैतिकता और मानवता की अहमियत है। अब, जो पत्रकार लेखक मुसलमानों, गरीबों, औरतों के हक और दलितों पर बिना एलानें हमलों के बारे में लिखते है, उन पर साईबर के लोग ट्रौल करते है।"

अरुंधती राय





"हिन्दु राष्ट्रवादी, जिन्होंने तिरंगे की आड़ में बलात्कारियों कातिलों का बचाव किया, भारत को, तिरंगे को, संविधान को शर्मसार किया। सबसे बड़ी बात उन्होंने देषियों के लिए जम्मू में मार्च निकाला। दूसरी तरफ हम मोमबत्ती मार्च, हमारा गुस्सा, हमारा जन विरोध कहां है? निर्भया के बाद कुछ भी नहीं बदला।"

बरखा दत्त

"पहले तुम बलात्कार करते हो और फिर आठ साल की लड़की को मार देते हो। फिर तुम तिरंगे और जय श्री राम के नारे लगाते हो और कातिलों को बचाने की कोशिश करते हो, फिर तुम साम्प्रदायिक टकराव में शामिल होते हो। हमारी जमीर मर चुकी है। मैंने अपना सिर शर्म से झुका लिया, आपको भी झुकाना चाहिए।"

राजदीप सरदेसाई





"इस हिन्दुत्व से ना तुम्हें रोजगार मिला, न मिलेगा। ना हस्पताल मिले, ना मिलेगा और न हीं ईमानदार पुलिस मिली ना मिलेगी और ना ही निडर और बेहतर न्याय व्यवस्था मिली न मिलेगी। बस एक भीड़ मिली है जो हर हफते देश के किसी कस्बे में हाथों में तलवारें लेकर दौड़ती नजर आती है।"

रवीश कुमार

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटर्स, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।